# चेतना का सूर्य

Note: This series of 6 talks was previously titled as- चेतना का सूर्य (Chetna Ka Surya), later on published as- योग : नये आयाम (Yog : Naye Aayam))

प्रवचन -क्रम


1. सरल सत्य ....................2
2. जगत एक परिवार ....................8
3. घर एक मन्दिर ....................24
4. प्रेम का केन्द्र ....................37
5. संन्यासी की दिशा ....................53
6. परम जीवन का सूत्र ....................58

चेतना का सूर्य
पहला प्रवचन

सरल सत्य

विगत वर्ष दुनिया के बायोलॉजिरूटों की, जीवशास्त्रियों की एक कान्फ्रेंस में ब्रिटिश बायोलॉजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष बादकुन ने एक वक्तव्य दिया था। उस वक्तव्य से ही मैं आज की थोड़ी-सी बात शुरू करना चाहता हूँ। उन्होंने उस वक्तव्य में बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कहीं। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन का विकास किन्हीं नयी चीजों का संवर्धन नहीं है, नथिंग ऐड इट, वरन कुछ पुरानी बाधाओं का गिर जाना है। मनुष्य के विकास में कुछ जुड़ा नहीं, मनुद्वय के भीतर जो छिपा है, वह प्रगट होता हैं तो सिर्फ बीच की बाधाएं अलग होती हैं। पशुओं ओर मनुष्य में विचार करें तो मनुष्य के भीतर पशुओं से कुछ ज्यादा नहीं है।, बल्कि कुछ कम है। पशु के ऊपर जो बाधाएं हैं, वह मनुष्य से गिर गयी हैं और पशु के भीतर जो छिपा है, वह मनुष्य से प्रगट हो गया हैं।
एक बीज में और फूल में-फूल में बीज से ज्यादा नहीं है, कुछ कम हैं। यह बहुत उलटा मालूम होता है, लेकिन यही सच हैं बीज में जो बाधाएं थीं, वे गिर गयी हैं, फूल प्रगट हो गया है। पौधों में पशुओं से कुछ ज्यादा हैं, बाधाएं ज्यादा हैं, हिण्ड्रेंसेज ज्यादा हैं। वे गिर जाएं तो पौधे पशु हो जायें, पशुओ की बाधाएं गिर जायें तो पशु मनुष्य हो जायें।
मनुष्यों की बाधाएं गिर जायें, फिर जो शेष रह जाता है, उसका नाम परमात्मा है। अगर समस्त बाधाएं गिर जायें, जो छिपा है वह पूरी तरह से प्रगट हो जाये तो उस शक्ति को हम जो भी नाम देना चाहें-आत्मा, परमात्मा या कोई भी। नाम न हम देना चाहें तो भी चलता हैं मनुष्म में भी अभी बाधाएं मौजूद हैं, इसलिए मनुष्य के विकास की सभी सम्भावना है। बादकुन को आध्यात्म से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन उसका वक्तव्य ठीक वैसा ही है, जैसा पच्चीस सौ वर्ष पहले बुद्ध ने अपने ज्ञान की घटना के समय दिया है। जिस दिन बुद्ध को पहली बार ज्ञान हुआ तो लोगों ने उनसे पूछा आपको क्या मिल गया है? तो बुद्ध ने कहा मुझे मिला कुछ भी नहीं, जो मेरे भीतर था, वह प्रगट हो गया है। मुझे मिला कुछ भी नहीं, जो मेरे ही पास था, मुझे ज्ञात हो गया। मुझे मिला कुछ भी नहीं, जो मैं था ही और जिसके प्रति मैं सोया था, उसके प्रति मैं जाग गया हूँ। बल्कि बुद्ध ने यह भी कहा तुम्हें मैं यह भी कह दूँ, अज्ञान था, वह खो गया, नसमझी थी, वह खो गयी और जो मुझे मिला है, अब मैं कह सकता हूँ, वह मेरे पास था ही, लेकिन सिर्फ मैं अपरिचित था।
बादकुन और बुद्ध के वक्तव्यों में फर्क नहीं है। लेकिन बादकुन का वक्तव्य मनुष्य के पिछड़े हुए प्राणियों के सम्बन्ध में दिया गया हैं और बुद्ध का वक्तव्य मनुष्य से आगे गये व्यक्ति के सम्बन्ध में दिया गया है। ध्यान की प्रक्रिया आपको किसी नये जगत में नहीं ले जाती, सिर्फ उसी जगत में परिचित करा देती है, जहाँ आप जन्मों- जन्मों से थे। ध्यान की प्रक्रिया आपमें कुछ जोड़ती नहीं, गलत काट देती है गिरा देती है, समाप्त कर देती है।
एक मूर्तिकार से कोई पूछ रहा था कि तुमने यह मूर्ति बहुत सुन्दर बनायी है तो उस मूर्तिकार ने कहा मैंने बनायी नहीं है, मैं तो उस रास्ते से गुजरता था और इस पत्थर में छिपी मूर्ति ने मुझे पुकारा। मैंने जो व्यर्थ पत्थर इसमें जुड़े थे, उन्हें अलग कर दिया और मूर्ति प्रगट हो गयी। मैंने कुछ जोड़ा नहीं, नहीं, कुछ घटाया है। बेकार पत्थर जो मूर्ति के चारों तरफ जुड़े थे, मैंने उन्हें छांट दिया है और मूर्ति जो छिपी थी, वह प्रगट हो गयी।
मनुष्य के भीतर जो छुपा है, जो कुछ गलत जुड़ा है, उसे काट देने से प्रगट
हो जाता है। परमात्मा मनुष्य से भिन्न कुछ नहीं हैं, मनुष्य के भीतर छिपी ऊर्जा, एनर्जी का नाम है। लेकिन जैसे हम हैं, उसमें बहुत मिट्टी मिली है सोने में। थोड़ी मिट्टी छट सके तो सोना प्रगट हो सकता हैं

तो ध्यान के सम्बन्ध में पहली बात जो मैं आपसे कह दूँ वह यह कि आप अपने ध्यान के विकास में अन्तिम क्षणों में भी जो होंगे, वह आप अभी, इस क्षण में भी हैं। ध्यान आप में कुछ जोड़ नहीं जायेगा, सिर्फ घटा जायेगा। आपसे कुछ गलत को काट जायेगा, कुछ व्यर्थ को अलग कर जायेगा और जो सार्थक है वह पूरी तरह से प्रगट होने की सुविधा पा सकेगा। नथिंग समथिंग न्यू ऐड इट-नहीं कुछ नया जुड़ेगा, सिर्फ पुरानी बाधाएं गिर जायेंगी। इन बाधाओं को गिराने के लिए जो प्रयोग हम चार दिनों में करने वाले हैं। वे बहुत वाइटल, बहुत प्राणवान प्रयोग हैं। और जो लोग भी ईमानदारी से उसे करने को राजी होंगे, उनके लिए परिणाम होने सुनिश्चित हैं। ईमानदारी शब्द को थोड़ा समझ लेना उचित होगा।
ईमानदारी से मेरा अर्थ है कि जो सच में ही करेंगे, उनका परिणाम निश्चित है। सिर्फ उन्हीं के लिए परिणाम नहीं हो सकेगा, जो करेंगे नहीं। उनके परिणाम की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। और किसी पात्रता के लिए मैं आपसे नहीं कह रहा हूँ। और दूसरी किसी क्वालिफिकेशन की जरूरत नहीं है। सिर्फ एक पात्रता चाहिए कि जो में आपसे कहूंगा इन चार दिनों में, वह आप करेंगे। और जो मैं करने को कहने वाला हूँ, वह कठिन नहीं है, बहुत सरल है। छोटे-से-छोटा बच्चा भी कर सकता है। इसलिए आप यह भी न सोंचे। कि इतना कठिन हो कि हम कर न पायें नही, कठिनाई अगर होगी ता आपके अपने प्रति बेईमान होने में हो सकती है। मेथड में, विधि में हो सकती है। छोटे-से-छोटा बच्चा जो भाषा समझ सकता है, वह भी कर सकता है। सिर्फ आपके सहयोग की जरूरत है कि आप करें। तो मैं आपको प्रयोग समझा दूँ, सरल-सा प्रयोग है।
सभी महत्त्वपूर्ण चीजें सरल होती हैं, सिर्फ गैंर-मत्त्वपूर्ण चीजें जटिल और कठिन होती हैं। सभी सत्य सरल हाते हैं, सिर्फ असत्य जटिल और कॉपलेक्स होते हैं।
लेकिन हम अजीब लोग हैं! अगर कोई चीज हमें बहुत कठिन और जटिल मालूम पडे़ तो हम सोचते हैं कोई बहुत प्रोफाउण्ड टुथ होगा, कोई बहुत गम्भीर सत्य होना चाहिए। ऐसा नहीं हैं जीवन के सब सत्य दो ओैर दो चार जैसे सरल हैं, सिर्फ असत्य कठिन होते हैं। असत्य को कठिन होना पड़ता है, क्योंकि अगर सत्य सरल हो तो पकड़ में आ जायेगा कि असत्य है। असत्य को बहुत चालबाजियों में, गोल घरों में घूमना पड़ता है। वह जैसा है, वैसा ही परिणाम है। कोई मुँह छिपाने की, चेहरे बदलने की कोई जरूरत नहीं है। इसलिए दुनिया में जितनी कठिन बातें कही गयी हैं, आमतौर से असत्य हैं, दुनिया में जितनी भी सत्य बातें कहीं गयी हैं, वे आमतौर से सरल और सीधी हैं। चाहे उपनिषद हों, चाहे गीता हो, चाहे कुरान हो, चाहे बाइबिल, चाहे बुद्ध और महावीर के वचन, वे बिल्कुल सीधी-दो और दो चार की भांति हैं।
यह जो प्रयोग में आपसे कहता हूँ, अत्यन्त सरल है परिणाम इसके बहुत हैरानी करने वाले हैं। इस प्रयोग में चार चरण हैं दस-दस मिनट के। पहले तीन चरण में आपको कुछ करना है और चौथे चरण में आपको कुछ भी नहीं करना है। परमात्मा की शक्ति कुछ करें, इसके लिए सिर्फ प्रतीक्षा करनी है। पहले चरण में पहले दस मिनट तीव्र श्वास का प्रयोग हैं दस मिनट इस भांति श्वास लेनी है, जैसे कि लोहार की धौंकनी चलती हो। जितनी फास्ट हो सके, जितने जोर से श्वास की चोट भीतर पहुंचाई जा सके। श्वास का उपयोग धौंकनी की तरह करना हैं एक तो जितने जोर से भीतर श्वास की चोट जाती हैं, हमारे शरीर में छिपी हुई प्राण-ऊर्जा जगती है। शायद आपको पता न हो कि हम सबके शरीर में- हमारे ही शरीर में नहीं, जीवन के समस्त रूपों में जो ऊर्जा छिपी है, वह विद्युत का रूप है, इलेक्ट्रिसिटी का रूप है। हमारा शरीर भी चल रहा है। जिस शक्ति से, वह विद्युत का रूप है। वह ऑर्गेनिक इलेक्ट्रिसिटी जिसे हम कहें, वह जीवन विद्युत का रूप है। इस विद्युत को जितनी ज्यादा ऑक्सीजन मिले, उतनी ही तीव्रता से जगती हैं इसलिए बिना ऑक्सीजन के आदमी मर गया है। ओर बिल्कुल मरते हुए आदमी को भी अगर ऑक्सीजन दी जा सके तो हम उसे थोड़ी-बहुत देर जिन्दा रख सकते हैं।
इस दस मिनट में इतनी जोर से श्वास लेनी है कि आपके भीतर से सारी वायु बाहर चली जाये और बाहर की ताजी वायु भीतर चली आये। आपके शरीर के भीतर

ऑक्सीजन का अनुपात बदल डालना है। वह अपने आप बदल जाता है। और चोट इतने जोर से कर देनी हे। कि शरीर में जो शक्ति सोयी हुई है, वह उठने लगे। पांच मिनट के प्रयोग में ही कोई साठ प्रतिशत लेगों के शरीरों के भीतर कम्पन शुरू हो जायेगा, वह आपको बहुत बहुत ही स्पष्ट मालूम पड़ने लगेगा। कि कोई चीज वाइब्रेट करती हुई उड़ने लगी है। योग ने उसे "कुण्डलिनी" कहा है। अगर हम विज्ञान से पूछेंगे तो उसे "बॉडी इलेक्ट्रिसिटी" कहेगा। वह कहेगा, वह शरीर की विद्युत है।
अभी अमेरीका में एक आदमी हैं, जिसके शरीर की विद्युत से बहुत अद्भुत प्रयोग हुए हैं। उसके शरीर की विद्युत सामान्यतया ज्यादा है, जितनी आमतौर से होती है। उसने एक विशेष प्रकार की श्वास का प्रयोग करने के बाद हाथ में पाँच केंडल का बल्ब लेकर उसे जला दिया है। स्वीडन में अभी एक स्त्री जिन्दा है, जिसे कोई भी छू नहीं सकता। उस स्त्री का विवाह नहीं हो सके, क्यों उसको छूने से शॉक वैसा ही लगेगा जैसा कि विद्युत को छूने से लगता है। ये थोड़े-से---- इनके शरीर में विशेष विद्युत है और कैमिकली थोड़े-से फर्क हैं। इसलिए ज्यादा परिणाम हैं। लेकिन विद्युत है सबके शरीर में और अभी पहले ही दिन कम-से-कम साठ प्रतिशत लेगों को-सौ प्रतिशत को हो सकता है, कोई कारण नहीं है। लेकिन चालीस प्रतिशता आमतौर से प्रयोग नहीं कर पाते, पीछे खड़े रह जाते हैं। ऐसा मेरा अनुभव हे, इसलिए साठ की बात कह रहा हूँ। लेकिन आपमें से प्रत्येक से कहूंगा कि साठ प्रतिशत में होना चालीस प्रतिशत में मत होना।
पाँच मिनट के बाद ही आपके शरीर के भीतर कोई चीज कांपती हुई, उठती हुई मालूम पड़ने लगेगी। शरीर एक नयी शक्ति से भरता हुआ मालूम पड़ने लगेगा। दस मिनट पूरा प्रयोग करने पर आप इलेक्ट्रीफाइड हालत में हो जायेंगे। सारा शरीर विद्युत का एक प्रवाह बन जायेगा। स्वभावतः इसके परिणाम होंगे। जब शरीर में जोर से वाइब्रेशन्ज होंगे तो शरीर कांपने लगेगा, डोलने लगेगा, नाचने लगेगा।
दूसरा जो प्रयोग है दस मिनट का, वह शरीर को डोलने, नाचने या शरीर को जो
भी करना है, उसे करने की पूरी छूट दे देने का है। उसके परिणाम कैथेर्टिक हैं। हमने अपने शरीर में न-मालूम कितने तरह के दमन कर रखें हैं। मन में भी बहुत तरह के सप्रशेन्स कर रखे हैं। जो भी व्यक्ति ध्यान में जाना चाहता है, उसे पहले इन दमन से मुक्त हो जाना जरूरी है। क्रोध आया है, वे क्रोध को पी गये हैं। वासना आयी है ओर उन्होंने वासना को दबा लिया है। चिन्ता आयी है, चिन्ता को पीकर सो गये। हमने न-मालूम कितना मन में छिपा लिया है। जब रोना चाहा है, तब रोये नहीं, हंसना चाहे हैं तो हंसे नहीं, चिल्लाना चाहते है तो चिल्लाये नहीं, नाचना चाहे हैं तो नाचे नहीं। वह सब हमने दबाया हुआ है। मन और शरीर दोनों में हजार तरह के दमन इकट्ठे हो गये हैं। वे दमन न गिर जायें तो मन इतना हलका नहीं हो सकता कि ध्यान कर सकें। इसलिए दूसरे दस मिनट में शरीर के साथ पूरी- की-पूरी स्वतन्त्रता और सहयोग करना है। शरीर नाचना चाहे तो उसे पूरी तरह नाचने देना है, चिल्लाना चाहे तो चिल्लाने देना है, रोना चाहे तो रोने देना है। शरीर जो भी करना चाहे-सिर्फ अपने शरीर के साथ दूसरे शरीर के साथ नहीं-अपने के साथ जो भी करना चाहे, उसे पूरी स्वतन्त्रता और सहयोग दे देना है।
कोई साठ प्रतिशत लोग अचानक अपने भीतर बहुत-कुछ होता हुआ पायेंगे। जिन मित्रों को ऐसा लगे कि उनके भीतर तो कुछ भी नहीं हो रहा है। तो उनसे मैं कहूंगा कि वे आज कम-से-कम जिनको अपने-आप हो जायेगा, उनका प्रश्न नहीं है, अधिक लोगों के अपने-आप हो जायेगा-जिनको लगे कि उनके अपने-आप नहीं हुआ है तो उसका कारण कुल इतना ही है कि वहे सप्रेशन्स में अपने दमन में इतने मजबूत है कि बीच की पर्त उन्हें भीतर तक नहीं पहुँचने देगी। तो उनसे मैं कहूंगा कि वे उसकी फिक्र न करे। उनको न हो रहा तब भी उनसे बन सके, वे दस मिनट वह करें, अगर नाचना बन सके तो वे नाचते रहें। कोई विधि, व्यवस्था और गति की बात नहीं है। उनसे चिल्लाते बने ते चिल्लाते रहें। कल ही वे पायेंगे कि मेरी धारा टूट गयी और स्पॉटेनियस उसके भीतर से कडुवाहट निकलनी शुरू हो गयी है। इस दस मिनट के बहुत गहरे परिणाम है। इस दस मिनट के नाचने,

चिल्लाने, डोलने, हंसने के बाद इतने हल्के हो जायेंगे, जितने शायद जीवन में आप कभी भी नहीं हुए।
पहले चरण में आपके शरीर में जो विद्युत जगेगी, वह आपको सहयोग देगी नाचने में, चिल्लाने में, रोने मे हंसने में। और आपको भी अपनी तरफ से कोआप्रेट करना और जो भी आपके भीतर हो उसको पूरी तरह होने देना है। अगर आपका हाथ इतना हिल रहा है तो आप उसे और पूरी तरह हिला दें कि हाथ के भीतर से भी वेग दमित हैं, वे निष्कासित हो जायें, उनकी निर्जरा हो जाये। इस प्रयोग से चार दिन में इतना हो सकेगा जो कि चार वर्ष में किसी साधारण प्रयोग से नहीं हो सकता।
दूसरे चरण के बाद आकार शरीर वेटलेस मालूम होगा, जैसे बिल्कुल हलका हो गया है, जैसे उड़ सकता है। दोहरी बातें मालूम होगी। पहले चरण के बाद शरीर शक्ति से भरा हुआ मालूम होगा। दूसरे चरण के बाद शक्ति पूरी मालूम होगी लेकिन शरीर एकदम वेटलेस और हलका हो गया होगा। दूसरे चरण के बाद आपको स्पष्ट ऐसा लगना शुरू हो जायेगा कि शरीर नहीं है।, बल्कि सिर्फ एनर्जी है, सिर्फ ऊर्जा है, सिर्फ शक्ति है।
इस दूसरे चरण में जिसका भी प्रयोग पूरा हो जायेगा, उसको एक हैरानी का अनुभव होगा और वह यह होगा कि उसे पहली दफा मालूम पड़ना शुरू होगा कि शरीर अलग है और मैं अलग हूँ। अगर आपने अपने शरीर को पूरा छोड़ दिया तो आपकी आइडेण्टिटी टूट जायेगी। यह आज भी हो जायेगा। सिर्फ सवाल इतना है कि आप उसको पूरा कोआप्रेट करें। आप अपनी तरफ से रोकें मत। आप यह न सोचे कि नाचूंगा तो कोई क्या कहेगा मैं चिल्लाऊंगा तो कोई क्या कहेगा। जो आपके भीतर हो रहा है, उसकी आप बिल्कुल फिक्र छोड़ दें, हो जाने दें। तो आप दस मिनट के अन्दर जो निरन्तर सुना है, पढ़ा है कि शरीर और मैं अलग हूँ, वह आपके अनुभव का हिस्सा बन जायेगा। नाचता हुआ शरीर आपको अलग दिखाई पड़ने लगेगा, आप साक्षी हो जायेंगे। कि शरीर नाच रहा है, आप साक्षी हो जायेंगे कि शरीर रो रहा है। आप बहुत साफ देख सकेंगे। कि कोई और हंस रहा है और मैं देख रहा हूँ। यह प्रतीति ध्यान की गहराई में ले जाने के लिए अनिवार्य द्वार है। इसके बिना कोई ध्यान में नहीं आ सकता है।
तीसरे चरण मे- जब दूसरे चरण मे यह घटना घट जायेगी कि शरीर अलग और मैं अलग तो एक स्वाभाविक प्रश्न मन में उठना शुरू होगा कि फिर मैं कौन हूँ? तो जब तक मैं अपने को शरीर मानता हूँ, श्वास मानता हूँ, अब शरीर और श्वास अलग दिखाई पड़ रहे हैं फिर मैं कौन हूँ? इस तीसरे चरण में दस मिनट तक हम अपने भीतर पूछेंगे कि मै कौन हूँ। पहले दस मिनट में तीव्र श्वास। दूसरे दस मिनट में शरीर के साथ तीव्र सहयोग। और तीसरे चरण में "मैं कौन हूँ" की तीव्र वर्षा। भीतर इतने जोर से पूछना है कि पैर से लेकर सिर तक एक ही सवाल गूंजने लगे कि "मैं कौन हूँ" और शरीर की विद्युत जगी होगी और आपके सवाल को विद्युत की तरंगे पकड़ लेगी और पूरे शरीर को कम्पन में प्रश्न गूंजने लगेगा कि मै कौन हूँ। इसे इतने जोर से पूछना है कि दो "मैं कौन हूँ"? के बीच में जगह न बचे, न शक्ति बचे, न सुविध बचे। ताकि दस मिनट एक सवाल रह जाये। पाँच मिनट तेजी से भीतर पूछने के बाद बहुत-से मित्रों की आवाज बाहर निकलने लगेंगी तो उससे भयभीत नहीं होना है।
मैं कौन हँ, शुरू भीतर करना है। अगर चिल्लाकर बाहर आवाज निकालने लगे
तो उसे बाहर भी निकलने देना है। उसकी कोई फिक्र नहीं करनी है। तीस मिनट में आपका शरीर थक जायेगा। आपकी प्राणशक्ति थक जायेगी, आपकी मनशक्ति थक जायेगी। ये तीन चरण, तीनों को थका डालते हैं और तीस मिनट में इतनी क्लाइमेक्स तक पहुँच जाना है आपको तनाव की, टेंशन की, इतने जोर से यह सब करना है तीस मिनट में कि आप चिल्लाना भी चाहें तो हीं चिल्ला पायेंगे, रुके रह जायेंगे। आप धीरे-धीरे, मैं कौन हूँ, मुर्दे की तरह भीतर पूछते रहें तो वह गति पैदा नहीं हो पायेगी जो जरूरी है। पानी को गरम करना हो तो सौ डिग्री तक गरम करना चाहिए, निन्यानवे डिग्री पर भी भाप नहीं बनता। आप परमात्मा से यह नहीं कह सकते कि सिर्फ एक डिग्री के लिए इतनी ज्यादती क्यों, कर रहे हैं। निन्यानवे डिग्री तक आ गये, एक डिग्री की इतनी कंजूसी क्यों कर रहे हैं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सौ डिग्री पर ही पानी

भाप बनेगा। अगर निन्यानवे डिग्री तक भी जाकर आप रुक गये तो पानी गरम रहकर ही वापस ठण्डा हो जायेगा।
ठीक प्रत्येक के भीतर एक क्लाइमेक्स की स्थिति है जहाँ से जीवन में ऊर्ध्वगमन शुरू होता है-जहाँ से क्रान्ति शुरू होगी, जहाँ से म्युटेशन शुरू होता है। जहाँ से व्यक्ति मिटता है और परमात्मा शुरू होता है। अगर आप उस सौ डिग्री तक नहीं पहुँच पाते हैं तो आप वापस नीचे गिर जायेंगे और मेहनत बिल्कुल व्यर्थ हो जायेगी। उसका कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। इसलिए मैं आप से कहूँगा कि ईमानदारी से जो मैं कहूं उसे पूरा करके देख लें। देख लें, इससे क्या हो सकता है? चार दिन करके देख लें। और जो लोग भी ईमानदारी से करेंगे, वे श्रद्धा को उपलब्ध हो जायेंगे श्रद्धा पहले से जरूरी नहीं है। आपको विश्वास करने की जरूरत नहीं है, जो मैं कह रहा हूँ, वह होगा ही। आप तो इतना ही मानकर चलिये कि यह व्यक्ति कुछ कह रहा है, करके देख लें। हो तो ठीक, न हो तो समझें कि गलत हैं और अगर आप ने किया तो होना वैसे ही निश्चित है, जैसे सौ डिग्री पर भाप बनेगा। मैं जिस ध्यान की बात कर रहा हूँ, वह बिल्कुल साइाण्टफिक बात है। आप नास्तिक हों, ईश्वर को न मानते हो, आत्मा को न मानते हों, धर्म को न मानते हों, कोई हर्ज नहीं, मानने की कोई जरूरत ही नहीं, आप प्रयोग करें और आप पायेंगे कि उस प्रयोग के अनुभव से आपके भीतर फर्क होना शुरू हो गया है। श्रद्धा, ध्यान का फल प्राथमिक शर्त नहीं है, वह आखिरी परिणाम हैं पहली शर्त हैं आपने समझ लिया?
दो-तीन बातें और आपसे कह दूँ, ताकि प्रयोग के लिए खड़े हों। जो लोग बीमार हों, और अशक्त हों, वे लोग बैठकर प्रयोग करेंगे, बाकी लोग खड़े होकर ही प्रयोग करेंगे, खड़े होकर जल्दी परिणाम होते हैं, बैठकर जल्दी परिणाम नहीं होते हैं। सारे लोग फासले पर खड़े होंगे। जगह काफी है, ताकि आप नाचने लगेंगे तो किसी को आपके द्वारा धक्का न लगे और किसी को धक्का लग जाये तो इसकी परेशानी नहीं लेनी हैं
दूसरी बात-जैसे ही प्रयाग शुरू होगा, उसके पहले दो बातें हैं-मैं आपको आँख बंद करने के लिए कहूंगा और यह आखें चालीस मिनट तक बन्द करनी हैं। यह आपका पहला संकल्प होगा। उसे ही ईमानदारी से निभाना है। एक दफे भी आंखें खोलीं तो नुकसान होगा। आपके भीतर जो ऊर्जा इकट्ठी होगी, वह व्यर्थ खराब हो जायेगी।
हमारे भीतर की शक्ति का अधिक हिस्सा हमारी आंखों से बिखरता है। इसलिए चालीस मिनट आंखें बिल्कुल ही बन्द रखनी हैं। आपके आसपास चिल्लाना होगा, रोना होगा, नाचना होगा-आपके भीतर होगा आपको फिक्र छोड़ देनी हैं देखने की इच्छा होगी। हमारे भीतर का बच्चा जल्दी ही नहीं मर जाता है। जितनी जल्दी शरीर बदल जाता है, उतनी जल्दी ही नहीं मर जाता है। जितनी जल्दी शरीर बदल जाता हैं, उतनी जल्दी यह भीतर का बच्चा नहीं मर जाता। वह जानता होगा कि बगल वाला आदमी क्या करता है। तो उसके लिए मैंने फिल्म बुलवा दी है। अभी आज ही बनी है तो रात आपको फिल्म दिखा देंगे, जिसमें आप पूरा देख लें कि कौन क्या कर रहा है। तो आपकी जिज्ञासा तृप्त हो जायेगी। इसलिए आप फिक्र न करेंगे कि कौन क्या कर रहा है? उसे आप फिल्म में देख लेंगे।
यहाँ देखने वाला कोई भी न रुकेगा। अगर किसी को यहाँ सिर्फ देखना हो तो
वह यहाँ कैम्पस से बाहर हो जाये-या तो वह दूर पीछे चला जायेगा, लेकिन यहाँ नहीं रहेगा। यहाँ एक भी आदमी जो ध्यान नहीं कर रहा हो, उसे अलग हो जाना है। उसकी मौजूगी हमारे सब मित्रों को बाधा बनेगी। उसे यहाँ से हट जाना है। आपके भीतर एंग्विश पैदा होती है, वरन उसमें पूरा एटमासफियर चार्ज हो सकता है। उसमें एक आदमी भी अगर व्यर्थ खड़ा हो तो वह नुकसान करता है ओैर वह चेन को तोड़ता है। उसकी यहाँ जरूरत नहीं है। इसलिए इस ख्याल से, जिनको भी नहीं करना हो, वे यहाँ खड़े नहीं होंगे, चुपचाप चले जायेंगे। ये कुर्सियां जो हैं, ये आप उठा लें। इन्हें हटा दें वहाँ से, क्योंक इन पर कोई गिर जायेगा। आप नीचे आ जाएं और कुर्सियां हटा दें।

चेतना का सूर्य
दूसरा प्रवचन

जगत एक परिवार

योग का इस्लाम, हिन्दू, जैन या किसी धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन जीसस या मुहम्मद या जरथुस्र या बुद्ध या महावीर कोई भी व्यक्ति जो सत्य को उपलब्ध हुआ है, बिना योग से गुजरे हुए उपलब्ध नहीं होता है। योग के अतिरिक्त जीवन को स्वर्ग-स्थिति तक पहुँचने का कोई उपाय नहीं है। जिन्हें भी हम धर्म कहते हैं वे विश्वासों के साथी हैं। योग विश्वासों के साथी हैं। योग विश्वासों की नहीं, जीवन-सत्य की दिशा में किये गये वैज्ञानिक प्रयोगों की सूत्रवत प्रणाली हैं
इसलिए पहली बात जो आपसे कहना चाहूंगा वह यह कि योग विज्ञान है, विश्वास नहीं। योग की अनुभूति के लिए किसी तरह की श्रद्धा आवश्यक नहीं है। योग के प्रयोग के लिए किसी तरह के अन्धेपन की कोई जरूरत नहीं है। नास्तिक भी प्रयोग में उसी तरह प्रवेश पा सकता है। जैसे कि आस्तिक पाता है। योग आस्तिक-नास्तिक चिन्ता नहीं करता है।
विज्ञान आपकी धारणाओं पर निर्भर नहीं होता। विपरीत विज्ञान के कारण आपको अपनी धारणाएं परर्वेड करनी पड़ती हैं। कोई विज्ञान आपसे किसी प्रकार की दलील, किसी तरह की मान्यता की अपेक्षा नहीं करता है।
विज्ञान सिर्फ प्रयोग की, एक्सपेरीमेण्ट की अपेक्षा करता है। विज्ञान कहता है-करो, देखो। विज्ञान के सत्य चूंकि वास्तविक सत्य हैं, विज्ञान कहता है- करो, देखो। दो और दो चार होते हैं, माने नहीं जाते। और कोई न मानता हो तो खुद ही मुसीबत में पड़ेगा उससे दो और दो चार का सत्य मुसीबत में नहीं पड़ता हैं।
विज्ञान मान्यता से शुरू नहीं होता, विज्ञान खोज से, अन्वेषण से शुरू होता है। वैसे ही योग भी मान्यता से शुरू नहीं होता-खोज, जिज्ञासा, अन्वेषण से शुरू होता है। इसलिए योग के लिए सिर्फ प्रयोग करने की शक्ति की आवश्यकता है। प्रयोग करने की सामर्थ्य की आवश्यकता है। खोज के साहस की जरूरत है और कोई भी जरूरत नहीं है। योग विज्ञान है, जब ऐसा कहता हूँ तो मैं कुछ सूत्रों पर आपसे बात करना चाहूंगा, जो येग विज्ञान के मूल आधार हैं। इन सूत्रों का किसी धर्म से काई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि इन सूत्रों के बिना कोई धर्म जीवित रूप से खड़ा नहीं हो सकता। इन सूत्रों को किसी धर्म के सहारे की जरूरत नहीं है, लेकिन इन सूत्रों के सहारे के बिना धर्म एक क्षण भी अस्तित्व में नहीं रह सकता है। योग का पहला सूत्र है कि जीवन ऊर्जा हैं, लाइफ इन एनर्जी-जीवन शक्ति है। बहुत समय तक विज्ञान इस सम्बन्ध में राजी नहीं था, अब राजी है। बहुत समय तक विज्ञान सोचता था कि जगत पदार्थ है, मैटर है। लेकिन जिन्होंने विज्ञान की खोजों से हजारों वर्ष पूर्व यह घोषणा प्रसारित की कि पदार्थ एक असत्य है, एक झूठ है, एक इलूजन है, एक भ्रम है- भ्रम का मतलब यह नहीं कि नहीं है, भ्रम का मतलब-जैसा दिखाई पड़ता है वैसा नहीं है ओैर जैसा है वैसा दिखाई नहीं पड़ता हैं
लेकिन विगत तीस वर्षों से विज्ञान को एक-एक कदम योग के अनुरूप जाना पड़ा है। अट्ठारहवीं सदीं में वैज्ञानिक की घोषण थी कि परमात्मा मर गया है, आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है, पदार्थ ही सब कुछ है। लेकिन विगत तीस वर्षों में ठीक उल्टी स्थिति हो गयी है। विज्ञान को कहना पड़ा कि पदाथ है ही नहीं सिर्फ दिखायी पड़ता है ऊर्जा ही सत्य है शक्ति का सत्य है लेकिन शक्ति की तीव्र गति के कारण पदार्थ का अभ्यास होता है। दीवारें दिखाई पड़ रही हैं, अगर निकलना चाहें तो सिर टूट जायेगा- कैसे कहें कि दीवारे भ्रम हैं? स्पष्ट दिखाई पड़ रही हैं कि उनका होना है।
पैरों के नीचे जमीन है, अगर न हो तो आप खड़े कहाँ रहेंगे? नहीं, इन अर्थों में नहीं, विज्ञान कहता है कि पदार्थ नहीं है, इन अर्थों में कहता है कि जो हमें दिखाई पड़ रहा है, वैसा नहीं है। अगर हम एक बिजली के पंखें को बहुत तीव्र गति से चलाये तो उसकी तीन पंखुड़ियां तीन दिखाई पड़नी बन्द हो जायेगी, क्योंकि पंखुड़ियां इतनी तेजी से घूमेंगी कि उनकी बीच की खाली जगह,

इसके पहले कि आप देख पायें, भर जायेंगी। इसके पहले कि खाली जगह आंख की पकड़
में आये, कोई पंखुड़ी खाली जगह पर आ जायेगी। अगर बहुत तेज बिजली के पंखें को
घुमाया जाये तो आपको तीन का एक गोल वृत्त घूमता हुआ दिखाई पड़ेगा, पंखुड़ियां दिखाई नहीं पड़ेगी आप गिनती करके नहीं बता सकेंगे कि कितनी पंखुड़ियां है। और तेजी से घुमाया जा सके ता ेआप पत्थर फैककर पार नहीं निकाल सकेंगे,
पत्थर इसी पार गिर जायेगा। अगर उतनी तेजी से घुमाया जा सके, जितनी तेजी से
परमाणु घूम रहे हैं अगर उतनी तेजी से बिजली के पंखे को घुमाया जा सके तो आप मजें उसी पर बैठ सकते हैं। आप गिरेंगे हीं ओर आपको पता भी नहीं चलेगा ि पंखुड़ियां नीचे घूम रही हैं, क्योंकि पता चलने में जितना वक्त लगता है।,
उसके पहले नयी पंखुड़ी नीचे आ जायेगी। आपके पैर खबर दें आपके सिर को कि पंखुड़ी बदल गयी, इसके पहले दूसरे पंखुड़ी आ जायेगी। बीच के गैप, बीच के अन्तराल का पता न चले तो आप मजे से खड़े रह सकेंगे।
ऐसे ही हम खड़े हैं अभी भी। अणु जिस तीव्रता से घूम रहे हैं उनके घूमने
की गति तीव्र है, इसलिए चीजें ठहरी हुई मालूम पड़ती हैं।
जगत में कुछ भी ठहरा हुआ नहीं है। और जो चीजें ठहरी हुई मालूम पड़ती हैं, वे सब चल रही हैं। अगर वे चीजें भी चलती हुई हाती तो भी कठिनाई नहीं थी। जितना ही विज्ञान परमाणु को तोड़कर नीचे गया और उसे पता चला कि परमाणु के बाद पदार्थ नहीं रह जाता, सिर्फ "ऊर्जा-कण", "इलेक्ट्राँन्स" रह जाते हैं, "विद्युत्-कण" रह जाते हैं। उनको कण कहना भी ठीक नहीं हे, क्योंकि कण से पदार्थ का ख्याल आता हैं, इसलिए अंग्रेजी में एक नया शब्द हमें जोड़ना पड़ा उस शब्द का नाम "क्वाण्टा" है।
"क्वाण्टा" का मतलब है-कण भी, कण नहीं भी, कण नहीं भी, कण भी और लहर भी,
एक साथ। विद्युत की तो लहरें हो सकती हैं, कण नहीं हो सकता है। शक्ति की लहरें हो सकती हैं। कण नहीं हो सकते। लेकिन हमारी भाषा पुरानी है, इसलिए हम "कण" कहे चले जाते हैं। "कण" जैसी कोई भी चीज नहीं है। और विज्ञान की नजरों में यह सारा जगत ऊर्जा का, विद्युत की ऊर्जा का विस्तार हैं
योग का पहला सूत्र यही है जीवन ऊर्जा है, शक्ति है। दूसरा सूत्र है योग का शक्ति के दो आयाम हैं। एक अस्तित्व और एक अनस्तित्व। एग्जिस्टेन्स और नॉन-एग्जिस्टेन्स।
शक्ति अस्तित्व में भी हो सकती है और अनस्तित्व में भी हो सकती है। अनस्तित्व में जब शक्ति होती हैं तब जगत का शून्य होता हैं और जब अनस्तित्व में होती है। तब सृष्टि का विस्तार होता हैं जो भी चीज है, योग मानता है, वह "नहीं है"। जो भी है, वह न-होने में समाप्त होती है। जिसका जन्म है, उसकी मृत्यु है। जिसका होना है, उसका न-होना भी है। जो दिखाई पड़ती है, वह न-दिखाई भी पड़ सकती है। योग मानता है, इस जगत में प्रत्येक चीजें दोहरे आयाम की है, डबल डायमेन्शन्स की है। इस जगत में कोई भी चीजे एक-एक आयामी नहीं है। हम ऐसा नहीं कह सकते हैं कि एक आदमी पैदा हुआ और फिर नहीं मरा। हम कितना ही लम्बा करें उसके जीवन को, फिर-फिर के हमें पूछना पड़ेगा। कभी तो मरा होगा, कभी तो मरेगा? ऐसा कन्सीव करना, ऐसी धारणा भी बनाना असम्भव है कि एक छोर हो जन्म का और दूसरा छोड़ मृत्यु का न हो। दूर हो, कितना ही दूर हो, अन्तहीन मालूम पड़े दूरी, लेकिन दूसरा छोर अनिवार्य है। एक छोर के साथ दूसरा छोर वैसा ही अनिवार्य है जैसे एक सिक्के के दो पहलू अनिवार्य हैं। अगर एक ही पहलू का कोई सिक्का हो सके तो असम्भव मालूम पड़ता है। नहीं हो सकता है। दूसरा पहलू होगा ही, क्योंकि एक पहलू को होने के लिए भी दूसरे पहलू को होना पड़ेगा।
योग-विज्ञान का दूसरा सूत्र है-प्रत्येक चीज दोहरे आयाम की है। होने
का एक आयाम है-एग्जिस्टेन्स का। नॉन-एग्जिस्टेन्स का-दूसरा आयाम है, न-होने का। जगत है, जगत नहीं भी हो सकता हैं हम हैं, हम नहीं भी हो सकते हैं। जो भी है, वह नहीं भी हो सकता है।
नहीं होने का आप यह मतलब मत लगा लेना कि कोई दूसरे रूप में हो जायेगा। बिल्कुल नहीं भी हो सकता है। अस्तित्व एक पहलू है, अनिस्तत्व दूसरा पहलू है। सोचना कठिन मालूम पड़ता है कि नहीं होने से होना कैसे निकलेगा! होना नहीं-होने में कैसे प्रवेश कर पायेगा? लेकिन अगर हम जीवन के चारों ओर

देखें तो हमें पता चलेगा कि प्रति पल जो नहीं है, वह होगा, जो है, वह नहीं- होने में होगा।
यह सूर्य है हमारा, यह रोज ठण्डा होता जा रहा है। उसकी किरणें शून्य में खोती जा रही हैं। वैज्ञानिक कहते हैं, चार हजार वर्ष तक और गरम रह सकेगा। चार हजार वर्षों में इसकी सारी किरणें अनन्त में खो जायेंगी, तब वह भी शून्य हा जायेगा। अगर शून्य में किरणें खो सकती हैं तो फिर शून्य से किरणें आती भी होंगी, अन्यथा शून्य का जन्म कैसे होगा? विज्ञान कहता है कि हमारा सूर्य मर रहा है, लेकिन दूसरे सूर्य दूसरे छोरों पर पैदा हो रहे हैं। वे कहाँ से पैदा हो रहे हैं? वे शून्य से पैदा हो रहे हैं।
वेद कहते हैं कि जब कुछ नही था, उपनिषद भी बात करते हैं कि जब कोई चीज अस्तित्व में नहीं थी, बाइबिल भी बात करती है उस समय की जब कुछ नहीं था, न-कुछ से, नथिंगनेस से, उस न-कुछ से होना पैदा होता है और होना प्रतिपल न-कुछ में लीन होता चला जाता है। अगर हम पूरे अस्तित्व को एक समझें तो इस अस्तित्व के नीचे भी हमें अनस्तित्व को स्वीकार करना पड़ेगा।
योग का दूसरा सूत्र है प्रत्येक अस्तित्व के पीछे अनस्तित्व जुड़ा हैं शक्ति के दो आयाम हैं, अस्तित्व और अनस्तित्व। शक्ति हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है, अस्तित्व और अनस्तित्व। शक्ति है यह एक पहलू है प्रलय दूसरा पहलू है। ऐसा नहीं है। कि सब कुछ सदा रहेगा! खोयेगा, छिन्न-भिन्न हो जायेगा। फिर-फिर हाता रहेगा। जैसे एक बीज को तोड़कर देखें तो कहीं किसी वृक्ष का कोई पता नहीं है। कितना ही खोजें, वृक्ष की कहीं कोई खबर नहीं मिलती, लेकन सिर्फ इस छोटे से बीज से वृक्ष आता जरूर है। कभी भी नहीं सोचा कि बीज में जो कभी नहीं मिलता, वह कहाँ से आता है। और इतने छोटे-से बीज में इतने बड़े वृक्ष का छिपा होना! फिर वह वृक्ष बीजों को जन्म देकर खो जाता है। ठीक ऐसे ही पूरा अस्तित्व बना है, खोता है।
शक्ति अस्तित्व में आती है और अनस्तित्व में मिल जाती है। अनस्तित्व
को पकड़ना बहुत कठिन है। अस्तित्व तो हमें दिखाई पड़ता है। इसलिये योग की दृष्टि से जो सिर्फ अस्तित्व को मानता है, जो समझता है कि अस्तित्वही सब-कुछ है, वह अभिनय को देख रहा है। और अभिनय को जानना ही अज्ञान है। अज्ञान का अर्थ न-जानना नहीं है, अज्ञान का अर्थ अभिनय को जानना है। जानते तो हम हैं हीं अगर हम इतना भी जानते है कि मैं नहीं जानता तो भी मैं जानता तो हूँ ही। जानना तो इसमें है ही। इसलिए अज्ञान का अर्थ न-जानना नहीं है। अज्ञानी से अज्ञानी भी कुछ जानता ही है। अज्ञान का अर्थ योग की दृष्टि में आधे को जानना हैं
और ध्यान रहे, आधा सत्य असत्य से बदतर होता है, क्योंकि असत्य से छुटकारा सम्भव है, आधे सत्य से छुटकारा बहुत मुश्किल होता है। वह सत्य भी मालूम पड़ता है और सत्य होता ही नहीं। प्रतीत भी होता है कि सत्य है और सत्य होता ही नहीं अगर असत्य है पूरा-का-पूरा निखालिस असत्य हो तो उससे छूटने में देर नहीं लगेगी। लेकिन अधूरा, आधा सत्य हो तो उससे छूटना बहुत मुश्किल होता है।
और भी एक कारण है कि सत्य-जैसी चीज आधी नहीं की जा सकती। आधी करने से
मर जाती है। क्या आप अपने प्रेम को आधा कर सकते हैं? क्या आप ऐसा कह सकते हैं कि सिकी को कि मैं तुम्हें आधा प्रेम करता हूँ? यहा प्रेम करेंगे नहीं करेंगे। आधा प्रेम सम्भव नहीं है। क्या आप ऐसा कह सकते हैं कि मैं आधी चोरी करता हूँ? हो सकता है, आधे रुपये की चोरी भी पूरी चोरी है। आधा पैसे की चोरी भी पूरी चोरी है। चोरी आधी नहीं की जा सकती। आधी चीजें की जा सकती हैं, लेकिन चोरी आधी नहीं हो सकती हैं
आधे का अर्थ यह है कि आप किसी भ्रम में हैं। तो योग कहता है कि जो लोग सिर्फ अस्तित्व को देखते हैं, वे आधे को पकड़े हैं। और आधे को जो पकड़ता है, वह भ्रम में जीता है, वह अज्ञान में जीता है। उसका दूसरा पहलू भी है जो आदमी कहता है, मैंने जन्म तो लिया हूँ, लेकिन मरना नहीं चाहता, वह आदमी आधे को पकड़ रहा है। दुख पायेगा, अज्ञान में जियेगा। और कुछ भी करे, मौत आयेगी ही, क्योंकि आधे को काटा नहीं जा सकता है।

जन्म को स्वीकार किया है तो मौत उसका आधा हिस्सा है, वह साथ ही जुड़ा है। जो आदमी कहता है, मैं सुख को ही चुन लूंगा, दुख को नहीं, वह भूल में पड़ रहा है योग कहता है, तुम आधे को चुनते ही गलती में पड़ोगे दुख-सुख का ही दूसरा हिस्सा है। वह आधा हिस्सा है। इसलिए जो आदमी सुखी होना चाहता है, उस आदमी को दुखी होना ही पड़ेगा। तो आदमी शान्त होना चाहता है, उसे अशान्त होना ही पड़ेगा। कोई उपाय नहीं है।
योग कहता है, आधे को छोड़ देना ही अज्ञान है। वह उसका ही हिस्सा है। लेकिन हम देखते नहीं पूरे को! जो पहले हमें दिखाई पड़ता है उसे हम पकड़ लेते हैं और दूसरे पहलू का इनकार किये चले जाते है, बिना यह समझे कि जब हमने आधे को पकड़ लिया है तो आधा पीछे प्रतीक्षा कर रहा है। वह अवसर की खोज कर रहा है, वह जल्दी ही प्रगट हो जाएगा। योग कहता है कि ऊर्जा को दो रूप हैं और जो दोनों ही रूपों को समझ लेता है, वह योग में गति करता है। जो एक चीज को, आधे को पकड़ लेता है, वह अयोगी हो जाता है।
जिसको हम भोगी कहते हैं, वह आधे को पकड़े हुए का नाम है। जिसे हम योगी कहते हैं, वह पूरे को पकड़े हुए का नाम है। योग का मतलब यह होता है-द टोटल जोड़ा। गणित की भाषा मे भी योग का मतलब जोड़ होता है, अध्यात्म की भाषा में भी योग का मतलब होता है इण्टिग्रेटेड दि टोटल पूर समग्र भोगी हम उसे नहीं कहते, जो योग का दुश्मन है। भोगी हम उसे कहते हें, जो आधे को पकड़ता है, आधे को पूरा मान के जीता है। योगी पूरे को जान लता है, इसलिए वह पकड़ता ही नहीं हे।
यह भी बड़े मजे की बात है, पकड़ने वाले सदा आधे को ही पकड़ने वाले होते हैं, पूरे को जान लेने वाला पकड़ता ही नहीं है। जिसको यह दिखाई पड़ गया है कि जन्म के साथ मृत्यु है, अब वह किसलिए जन्म को पकड़े, ओैर वह मृत्यु को भी क्यों पकड़े, क्योंकि वह जानता हैं कि मृत्यु के साथ जन्म है। जो जानता है कि सुख के साथ दुख है, वह सुख को क्यों पकड़ेगा वह दुख को भी क्यों पकड़े, क्योंकि वह जानता है। कि दुख के साथ सुख है। असल में जो जानता है, सुख और दुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, वे दो चीजें नहीं, एक ही चीज के दो आयाम हैं, दो डायमेन्शन हैं। इसलिए योगी, पकड़ने के बाहर हो जाता है, क्लिंगिंग के बाहर हो जाता है।
दूसरा सूत्र ठीक-से समझ लेना जरूरी है। कि ऊर्जा, शक्ति के दो रूप हैं
हम सब एक रूप को पकड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं। कोई जवानी को पकड़ता है। तो फिर बुढ़ापे का दुख पाता है। वह जानता नहीं कि जवानी का दूसरा हिस्सा बुढ़ापा है। असल में जवानी का मतलब है, वह स्थिति जो बूढ़ी हुई जा रही है। जवानी का मतलब हैं, बुढ़ापे की यात्रा। बूढ़ा आदमी उतने जोर से बूढ़ा नहीं होता, ध्यान रखना, जितने जोर से जवान बूढ़ा हो जाता है। जवानी का मतलब हे, बूढ़े होने की ऊर्जा। बूढ़े का मतलब, बीत गयी जवानी की ऊर्जा, चुक गयी जवानी की ऊर्जा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक घर के बाहर का दरवाजा है, एक घर के पीछे का दरवाजा है।
जन्म और मृत्यु, सुख और दुख जीवन के सभी द्वन्द्व अस्तित्व, अनस्तित्व, आस्तिक-नास्तिक वे भी आधे आधे को पकड़ते हैं। इसलिए योग की दृष्टि में दोनों ही अज्ञानी हैं। आस्तिक कहता है कि बस, भगवान हैं आस्तिक सोच भी नहीं सकता है कि भगवान का न-होना भी हो सकता है। लेकिन बड़ा कमजोर आस्तिक है, क्योंकि वह भगवान को नियम से बाहर कर रहा है। निमय तो सभी चीजों पर एक-सा लागू है। भगवान अगर है तो उसका न-होना भी होगा। नास्तिक उसके दूसरे हिस्से को पकड़े हुए हैं वह कहता है।, भगवान नहीं है। लेकिन जो चीज नहीं है, वह हो सकती है। और इतने जोर से कहना कि नहीं है, इस डर की सूचना देता हैं कि उसके होने का भय है। अन्यथा "नहीं" है कहने की काई जरूरत नहीं है। जब एक आस्तिक कहता है, "नहीं भगवान है ही" लड़ने काेतैयार हो जाता है, तब वह भी खबर देता है। कि भगवान को भी न-हो जाने का डर उसे हैं अन्यथा क्या बिगड़ता है! कोई कहता हे नहीं तो कहे। आस्तिक लड़ने को तैयार है, क्योंकि वह भगवान का एक हिस्सा पकड़ रहा है। वह वही-की-वही बात है कि चाहे अपना जन्म पकड़ो और चाहे भगवान का होना पकड़ो, लेकिन दूसरे हिस्से को इनकार किया जा रहा है। योग कहता है दोनों हैं, होना और न-होना दोनों साथ ही-साथ हैं।

इसलिए योगी नास्तिक को भी कहता है कि तुम भी आ जाओ, क्योंकि आधा सत्य
है तुम्हारे पास, आस्तिक को भी कहता है कि तम भी आ जाओ, क्योकि आधा सत्य ही है तुम्हारे पास। और आधा सत्य असत्य से भी खतरनाक है।
दूसरा सूत्र है। द्वन्द्व के बीच शक्ति का विस्तार।
अंधेरे और प्रकाश के बीच एक ही चीज का विस्तार है, दो चीजें नहीं है। लेकिन हमें लगता है कि दो चीजें हैं। वैज्ञानिक से पूछें तो वह कहेगा, दो नहीं हैं। जिसे हम अंधेरा कहते हैं, वह सिर्फ कम प्रकाश का नाम है। और जिसे हम प्रकाश कहते हैं, वह कम अंधेरे का नाम है। विपरीत का फर्क है। इसलिए रात में-पक्षी हैं, जिनको दिखाई पड़ता है। अंधेरा है आपको, उनके लिए अंधेरा नहीं है। क्यों? उनकी आंखें इतने धीमे प्रकाश को भी पकड़ने में समर्थ हैं। ऐसा नहीं है, धीमा प्रकाश ही पकड़ में नहीं आता, बहुत तेज प्रकाश भी आंख की पकड़ में नहीं आता। अगर बहुत तेज प्रकाश आपकी आंख में डाला जाये तो आंख तत्काल अंधी हो जाएगी, देख नहीं पायेगी। देखने की भी एक सीमा है। उसके नीचे भी अन्धकार है, उसके ऊपर भी अन्धकार है, क्योंकि छोटी-सी सीमा है, जहाँ हमें प्रकाश दिखाई पड़ रहा है। लेकिन जिसे हम अन्धकार कहते हैं, वह भी प्रकाश तारतम्यताएं हैं। उनमें जो अन्तर है।, क्वालिटेटिव नहीं है, क्वालिटेटिव है। गुण का कोई अन्तर नहीं है, सिर्फ परिणाम का अन्तर है। गरमी और सर्दी का कभी ख्याल किया है? हम समझते हैं, दो चीजें हैं। नहीं, दो चीजे नहीं हैं। गरमी सर्दी से समझना बहुत आसान पड़ेगा। लेकिन हम कहेंगे, दो चीजें हैं, गरमी हमें गरमी देती है, तब कैसे मान लें कि यह वही है? जब शीतल छाया में हम बैठतें हैं, तब शीतल छाया को कैसे सूरज की गरमी मान लें? नहीं, मैं नहीं कह रहा हूँ कि आप एक मानकर शीतल छाया में बैठना छोड़ दें। मैं इतना ही कह रहा हूँ कि जिसे आप शीतल छाया कह रहे हैं, वह गरमी की ही कम मात्रा है। और जिसे आप सख्त धूप कह रहे हैं, वह शीतलता की ही थोड़ी कम मात्रा है।
कभी ऐसा करें, एक हाथ को स्टोव के पास रखकर गरम कर लें और एक को बर्फ पर रखकर ठण्डा कर लें और फिर दोनों हाथों को पानी भरी बाल्टी में डाल दें। तब आप बड़ी मुश्किल में पड़ जायेंगे कि बाल्टी का पानी गरम हैं यहा ठण्डा एक हाथ कहेगा, ठण्डा है, एक हाथ कहेगा, गरम हैं और एक ही बाल्टी का पानी दोनों नहीं हो सकता है। और आपके दोनों हाथों में से खबरें आ रही हैं!
जो हाथ ठण्डा है, उसे पानी गरम मालूम होगा, जो हाथ गरम है, उसे पानी ठण्डा मालूम होगा। ठण्डक और गरमी रिलेटिव हैं, सापेक्ष हैं। योग का दूसरा सूत्र है जीवन और मृत्यु, अस्तित्व-अनस्तित्व, अंधकार-प्रकाश, बचपन-बुढ़ापा, सुख-दुख सर्दी-गरमी, सब रिलेटिव हैं, सब सापेक्षताएं हैं। ये सब एक ही चीज के नाम हैं।
यह दूसरा सूत्र ठीक-से समझ लें तो आगे बहुत-सी बातें आसान हो जायेंगी। प्रत्येक चीज का दूसरा पहलू सदा मौजूद है। इसलिए जब भी आप एक चीज पकड़ते हैं, ध्यान में ले लेना, उससे उल्टा भी आपने पकड़ लिया है। जब आपने किसी को प्रेम से कहा है। कि अब मैं तुमसे मिल गया, अब मैं कभी बिछुड़ना न चाहूंगा, तब आप ठीक-से समझ लेना कि आपके मिलन में विरह मौजूद है, वह घटित होकर रहेगा। असल में मिलते वक्त भी प्रेमी यही कहता है कि मुझे बहुत डर लग रहा है। कि कहीं हम बिछुड़ न जायें। वह दूसरा पहलू उसको भी पता चल रहा है। नहीं तो मिलते क्यों नहीं, विरह की क्या बात है? जब मिले हैं तो मिले हैं। लेकिन मिलते क्षण में विरह पीछे छाया की तरह खड़ा है। जब किसी को मित्र बनायें तब समझ लेना एक आदमी और पोटेंशियल एनिमी, एक आदमी और शत्रु पैदा कर लिया है। यह तो पक्का है कि बिना मित्र बनाये शत्रु नहीं बनाया जा सकता है। सीधा शत्रु बनाने का अब तक कोई उपाय नहीं खोजा गया। शत्रु नहीं बनाया जा सकता। सीधा शत्रु बनाने का अब तक कोई उपाय नहीं खोजा गया। शत्रु को भी मित्र होने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। अगर शत्रु भी बनता हो तो मित्र होने के रास्ते से ही जाना पड़ता है। तो जब मित्र बनाये तब योग कहता है, जानना कि शत्रु छाया की तरह पीछे खड़ा है।
जीवन के प्रत्येक राग में विपरीत को सदा स्मरण रखना तो कि्ंलिगंग पकड़ छूट जाएगी शत्रु आपके द्वार पर दस्तक देगा तो आप उसके पीछे झांककर देख

लेंगे कि मित्र को जरूर साथ लाया हुआ है। लाता ही है। यह उसकी छाया है। वह उसके बिना कभी आता नहीं है। तो योग में प्रविष्ट व्यक्ति के लिए सुख आता है। तो आ जाने देता हे। बहुत स्वागत नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि पीछे तुम किसके लिये हो। और जब दुख आता है, तब उसे भी स्वागत से बिठा देता हैं, क्योंकि वह जानता है कि तुम किसको पीछे लिये हुए हो।
सुख और दुख में वह सम हो जाता है। समता का सिर्फ एक ही आधार है कि प्रत्येक चीज अपने विरोधी से अनिवार्य रूप से जुड़ी है। विरोध के बिना अस्तित्व नहीं है। जिसे हमने प्रेम किया है, उसमें हमने घृणा के बीज बो दिये हैं। जिससे हम मिले हैं, उससे हमने विदा का मार्ग तय किया है। जिसे हमने अपना बनाया है, उसे हमने पराया बनाने के सुख और सुविधा दी है। जा यशस्वी हुआ, उसने अपने अपमान के लिए बीज बोये। जो जीता, उसने हार को निमन्त्रण दिया हैं
लाओत्से ने एक दिन अपने मित्रों से कहा कि मुझे जिन्दगी में कोई हरा नहीं सका। स्वभावतः उसके मित्र चुप हो हो गये। उन्होंने पूछा- हमें भी बताओ वह राज वह सीक्रेट कि तुम्हें कोई हरा क्यों नहीं सका? हम भी किसी से हारना नहीं चाहते। पर लाओत्से खिलखिलाकर हंसने लगा और उसने कहा-गलत लोगों को मैं सूत्र नहीं बताऊंगा। उन्होंने कहा-कैसे गलत हुआ? हमें जरूर बताओ मार्ग, जिससे हम भी नहीं हार सकें। लाओत्से ने कहा तुम तो हारोगे ही, क्योंकि जो हारना नहीं चाहता है हार को निमन्त्रण दे दिया। हमारा सूत्र यही है कभी कोई हरा न सका, क्योंकि हमने कभी नहीं चाहा, क्योंकि जो जीतना चाहेगा, वह हार नहीं सकता है।
लाओत्से एक जंगल से गुजर रहा था, अपने शिष्यों को लेकर; सारा जंगल कट रहा था हजारों कारी गर वृक्षों को काट रहे थे। सिर्फ एक वृक्ष सुरक्षित है उसे कोई छूता भी नहीं लाओत्से ने कहा जाओ इस वृक्ष से पूछो उसके बचने का क्या राज है। क्या उसे योग के सूत्र का पता चल गये क्या यह ताओ को जान गया है? जब सारा जंगल कटा तो यह वृक्ष क्यों नहीं कटा? लाओत्से ने कहा तो उसके शिष्य मुश्किल में तो पड़े कि वृक्ष से क्या पूछे उन्होंने सोचा कि चल कर इन कारीगरों से पूछें इस वृक्ष को क्यों नहीं काट रहे हो। उन कारीगरों ने कहा कि इस वृक्ष की लकड़िया इतनी इरछी-तिरछी हैं कि वे फर्नीचर के काम न आ सकेंगी।
तो उन्होंने कहा-काटकर कम-से-कम ईंधन तो बना सकते हो? उन्हेंने कहा यह वृक्ष बड़ा अजीब है, इससे इतना धुंआ निकलता है। कि इसका कोई ईंधन नहीं बना सकता। उन्होंने कहा यह वृक्ष बिल्कुल बेकार हैं इसको काटना बेकार मेहनत खराब करनी है। लकड़ियां सीधी नहीं, धुंआ छोड़ती हैं। पत्ते किसी दवा के काम नहीं आते। कोई जानवर पत्ते खाने को राजी नहीं हैं। यह वृक्ष बड़ा बेकार है। लाओत्से ने कहा धन्य है यह वृक्ष! इसकी शाखाओं ने सीधे होने की कोशिश ही नहीं की, इसलिए ये कटने से बच गयीं। जो वृक्ष सीधे होने की कोशिश में हैं, देखते हो, वे काटे जा रहे हैं, इस वृक्ष के पत्तों ने कुछ होने की कोशिश नहीं की। स्वादिष्ट होने की कोशिश नहीं की, इसलिए कोई तोड़ने नहीं आया। यह वृक्ष, कुछ होने की कोशिश् नहीं किया, इसलिए है और अपने पूरे आनन्द में मग्न है। लाओत्से ने कहा यही तरकीब मेरी है। मुझे कोई कभी हरा नहीं सका, क्योंकि मैं जीतने ही नहीं गया। मैं सदा से हारा ही हुआ हूँ, इसलिए मुझे हराना मुश्किल हैं
एक बार लाओत्से ने कहा एक आदमी ने यह सुनकर कि लाओत्से को कोई हरा न सक, एक गाँव में मुझे चुनौती कर दी थी। गाँव में लाओत्से रुका था। किसी से कहा होगा, मुझे कभी कोई हरा न सका। गाँव में खबर पहुँच गयी। किसी पहलवा ने पूछा कि चुनौती! उस पहलवान ने आकर लाओत्से के दरवाजे पर झण्डा गाड़ दिया और कहा कि मैं तुम्हें हरा दूंगा। लाओत्से ने कहा कि नहीं हरा सकोगे। उसने कहा कि मैं अभी हरा देता हूँ। वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गयी। वह पहलवान अपनी लंगोटी बांधकर, भगवान का नाम लेकर लड़ने आया। लेकिन लाओत्से उसके सामने चित्त लेट गया और उसने कहा कि आ मेरे ऊपर बैठ पहलवान ने कहा तुम आदमी कैसे हो? तुम्हें तो हराने का मजा भी चला गया। लाओत्से ने कहा-मैंने पहले ही कहा था कि मुझे अब तक कोई हरा न सका, क्योंकि हम पहले से ही हारे हुए हैं।

हम जीतना नहीं चाहते। आओ, हमारी छाती पर बैठ जाओ और गांव के बीच डुग्गी पीट के कह दो कि हरा आये, चित्त कर दिया। उस पहलवान ने कहा-ऐसे आदमी के ऊपर बैठना बेकार है। वह पहलवान उसके पैर छूकर अपने घर चला गया। उसने कहा कि झगड़ा व्यर्थ है।
योग कहता है, द्वन्द्व में चुनाव व्यर्थ है।
योग कहता है, वह जो दिखाई पड़ते हैं जीवन में सदा, उनमें चुनना ही मत।
वे दोनों एक-दूसरे के रूप हैं। सिर्फ धोखा हें चेहरा और है, पीछे कुछ और है। अस्तित्व-अनस्तित्व, जीवन-मृत्यु, सुख-दुख, अच्छा-बुरा, नीति-अनीति, धर्म-अधर्म, सब एक ही चीज के विस्तार हैं। साधु--चोर सब एक ही चीज के विस्तार हैं। इनको सुनना ही मत, इनको समझ लेना। इनको समझ लेने से अतिक्रमण, ट्रान्सेन्डेन्स होता है। योग का दूसरा सूत्र-शक्ति, ऊर्जा, अस्तित्व और अनस्तितव में द्वन्द्व रहते हैं। और जहाँ पहाड़ उठते हैं शक्ति के, वहाँ शक्ति की खाइयां भी बट जाती हैं। और जहाँ अस्तित्व निर्मित होता है, वहाँ अनस्तित्व भी मौजूद होता है। जहाँ सृष्टि होती है, वहाँ प्रलय भी होता है।
इसलिए इस देश ने सृजन को अकेला नहीं, साथ में प्रलय को भी एक-साथ सोचा हैं। सृष्टि के साथ प्रलय, होने के साथ न होना। सब चीजे जो होती हैं, न-होने की यात्रा करती हैं। और जो नहीं होती हैं, वह होने की यात्रा पर वापस लौट रही हैं।
सागर में आपने लहर देखी है? जो लहर ऊपर उठी है, वह गिरने की यात्रा पर है। और जो खाई-सी नीचे बन गयी है, वह उठने की यात्रा पर है। सब चीजें प्रतिपल अपने से विपरीत में प्रवेश कर रही हैं। जिसे यह दिखाई पड़ जाता है, उसकी आकांक्षा, उसकी कामना, उसकी वासना तिरोहित हो जाती है। छोड़ता नहीं है वह वासना-तिरोहित हो जाती है, क्योंकि वासना चुनाव, च्वाइस का नाम है। योग का तीसरा सूत्र-अस्तित्व के दो रूप हैं, मैंने कहा। ऊर्जा-एक सूत्र। दूसरा, ऊर्जा के दो रूप-अनस्तित्व, अस्तित्व। और तीसरा सूत्र-अस्तित्व के दो रूप हैं। एक, जैसे हम चेतन कहें और एक जिसे हम अचेतन कहें। लेकिन दो रूप ही हैं, दो चीजें नहीं हैं। जिन्हें हम धार्मिक लोग कहते हैं, वे भी दो चीजें सोच लेते हैं। वे भी सोच लेते हैं कि चेतना अलग, अचेतना अलग, शरीर अलग, आत्मा अलग! ऐसी अलगता हे, उसका नाम शरीर है औरशरीर का जो हिस्सा इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आता, उसका नाम आत्मा है।
चेतन और अचेतन अस्तित्व के दो रूप हैं। एक पत्थर पड़ा है, वह है, लेकिन अचेतन है। आप उसके पड़ोस में खड़ें हैं, आप भी हैं। होने में कोई फर्क नहीं है, दोनों का एग्जिस्टेंस हैं, दोनें का अस्तित्व है, लेकिन एक चेतन है और एक अचेतन है। लेकिन पत्थर चेतन बन सकता है आप पत्थर बन सकते हैं। कन्वर्टेबल हैं। इसलिए तो आप गेहूँ खा लेते हैं और खून बन जाता है।
इसलिए तो आपके शरीर में लोहा जाता है और जीवित हो जाता है। अगर हम आदमी के शरीर का सब सामान निकाल कर बाहर टेबल पर रखें तो कोई पाँच रुपये से ज्यादा का सामान नहीं निकल सकता। थोड़ा-सा लोहा है, अल्युमीनियम है, फास्फोरस है, तांबा है, ये सब चीजें निकलेंगी। बड़ा हिस्सा तो पानी का है। कोई पाँच रुपयें का सामान है आदमी के भीतर। लेकिन आदमी के भीतर ही क्या गयी हैं चेतन और चीजें? हाथ को चोट लगती है तो पीड़ा उठती है। और सही हाथ का हिस्सा कल बाहर था और पीड़ा नही उठती थी। कल फिर बाहर हो जायेगा।
जिस जगह आप बैठे हैं, उस जगह कम-से-कम दस आदमियों की कब्र बन चुकी है, एक-एक आदमी की जगह। पूरी पृथ्वी पर जितने लोग अब तक हुए हैं, उन सबका अनुपात इतना है कि जहाँ भी हम खड़े हैं उस जमीन की मिट्टी में, उस छोटे-से एक वर्ग फीट के हिस्से में कम-से-कम दस आदमियों का शरीर मिट्टी हो चुका है। वे दसों आदमी कभी जीवित थे, आज आपके पैर में धूल की तरह पड़े हैं। आज आप जीवित हैं, कितनी देर तक हैं? कल आप भी धूल की तरह पड़े होंगे।
चेतन और अचेतन, अस्तित्व के दो रूप हैं। दो अस्तित्व नहीं हैं, अस्तित्व के ही दो रूप हैं। इसलिए गन्वर्टेबल हैं, रूपान्तरित हो सकते हैं। इसलिए चेतन से अचेतन आ सकता है, अचेतन चेतन में जा सकता है। रोज हो रहा है। रोज हम यही कर रहे हैं। रोज हम जड़ अचेतन को भोजन बना रहे हैं और

हमारे भीतर वह चेतन बनता जाता है और रोज हमारे भीतर से मल निष्कासित हो रहा है बहुत रूपों में और जड़ होता जा रहा हैं। आदमी इधर से चेतन होता है, उधर से अचेतन होता है। और जेसे अचेतन को लेता है, भीतर चेतन होता जाता है। चेतन और अचेतन भी दो चीजें नहीं हैं। इसमें भी बड़ी भूल होती रही है। नास्तिक कहते हैं सिर्फ अचेतन ही है, लेकिन इनके बड़ी मुश्किल पड़ती है समझाने में। इनको मुश्किल पड़ती है कि अगर सिर्फ अचेतन ही है तो चेतन कहाँ से आता है। तो फिर मार्क्स जैसे नास्तिक को कहना पड़ता है कि यह बाइ-प्रोडेक्ट है। चेतन कोई असली चीजे नहीं है। यह तो पदार्थ के मिलने-जुलने से पैदा हो गयी घटना है। यह कोई वस्तु नहीं है, ईवेन्ट है। चार्वाक को कहना पड़ता है कि आदमी की चेतना वैसे ही है, जैसे पानवाला पान बनाता है, कत्था और चूना लगाता है फिर जब आप पान खाते हें तो लाल रंग पैदा हो जाता है। वह लाल रंग न तो अकेले चूने में है, न अकेले कत्थे में है, न अकेले पान में है। उन सबके मिलने से पैदा हो जाता हैं वह संघट परिणाम है, वह बाइ-प्रोडक्ट है, वह इसी का फेनामिना है। जैसे शराब बनती हे, जिन-जिन चीजों से बनती है उनको अलग-अलग ले लें तो नशा नहीं आता और इकट्ठा करके ले लें तो नशा आ जाता है। तो नास्तिक चाहे चार्वाक हो, चाहे मार्क्स हो, उनकी भाषा में बड़ा फर्क पड़ता है। बल्कि उनकी कठिनाई यही है कि चेतना दिखाई तो पड़ती है, उसे समझायें कैसे? तो एक ही रास्ता है उनके पास कि वे कहें कि अचेतन चीजों से मिलकर चेतना पैदा हो चेतना पैदा हो जाती है। लेकिन यह बड़ी अवैज्ञानिक बात है। और मार्क्स जैसे वैज्ञानिक होने का दावा करने वाले आदमी के मुँह से शोभा नहीं देती, कयोंकि जिससे जो चीज पैदा होती है, वह उसमें कहीं-न-कहीं छिपी होनी चाहिए, अन्यथा पैदा नहीं हो सकती। अगर पान में लाल रंग आ जाता है तो माना, एक-एक चीज में अलग वह नहीं था, लेकिन वह लाल रंग इन सबमें छिपा था जो उनसे प्रगट हुआ, अलग-अलग जो दिखाई नहीं पड़ता था। ऑक्सीजन और हाईड्रोजन को अगर हम अलग-अलग पी लें तो प्यास नही बुझेगी। न होइड्रोजन में पानी है, न ऑक्सीजन में पानी है, लेकिन दोनों को मिलाकर पानी बन जायेगा और फिर प्यास बुझ जायेगी। वह पानी कहाँ से आया? यह पानी ऑक्सीजन और हाइड्रोजन में था, लेकिन दोनों मिलें तो ही प्रगट हो सकता था।
आप अकेले कमरे में बैठे हुए हैं। मैं आपके कमरे में आ गया और हम दोनों
ने बातचीत शुरू कर दी। यह बातचीत आसमान से नहीं आ गयी, मरे भीतर भी थी, आपके भीतर भी थी। लेकिन अगर आप अकेले कमरे में बोलते तो पागल समझे जाते, मैं आ गया तो आप पागल नहीं समझे जाते, अब प्रगट होने की सुविधा हो गयी।
जो भी चीजे प्रगट होती है, वह जिनसे प्रगट होती हे, उनमें लुप्त होती है, छिपी होती है। इसलिए नास्तिकों के ये दावे कि चेतना पदार्थ से ऐसे ही प्रगट हो गयी है-है नहीं, थी नहीं-अत्यन्त अवैज्ञानिक है। योग उन्हें मानने को तैयार नहीं है आस्तिक भी इससे उलटी बातें करते हैं। उनकी भी तकलीफ यही है-उलटे हिस्से हैं। वे कहते हैं- पदार्थ है ही नहीं, जड़ कुछ है ही नहीं, सब-परमात्मा-ही-परमात्मा है तो फिर सवाल उठता है कि यह सब जो चारों तरफ से दिखाई पड़ रहा है, कहाँ से पैदा होता है। तो शंकर कहते हैं- माया, इलूजन, है नहीं, यह भी फेनामिना है। यह भी सूडोएग्जिस्टेंस हैं यह है नहीं।
वही तकलीफ जो आस्तिक की है, वही तकलीफ नास्तिक की भी है। तकलीफ यह है
कि दूसरे को कैसे समझाओगे। वह भी है तो फिर उसके लिए चक्कर रहा, तर्क खोजने पड़ते, और वह तर्क से कभी इसको सिद्ध नहीं कर पाते।
योग कहता है, दोनों हैं। इसलिए योग किसी चक्करदार तर्क में नहीं पड़ता। वह कहता है दोनों हैं। और वह यह भी कहता है कि दोनों दो नहीं हैं, अन्यथा फिर दोनों को जोड़ने का उपद्रव होगा कि दोनो को जोड़ें कैसे? दोनो एक ही के दो रूप हैं। जैसे मरे दोनो हाथ हैं-बायें और दायें। ये दो दिखाई पड़ते हैं, ये मेरे लिए दो नहीं हैं। ये आपको दिखाई पड़ते हैं, दो मालूम होते हैं। मेरे लिए एक ही शक्ति दोनों पर फैली है। मंजे की बात हे, अगर मैं चाहूं हाथों को लड़ा सकता हूँ! और दोनों में एक ही ऊर्जा है।
चेतन और अचेतन एक ही अस्तित्व है एक ही अस्तित्व के दो छोर हैं। चेतन अचेतन हो सकता है, अचेतन चेतन को उतारता है। यह तीसरा सूत्र है योग का।

सूत्र समझ लेने जरूरी हैं, क्योंकि फिर इन्हीं सूत्रों के ऊपर योग की सारी साधना का भवन खड़ा होता है। चेतन-अचेतन, अब विज्ञान को राजी हो गयी है यह बात। अब विज्ञान एक नये शब्द का प्रयोग करता है, वह मैं आपसे कहूं साइकोसोमेटिक। पहले बीमारियां दो तरह की समझी जाती थीं फिजिकल और मेन्टल। एक मानसिक बीमारी है। और एक शारीरिक बीमारी है, क्योंकि मन अलग है और शरीर अलग है। अब चिकित्साशास्त्र एक नये शब्द का प्रयोग करता है साइकोसोमेटिक या सोमेटिक साइकिक। अब चिकित्साशास्त्र कहता है कोई बीमारी न तो अकेली मानसिक है और न अकेली शारीरिक है। बीमारी मनोशारीरिक, साइकोसोमेटिक है। दोनों ही छोर उसके हैं।
अगर आपका मन बीमार हो गया तो आपका शरीर भी बीमार हो जाता है। और अगर आपका शरीर बीमार हो जायेगा तो आपका मन भी बीमार होता है। जब हम आपको शराब पिलाते हैं, तब आपके मन को नही पिलाते हैं। शराब तो आपके पेट में जाती है। आपके लीवर में जाती है, आपके मन में नहीं जाती है शराब। लेकिन जैसे ही शराब शरीर में जाती है कि मन अनर्गल बातें करने लगता है। नहीं करना चाहिए, करने लगता है। शराब तो शरीर में गयी, लेकिन प्रभाव मन पर पहुँच गया। और अब मन रूग्ण होता है, अगर मन में बीमारी डाल दी जाये तो शरीर बीमार हो जाता है। दस या बारह वर्ष पहले अमेरीका को एक कानून बनाना पड़ा, "एण्टिहिप्नोटिक ऐक्ट" बनाना पड़ा। एक कानून बनाना पड़ा सम्मोहन के विरोध में, क्योंकि एक छोटे-से कॉलेज के होस्टल में एक अनूठी घटना घट गयी। चार लड़के हिप्नोटिजम की एक किताब पढ़ रहे थे और उसमें लिखा था कि मन जो भी मानने को राजी हो जाये, वह हो जाता है। उन चारों ने कहा कि हम प्रयोग करके देखें और अपने पांचवें साथी को उन्होंने लिटाया और जो उस किताब में लिखा था उस भांति बेहोशी के सुझाव दिये। दस मिनट तक वे चारों लड़के कमरे में अंधेरा करके जोर जोर से उस लड़के से कहते रहे कि तुम बेहोश हो रहे हो, तुम बेहोश हो रहे हो, तुम बेहोश हो रहे हो। वह लड़का दस मिनट में गहरी नींद में सो गया और बेहोश हो गया।
जब उन्होंने उसके हाथ पर आलपिन चुभाइ तो उसे पता न चला और जब उन्होंने उसके मुँह मे मिट्टी रख दी और कहा कि तुम मिठाई खा रहे हो और उसने मिठाई की तरह स्वाद से उस मिट्टी को खाया, तब तो उनकी गति बढ़ती चली गयी। उन्होंने उस लड़के को उठाया, नाचने के लिए कहा कि तुम नृत्यकार हो। तो वह नाचने लगा। और उसको उन्होंने कहा कि तुम पागल हो गये हो तो वह पागल हो गया। फिर उन्होंने आखिरी बात पूछो। उन्होंने उस लड़के से कहा कि तुम मर गये और वह लड़का मर गया! उससे एक कानून बनाना पड़ा कि अब कोई व्यक्ति किसी को बिना किसी आज्ञा से या सरकारी आज्ञा के या किसी यूनिवर्सिटी में रिसर्च करते समय या किसी हॉस्टिल में डॉक्टर के निरीक्षण में प्रयोग करते समय ही सम्मोहित कर सकता है। हर कोई हर किसी को सम्मोहित नहीं कर सकता है।
अब वह लड़का मर ही गया। फिर उन्होंने बहुत कहा कि अब जिन्दा हो जाओ, लेकिन वहाँ सुनने वाल कोई नहीं था, वह मर ही चुका था 1952 में घटी इस घटना ने दुनिया को चकित कर दिया। जब आपको कोई ज्योतिषी बता देता है कि आप फलां दिन मर जायेंगे तो मर सकते हैं। इसलिए नहीं कि ज्योतिषी सही कहता है, ऐसा नहीं है। लेकिन यह विचार मन में गहरे बैठ जाये तो मृत्यु घटित हो सकती है। सब तरह की बीमारियां पैदा की जा सकती हैं मन में विचार डाले के। और सब तरह की बीमारियों को प्रभावित किया जा सकता है ठीक होने के लिए, अगर मन में विचार डाल सकें।
एक आदमी के घर में आग लग गयी। वह दो साल से लकवे से बीमार पड़ा था। उठ नहीं सकता था, सन्निपात हो गया था। घर में आधी रात आग लगी तो सारे घर के लोग बाहर निकल गयें जब बाहर निकले तब उन्हें ख्याल आया कि घर के बूढ़े का क्या हुआ? क्योंकि उन्हें तो लकवा है, वे तो आ नहीं सकते। लेकिन तभी उन्हेंने देखा कि बूढ़ा अकेला नही अपनी छोटी-सी पेटी लिये बाहर चला आ रहा था। तब तो वे बड़े चकित हुए, क्योंकि वह आदमी तो उठ भी नहीं सकता था। जब वह बीच में आकर खड़ा हो गया तो उन सबने कहा आप और चलें! तब उस आदमी ने कहा। मैं और चल कैसे सकता हूँ! वह वापस वहीं गिर पड़ा! लकवा वापस लौट आया! क्या हुआ? इस आदमी को

लकवा नहीं है, इस आदमी को मानसिक लकवा हैं। इसके मन के छोर को लकवा पकड़ गया है, शरीर उसका अनुगमन कर रहा है।
इससे उल्टा भी हो सकता है कि किसी आदमी के शरीर को लकवा ने पकड़ा हो, उसका मन अगर इनकार कर दे तो शरीर को लकवा चलाना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए जो लोग संकल्पवान हैं, वे कैसी भी बीमारी से जूझ सकते हैं। और जो लोग संकल्पहीन हैं, वे कैसी भी बीमारी से परेशान हो सकते हैं।
योग का कहना है कि हमारे भीतर शरीर और मन ऐसी दो चीजें नहीं हैं। हमारे भीतर चेतन और अचेतन, ऐसी दो चीजें नहीं है। हमारे भीतर एक ही अस्तित्व है जिसके ये दो छोर हैं। और इसलिए किसी भी छोर से प्रभावित किया जा सकता है।
तिब्बत में एक प्रयोग है, जिसका नाम "हीट-योग" है, उष्णता का योग है।
तो तिब्बत में सैकड़ो फकीर हैं ऐसे, जो नंगे बर्फ पर बैठे रह सकते हैं और उनके शरीर से पसीना फूट आता है। इस सबकी वैज्ञानिक जांच और खोज कीक गयी है। इस सबकी डॉक्टरी जांच और खोज हो चुकी हे और चिकित्सक बड़ी मुश्किल में पड़ गये हैं कि यह क्या हो गया है। यह आदमी बर्फ पर बैठा है नंगा चारों तरफ बर्फ पड़ रही है, बर्फीली हवाएं बह रही हैं और उसके शरीर पर पसीना आता है! क्या हुआ है इसको?
यह आदमी योग के सूत्र का प्रयोग कर रहा है। इसने मन से मानने को इनकार
कर दिया है। कि बर्फ पड़ रही है। आंख बन्द करके यह कह रहा है कि बर्फ नहीं पड़ रही है। यह आंख बन्द करके कह रहा है, सूरज तपा है और धूप बरस रही है और यह आदमी आंख बन्द करके कह रहा है कि गरमी से तड़पा जा रहा हूँ। शरीर उसका अनुसरण कर रहा है।, वह पसीना छोड़ रहा है।
दक्षिण में एक योगी थे-ब्रह्ममयोगी। उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी, रंगून यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड, तीनों जगह कुछ प्रयोग करके दिखाया। वे किसी भी तरह का जहर पी लेते थे और आधे घण्टे के भीतर उस जहर को शरीर से बाहर पेशाब से निकाल देते थे। किसी भी तरह का कोई जहर उनके खून में मिश्रित नहीं हो पाता। सब तरह के एक्स-रे परीक्षण हुए और मुश्किल में पड़ गयी बात कि क्या मामला है? और वह आदमी इतना ही कहता था कि मैं सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि मन की कहता हूँ कि मैं स्वीकार नहीं करूंगा जहर बस, इतना मेरा अभ्यास है। लेकिन रंगून यूनिवर्सिटी में प्रयोग करने के बाद वे मर गये, जहर खून में पहुँच गया। आध घण्टे तक ही उनका संकल्प काम करता था। इसलिए आध घण्टे के पहले पेशाब से बाहर कर देना जरूरी थ। आधा घण्टे के बाद उनको भी शक होने लगता था कि कहीं जहर मिल ही न जाये। आध घण्टे तक वह अपने संकल्प को मजबूत रख पाते थे। आध घण्टे के बाद शक उनको भी पकड़ने लगता था कि कहीं जहर मिल न जाये। शक बड़ी अजीब चीज है। जो आदमी आध घण्टे तक जहर को अपने खून से दूर रखे, उसको भी पकड़ जाता है। कि कहीं पकड़ न जाये। वह रंगून यूनिवर्सिटी से, जहाँ ठहरे थे, वहाँ के लिए कार से निकले और कार बीच में खराब हो गयी और वह अपने स्थान पर तीस मिनट के बजाय पैंतालीस मिनट में पहुँच पाये, लेकिन बेहोश हालत में वह पन्द्रह मिनट उनकी मृत्यु का कारण बना।
सैकड़ों योगियों ने खून की गति पर नियन्त्रण घोषित किया है। कहीं से
भी कोई भी वेन काट दी जाये, खून उसकी आज्ञा से बहेगा या बन्द होगा। यह तो आप भी छोटा-मोटा प्रयेग करें तो बहुत अच्छा होगा। अपनी नाड़ी को गिन लें और गिनने के बाद पांच मिनट बैठ जायें और मन में सिर्फ इतना सोचते रहें कि मेरी नाड़ी की रफ्तार तेज हो रही है, तेज हो रही है और पांच मिनट बाद फिर नाड़ी को देखें तो आप पायेंगे रफ्तार तेज हो गयी। कभी लम्बा प्रयोग करें तो बन्द भी हो सकती हे। हृदय की धड़कन भी, अति सूक्ष्मतम हिस्से भी बन्द किये जा सके हैं, खून की गति भी बन्द की जा सकती है।
शरीर और मन ऐसी दो चीजें नहीं हैं-शरीर और मन एक ही चीज का विस्तार हैं। एक चीज के अलग-अलग हिस्से हैं। चेतन और अचेतन एक का ही विस्तार है। योग के सारे-के-सारे प्रयोग इस सूत्र पर खड़े हैं। इसलिए योग मानता है कि कहीं से भी शुरू किया जा सकता है। बीमारी भी, स्वास्थ्य भी, सौन्दर्य भी, शक्ति भी, उम्र भी-शरीर से भी प्रभावित होती है, मन से भी प्रभावित होती है।

बर्नाड शा ने लन्दन से कोई बीस मील दूर, एक गांव को चुना था अपनी कब्र बनाने को, और मरने से कुछ दिन पहले उस गांव में जाकर रहने लगा।
उसके मित्रों ने कहा कि कारण क्या है उस गांव को चुनने का? तो बर्नाड
शा ने कहा-उस गांव को चुनने का एक बहुत अजीब कारण है। उसे बताऊँ तो तुम हँसोगे। लेकिन फिर, कोई हर्ज नहीं, तुम हँसना मत, मैं कारण बताता हूँ। ऐसे ही एक दिन इस गांव में घूमने आया था। उस गांव के कब्रिस्तान तक घूमने गया था। वहाँ एक कब्र पर मैंने एक पत्थर लगा देखा, उसकी वजह से मैंने तय किया कि इस गांव में रहना चाहिए। उस पत्थर पर लिखा था- किसी आदमी की मौत का पत्थर था- लिखा था कि यह आदमी 1610 में पैदा हुआ और 1710 में बहुत कम उम्र में मर गया। तो बर्नाड शॉ ने कहा कि जिस गांव के लोग सौ वर्ष को कम उम्र मानते हैं, अगर ज्यादा जीना हो तो उसी गांव में रहना अच्छा है।
यह तो उसने मजाक में कहा, लेकिन बर्नाड शॉ काफी उम्र तक जिया। उस गांव
की वजह से जिया, यह तो कहना मुश्किल है, लेकिन उस पत्थर को बर्नाड शा ने चुना। यह जो उसके मन का चुनाव है, यह ज्यादा जीने की आकांक्षा का हिस्सा ही तो है। यह हिस्सा उसके ज्यादा जीने का कारण बन सकता है।
जिन मुल्कों में उम्र कम है, उन मुल्कों में सभी लोग कम उम्र की वजह से
मर जाते हैं, ऐसा सोचना जरूरी नहीं है। उन मुल्कों में कम उम्र होने की जवह से हमारी उम्र की अपेक्षाएं भी कम हो जाती हैं। हम जब बूढ़े होने लगते हैं, हम जल्दी मरने का विचार करने लगते हें। हम जल्दी तय करते हैं कि अब वक्त आ गया। जिन मुल्कों में उम्र की अपेक्षाएं ज्यादा हैं, उनमें जल्दी कोई तय नहीं करता, क्योंकि अभी वक्त आया नहीं। तो मरने का ख्याल अगर जल्दी प्रवेश कर जाये तो उसके परिणाम होने शुरू हो जायेंगे। यह मुल्क मरने को राजी हो गया है। अगर मन मरने को राजी न हो तो देर तक लम्बा जिया जा सकता है।
सारी बात इस पर निर्भर है कि हमारे व्यक्तित्व के दो हिस्से हैं- चेतना और अचेतना और जगत हिस्सा है। इस सारे चेतन और इस सारे अचेतन में कोई विरोध नहीं है। ये दोनें एक-दूसरे से सम्बन्धित है।
मैंने आपसे कहा कि नाड़ी पर हाथ रखें तो नाड़ी पर फर्क पड़ जायेगा। जब डॉक्टर भी आपकी नाड़ी जांचता है, तब भी फर्क पड़ जाता है। इसलिए कोई डॉक्टर कभी आपकी नाड़ी की ठीक जांच नहीं कर सकता, क्योंकि डॉक्टर के हाथ लगाने से आपके आब्जर्वेशन में, आपके निरीक्षण में, आपकी अपेक्षा में फर्क पड़ जाता है। फौरन फर्क पड़ता है। और अगर लेड़ी डॉक्टर हो तो फर्क और थोड़ा ज्यादा पड़ेगा। आपकी अपेक्षाएं और घबराती हैं। आपकी अपेक्षाएं, आपका मन, वहां तन्तुओं को हिला देगा। इसलिए समझदार डॉक्टर दो-चार कम करके साचेगा कि इतना होगा, कि है। क्योंकि दो-चार तो आपने अभी बढ़ा लिये होंगे जो नहीं रहे होंगे। लेकिन हमारी नाड़ी तो हमसे जुड़ी है, इसलिए प्रभावित हो जाती है। लेकिन मैं कह रहा हूँ, बाहर के जगत में अचेतन पदार्थ हमें दिखाई पड़ता है, वह भी हमारे चित्त से इतना ही जुड़ा हुआ है। जो माली अपने बगीचों में फूलों को प्रेम करता है, क्या आप सोच सकते हैं कि उसके फूल बड़े हो जाते हैं? आप कहेंगे, पागलपन की बात है। लेकिन अगर माली ही यह कहते तो हम पागलपन की बात मानते। आक्सफोर्ड यूनवर्सिटी में एक छोटी-सी लेबोरट्री है, "डी-ला-बार" लेबोरेट्री। उसमें फूलों पर भी बहुत- से प्रयोग हुए और घबराने वाले वे प्रयोग हैं। एक ईसाई फकीर ने यह कहा कि मैं जिस बीज को आशीर्वाद दे दूँ, उसमें बड़े फूल आयेंगे।
उस प्रयोगशाला में इस पर बहुत-से प्रयोग हुए। एक ही पैकेट के बीज एक गमले में डाले गये और दूसरे गमले में भी डाले गये। एक गमले को उस फकीर से आशीर्वाद दिलाया गया। फकीर ने उस गमले के सामने खड़े होकर परमात्मा से कहा कि इसके बीज बड़े हो, इसके फूल बड़े हों, इसके अंकुर जल्दी आये और दूसरे एक गमले को आशीर्वाद नहीं दिया गया। और वैज्ञानिकों ने पूरी कोशिश की कि दोनों गमलों को एक-सी सुविधा, एक-सा पानी, एक-सी धूप, एक-सा खाद, सब एक-सा मिले। लेकिन बड़ी मुशिकल हुई। आशीर्वाद दिये गमले पर फूल आये! आशीर्वाद दिये गये गमले पर ज्यादा फूल आये! आशीर्वाद दिये गमले के फल ज्यादा देर तक टिके। एकाध गमले पर होता तो समझते कि कोई चालबाजी होगी। फिर यह अनके गमलों

पर प्रयोग किया और हर बार यही हुआ। क्या कारण होगा। क्या मनुष्य का चित्त उन बीजों को भी प्रभावित करता है?
असल में चेतना और अचेतना के बीच कहीं भी दीवार नहीं हैं। और जो इस हृदय में प्रतिध्वनित होता है, वह जगत के सब कोनों तक पहुँचा जाता है। और जो जगत के किसी भी कोने में प्रतिध्वनित होता है, वह इस हृदय के कोने तक आ जाता है हम सब इकट्ठे हैं, संयुक्त हैं।
इसलिए योग का चौथा सूत्र फिर बाकी सूत्र पर मैं कल आपसे बात करूंगा। योग का चौथ सूत्र-कि जगत में कुछ भी असम्बन्धित नहीं हैं, एवरी थिंग इज रिलेटिव, दी वर्ल्ड एज ए फेमिली। यह जो जगत है, एक परिवार है। यहाँ सब जुड़ा है, यहाँ टूटा कुछ भी नहीं है। यहाँ पत्थर से आदमी जुड़ा है, जमीन से चाँद-तारे जुड़े हैं, चाँद-तारों से हमारे हृदय की धड़कनें जुड़ी हैं, हमारे विचार सागरों की लहरों से जुड़े हैं। पहाड़ों के ऊपर चमकने वाली बर्फ हमारे मन के भीतर चलने वाले सपने से जुड़ी है। यहाँ टूटा हुआ कुछ भी नहीं है, यहाँ सब संयुक्त है, यहाँ सब इकट्ठा है। यहाँ अलग-अलग होने का उपाय नहीं है, क्योंकि यहाँ बीच में गैप नहीं है, जहाँ से चीजे टूट जायें। टूटा होना सिर्फ हमारा भ्रम है।
इसलिए योग का चौथा सूत्र आपसे कहता हूँ ऊर्जा संयुक्त है, ऊर्जा एक परिवार है। न चेतन अचेतन से टूटा, न अस्तित्व अनस्तित्व से टूटा, न पदार्थ मन से टूटा है, न शरीर आत्मा से टूटा हैं, न परमात्मा पृथ्वी से टूटा है, न प्रकृति से टूटा है। टूटा होना शब्द ही झूठा है। सब जुड़ा है, सब इकट्ठा है। संयुक्त और इकट्ठा शब्दों से गलती मालूम पड़ती है, क्योंकि ये शब्द हम उनके लिए लाते हैं, जो टूटे हुए हैं। ये एक ही हैं, जैसे एक ही सागर में अनन्त लहरें हैं, हर लहर दूसरी लहर से जुड़ी है। आप इस किनारे पर बैठे हैं, वहाँ भी लहर आकर टकराती हैं वह लहर अन्तहीन किनारों से जुड़ी है, जो आपको दिखाई भी नहीं पड़ती।
यहाँ सब जुड़ा है। यहाँ से, पृथ्वी से दस करोड़ मील दूरी पर सूरज है। सूरज ठण्डा होता है, हम सब ठण्डे होते हैं। हम यह न कह सकेंगे, दस करोड़ मील जो सूरज है, उससे हमारा क्या लेना-देना है? हो जाये ठण्डा हम अपने घर की दीया जला न सकेंगे, हम कह न सकेंगे, नहीं। हम और आप ठण्डे हो जायेंगे, क्योंकि सारी जीवन-ऊर्जा उस सूरज से आपको मिल रही है।
लेकिन वह सूरज भी दूसरे सूरजों से जुड़ा है, महासूर्यों से जुड़ा है। वैज्ञानिक कहते हैं कि अब तक उन्होंने जो गणना की, वह करीब दस करोड़ सूरजों की है। और वे सब सुंयक्त हैं। और यह गणना कभी पूरी न होगी। यह गणना पूरी कभी न होगी, क्योंकि इससे आगे और, और आगे विस्तार है। वह अन्तहीन है। इस अननत विस्तार में सब संयुक्त हैं। यहाँ एक फूल खिला है, वह भी हमसे जुड़ा है। और सड़क के किनारे कंकड़ पड़ा है तो वह भी हमसे जुड़ा है। और सब सुंयक्त को स्वर समझेंगे तो मैंने कहा आपकी नाड़ी तो प्रभावित होगी ही, जो चीजं आपके बिल्कुल ख्याल में नहीं होती हैं। वे भी प्रकाशित हो सकती हैं।
एक छोटी-सी सुई पर एक प्रयोग करें। एक छोटे-से बर्तन में पानी भरे, एक छोटे-से गिलास में पानी भरे। पानी पर कोई भी चिकनी चीज फैला दें घी फैला दें, थोड़ा-सा घी डाल दें, थोड़ा-सा तेल फैला दें और एक छोटी-सी आलपिन को उस तेलपर तैरा दें। फिर उस गिलास के ऊपर दो मिनट आंख गड़ा के बैठ जायें, दो मिनट तक आंखें न झपकें। और फिर उस पिन को कहें कि बायें घूम जाओ, आप हैरान होंगे क सुई बायें घूमती है! उसके कहें दायें घूम जाओ, आप हैरान होंगे कि सुई दायें घूमती है। और आप कहें कि रुक जाओ तो वह रुकती है और आपके इशारे पर चलती है।
सुई इसलिए कहा कि आपके पास संकल्प बहुत छोटा है, अन्यथा पहाड़ भी घुमाये जा सकते हैं। सुई इसीलिए है। लेकिन सुई घूमती है तो पहाड़ के घूमने में कोई बाधा नहीं है, क्यांकि सुई और पहाड़ में फर्क क्या है? क्वाण्टिटी का फर्क होता है, लेकिन सिद्धान्त का कोई फर्क नहीं पड़ता है।
योग कहता है, हम सब जुड़े है। योग कहता है, जब एक आदमी बुरा विचार करता
है तो आस पास के लोग तत्काल बुरे होने शुरू हो जाते हैं। उस विचार को प्रगट करने की जरूरत नहीं है। जब एक आदमी अच्छा विचार करता है, तब आसपास अच्छे

विचार की कुछ तरंगे फैलनी शुरू होती हैं। अच्छे विचार को प्रगट करने की जरूरत नहीं है। अचानक किसी आदमी के सामने जाकर आपको लगता है कि शान्ति आ गयी। अचानक किसी आदमी के सामने जाकर लगता है कि अशान्ति फैल रही हैं
किसी रास्ते से गुजरते हैं तो लगता है कि जैसे मन हलका हो गया है। किसी रास्ते से गुजरते हैं तो लगता है जैसे मन भारी हो गया। किसी घर में बैठते हैं और लगता है कि भय पकड़ लेता है। किसी घर में बैठते हैं तो लगता है कि हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। ये सब चारों तरफ से आ रही तरंगों के परिणाम हैं। ये चारो तरफ से घेर रही है। तरगें, आपको छू गयी हैं। ऐसा नहीं है कि ये ही आपको छू रही हैं, आप भी छू रहे हैं। आप भी इन तरंगों को छू रहे हैं। यह पूरे वक्त चल रहा हैं।
इस समस्त विस्तार के बीच, हम भी ऊर्जा के एक पुंर्जे हैं। और चारो तरफ डायनामिक सेण्टर से, ऊर्जा से सब काम में लगे हैं। यह सारे जगत की नियति हम सबकी इकट्ठी नियति है। योग के इस चौथे सूत्र का अर्थ है कि अपने को अलग देखना पागलपन है। अपने को अलग मानना नासमझी है। अपने को अलग समझकर जीना अपने हाथ से अपने सिर पर बोझढोना है।
एक छोटी-सी कहानी और अपनी बात मैं पूरी करूं। फिर अगले सूत्र कल आपसे कहूंगा।
मैंने सुना है एक योगी एक ट्रेन में सवार हुआ, एक फकीर थर्ड क्लास के डिब्बे में जाकर बैठा। अपनी पेटी सिर पर रख ली। पेटी के ऊपर अपना बिस्तर रख लिया। बिस्तर पर अपना छाता रखा। और जब पास-पड़ोस के लोगों ने कहा यह क्या कर रहे हो, नीचे रख दो सामान, आराम से बैठो तो उस योगी ने कहा मैं सोचता हूँ, टिकिट तो सिर्फ मैंने अपने लिए लिया है, इसलिए ट्रेन पर ज्यादा वजन डालना अनैतिक होगा। इसलिए मैं वजन सिर पर रखता हूँ। उन लोगों ने कहा पागल हो गये हैं, अपने सिर पर रखियें तो भी ट्रेन पर तो वजन पड़ेगा ही। इसलिए नाहक अपने सिर को और वजन क्यों दे रहे हैं? नीचे रखिये और आप आराम से बैठिये। ट्रेन तो वजन ढोयेगी ही चाहे सिर पर रखिये और चाहे नीचे रखिये। उस फकीर ने कहा मैं तो समझता था अज्ञानी होंगे ट्रेन में, यहाँ ज्ञानी हैं। पर उन लोगों ने कहा हम समझे नहीं। तो उस फकीर ने कहा जिन्दगी में मैंने सभी लोगों को अपने सिर पर वजन रखे देखा, जो वजन परमात्मा पर छोड़ा जा सकता था। मैंने हर आदमी को सारी चिन्ताओं का बोझ अपने सिर पर लिये हुए चलते देखा। पहाड़-के- पहाड़, जो चाँद-तारों पर छोड़े जा सकते हैं, जिन्हें कि हवाएं उठा लेतीं, लेकिन हर आदमी को मैंने इतनी उदासी और परेशानी से भरा देखा, जिसे हवा के झोंके उठा लेते, चाँद-तारे उठा लेते, सारा जगत उठा लेता। लेकिन हर आदमी अपना बोझ लिए चल रहा है। मैंने सोचा कि इस डिब्बे में कहीं आप लोग नाराज न हों तो मैंने सामान ऊपर रखा। लेकिन आप तो ज्ञानी हैं! और उन्होंने कहा इस डिब्बे में ही हम ज्ञानी हैं और हम सब अपनी जिन्दगी की गाड़ी पर सवार हैं। वहाँ तो हम अपना बोझ अपने सिर पर ही रखते हैं। अपने सिर पर रखना ही पड़ेगा, क्योंकि हमारे अतिरिक्त हम और किसके सिर पर रखेंगे?
योग कहता है कि किसी कि सिर पर बोझ नहीं रखना है। बोझ किसी के सिर पर
है ही नहीं। सिर्फ उन्हीं के सिर बोझिल हो जाते हैं। जो इस सत्य को नहीं जान पाते कि जीवन संयुक्त है, जीवन इकट्ठा है। श्वास हवाओं पर निर्भर है। प्राण की गरमी तारों पर, सूर्य पर निर्भर है। जीवन का होना सृष्टि के क्रम पर निर्भर है। मृत्यु का होना जन्म का दूसरा पहलू है। यह सारा कार्य क्रमित सम्पन हो रहा है। हम इस सबको सिर पर उठाकर रख लेते हैं। योग कहता है, अगर हम इसको देख पायें कि हम एक बड़े जहाज के बीच एक छोटे-से पक्षी से ज्यादा नहीं है----
एक नदी में दो तिनके बहे जाते थे। तेज थी धार नदी की और एक तिनका नदी
की धार से लड़ने की कोशिश कर रहा था। उसने नदी की धार में अपने को आड़ा डाल रखा था। नदी में बांध बांधने की कोशिश कर रहा था कि रोक दूंगा नदी को। कुछ फर्क नहीं पड़ता था। बहा जा रहा था। तिनका ही था। नदी को खबर नहीं थी। कि किसी तिनके को बांध बांधने का ख्याल आ गया है। नदी को यह भी पता न था कि कोई तिनका लड़ रहा है। कहाँ होता है पता नदी को? नदी भागी जा रही थी सागर की तरफ। वह तिनका बहा जा रहा है, लड़ा जा रहा है। उसके साथ एक दूसरा तिनका हैं

उसने नदी में अपने को सीधा छोड़ रखा है और वह सोच रहा है कि नदी को सहयोग दूँ। और सोचता था कि नदी मेरे सहारे कितनी तेजी से बही जा रही है। इससे कोई फर्क न पड़ता था, नदी को कोई सहारा न मिलता था। नदी को उन दोनों तिनको से कोई फर्क न पड़ता था जो नदी को रोकता था उससे, जो लड़ता था उससे जो नदी को सहयोग देता था, नदी को बहाता था उससे।
लेकिन तिनकों को फर्क पड़ता था। जो लड़ रहा था वह व्यर्थ ही मरा जा रहा था, जो बहे जा रहा था, वह आनन्द की धारा पर नाच रहा था। दोनों बहे जा रहे हैं एक लड़ता हुआ मरता हुआ, परेशान, एक आनन्द से पुलकित। लेकिन योग कहता है कि दोनों तिनके ही मत बनो, क्योंकि दोनों का भ्रम एक हिस्से से जुड़ा है। तुम समझों कि नदी बह नही रही हैं, न तुम्हें बहाना है, नदी बह रही है, न तुम्हें रोकना है। और तुम नदी के हिस्से बन जाओ। तिनके भी मत रहो, लहर बन जाओ, और तब निर्भर हो जाओगे, वेटलेस हो जाओगे। तब कोई भार नहीं रह जायेगा सारा जगत एक परिवार है ऊर्जा का। उसमें हम एक लहर से ज्यादा नहीं हैं। सब जुड़ा है। इसलिए जो यहाँ होता है वह सब जगह फैल जाता है और जो सब जगह होता है वह यहाँ सिकुड़ आता है।
इस जगत में जो हो रहा है, उसमें हम सब साझीदार हैं। संन्यस्त, राजीतिक इसमें कोई अलग-अलग नहीं है। अगर कहीं कोई चोर है। तो मैं जिम्मेवार हूँ। जरूर मेरी बुराईयों ने उसे चोर बनाने में सहयोग दिया होगा। और कहीं अगर कोई हत्यारा है तो मैं जिम्मेदार हूँ। अगर कहीं कोई साधु है तो मैं जिम्मेवार हूँ। इसका मतलब यह हुआ कि जिम्मेवारी की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि कहीं भी हो रहा है, उसमें मैं भागीदार हूँ। और तब कोई दोष नहीं हैं, तब हम अकेले नही हैं।
पश्चिम में एक नया शब्द है "एलीनेटेड" अकेलापन, अजनबीपन। हर आदमी को
लग रहा है कि मैं अकेला हूँ, कोई साथी नहीं। कभी पत्नियों को भ्रम होता था कि पति साथी है। कभी पत्नियां भ्रम पालती थीं कि पति साथी है, अब सब भ्रम टूटे जा रहे हैं। पत्नी को पक्का नहीं है कि पति साथी है, पति को पक्का नहीं है कि पत्नी साथी है। जब पति प्रेम कर रहा है, तब भी पक्का नहीं है। कि मन में डायवोर्स का फार्म भर रहा हो। पक्का नहीं है। बेटे को पक्का नहीं है बाप? बाप को पक्का नहीं है कि बेटे बहुत दिन साथ देंगे। कुछ पक्का नहीं है। सब अनिश्चित है। और एक-एक आदमी अकेला हो गया है, एक-एक आदमी चला जा रहा है। पहाड़ों पर और एक-एक आदमी पागल हुआ जा रहा है। यहाँ भी वही हुआ जा रहा है।
योग कहता है, नासमझी है। तुम अकेले हो, तुम्हारी नासमझी हैं एक-एक व्यक्ति इकट्ठा है। जिस दिन कोई आदमी ऐसा समझ लेता हैं कि मैं सबके साथ इकट्ठा हूँ, उसी दिन उसकी चिन्ता के सारे बोझे तिरोहित हो जाते हैं। उसी दिन वह मुक्त हो जाता है भीतर। सब बन्धन गिर जाते हैं।
यह चौथा सूत्र है।

ऐसे कुछ और सूत्रों की मैं आपसे और बात करूंगा। इस सम्बन्ध में जो भी प्रश्न हों, वह कल आप लिखकर दे देंगे, जिनकी चर्चा कल की चर्चा के साथ करूंगा। ध्यान के सम्बन्ध में एक सवाल किसी ने पूछा है, ध्यान की बैठक में मैं उसकी बात करूंगा।
एक और बात आपसे फिर कह दूँ ध्यान की। एक चित्त है, वह आप देखें। जो मित्र सुबह ध्यान में आना चाहें और मैं चाहूंगा कि सभी आयें, क्योंकि जिन योग के सूत्रों की मैं बात कर रहा हूँ, वे सिर्फ बुद्धि से समझने लायक नहीं हैं, उन पर प्रयोग भी करना है, एक्सपेरिमेण्ट भी करना है। तो सुबह आना जरूरी होगा। सांक्ष मैं आपसे बात करूंगा। और सुबह उसी बात के लिए हम प्रयोग करेंगे तो सांझा आप समझ लें और सुबह आप कर लें तो आपको समझ पूरी आ जायेगी। अन्यथा अकेली समझ आधी समझ हो जाती है और आधी समझा नासमझी से बुरी होती है।
मेरी बातों को इतने प्रेम से सुना, उससे अनुगृही हूँ। अन्त में आप सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूँ, मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

चेतना का सूर्य
तीसरा प्रवचन

घर एक मन्दिर

योग के सम्बन्ध में चार सूत्रों की बात मैंने की। आज पांचवें सूत्र
पर आपसे बात करना चाहूंगा। योग का पांचवा सूत्र है, जो अणु में है, वह विराट में भी है। जो क्षुद्र में है, वह विराट में भी है। जो सूक्ष्म-से- सूक्ष्म में है, वह बड़े-से-बड़े में भी है, जो बूंदों में है, वही सागर में भी है। इस सूत्र की सदा से योग ने घोषण की थी, लेकिन विज्ञान ने अभी-अभी इसका समर्थन किया है। सोचा भी नहीं था कि अणु के भीतर इतनी ऊर्जा, इतनी शक्ति होगी। अत्यंश के भीतर इतना छिपा होगा, न-कुछ के भीतर-कि सब-कुछ का विस्फोट हो सकेगा।
अणु के विभाजन ने योग की इस अन्तर्दुष्टि को वैज्ञानिक सिद्ध कर दिय है। परमाणु तो दिखाई भी नहीं पड़ता आंख से, लेकन दिखाई पड़ने वाले परमाणु में, अदृश्य में विराट शक्ति का संग्रह है। वह विस्फोट हो सकता है। व्यक्ति के भीतर आत्मा का अणु तो दिखाई नहीं पड़ता है, लेकिन उसमें विराट ऊर्जा छिपी है और परमात्मा का विस्फोट हो सकता है। योग की घोषणा की क्षृद्रतम में विराट्तम मौजूद हैं, कण-कण में परमात्मा मौजूद है, यही अर्थ रखती है। योग ने क्यों जोर दिया होगा इस सूत्र पर?
एक तो इसीलिए कि वह सत्य है और दूसरा इसलिए कि एक बार यह स्मरण आ जाये
कि अणु में परम छिपा है तो व्यक्ति को अपनी आत्मशक्ति का स्मरण करने का मार्ग बन जाता है। व्यक्ति को क्षुद्र अनुभव करने का कोई भी कारण नहीं हैं क्षुद्रतम को भी क्षुद्र अनुभव करने का कोई कारण नहीं है। इसमें उलटी बात भी ख्याल में ले लेनी जरूरी है। कि विराट्तम को भी अहंकार से भर जाने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि जो उसके पास है, वह क्षुद्रतम के पास भी है। सागर के पास है, वह एक छोटी-सी बूंद के पास भी है। क्षुद्रतम को हीन होने का कोई कारण नहीं है, विराट्तम को अहंकार से भर जाने का कोई कारण नहीं है। न हीनता का कोई अर्थ है।, न श्रेष्ठता को कोई अर्थ है। ये दोनों ही व्यर्थ हैं, इस सूत्र से ऐसा निष्पक्ष होता है।
आदमी दो ही बातों के चक्कर में जीवन को नष्ट करता है। या तो वह "हीनता
के बोध" से पीड़ित होता है।, "इनफीरिआरिटी" के बोध से पीड़ित होता है। अभी तो एडलर ने "इनफीरिआरिटी कॉम्पलेक्स" सभी की जबानों पर पहुँचा दिया है। हीन ग्रन्थि। या तो व्यक्ति हीनग्रन्थि से पीड़ित होता है और निरन्तर अनुभव करता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ, न कुछ हूँ। जैसा क उमर खैयाम की प्रसिद्ध पंक्ति को आपने सुना होगा-डस्ट इन टू डस्ट- "मिट्टी में मिट्टी लौट जाती है" और कुछ भी नहीं हे।
हीनता अगर व्यक्ति को पकड़ ले तो बहुत गहरे और बहुत भीतर से रुग्णता, डिसीज पकड़ लेती है। कोई अगर ऐसे जीने लगे कि जैसे कुछ भी नहीं है तो जीना ही मुश्किल हो जाता है, वह जीते-जी मर जाता है। बहुत कम ही लोग हैं, जो मरने तक जिन्दा रहते हों, अधिक लोग पहले ही मर जाते हैं। अक्सर तो ऐसा होता है कि सत्तर साल में दफनाये जाते हैं, मरना तो बहुत पहले हो गया होता है। मरने और दफनाने के समय में तीस-तीस, चालीस-चालीस, पचास-पचास साल का फासला होता है। जिस दिन लगता है, हीनता पकड़ लेती है भीतर। और अगर इस चारों तरफ फैले हुए विराट को देखेंगे तो हीनता पकड़ ही लेगी। क्या है स्थिति मनुष्य की? कुछ भी नहीं है।
सागर की लहरों पर एक तिनका मालूम होता है। न कोई दिशा है, न कोई शक्ति है। अगर ऐसी हीनता मन को पकड़ ले तो जीते-जी जीवन उदास और मृत हो जाता है, राख हो जाता है। अंगार बुझ़ा-बुझा हो जाता है। और अगर भीतर अपना ही जीवन बुझ जाये, बुझा-बुझ़ा हो जाये, अपने ही दीये की ज्योति बुझ जाये तो फिर सूर्य के प्रकाश का भी क्या करियेगा? होगा प्रकाश, लेकिन इससे कोई अर्थ नहीं रह जाता।
व्यक्ति के भीतर विराट है, इसका स्मरण जरूरी है। व्यक्ति के भीतर अनन्त है, इसका स्मरण जरूरी है, व्यक्ति के भीतर परमात्मा है, इसका स्मरण

जरूरी है, ताकि व्यक्ति हीन न हो जाये। और मजे की बात है कि हीनता को मिटाने के लिए व्यक्ति श्रेष्ठता की कल्पनाओं में पड़ जाता है- सुपीरिआरिटी कॉम्पलेक्स। वह जो हीनता की भावना है, उसे दबाने के उपाय में लग जाता है। लगती है भीतर हीनता तो आदमी धन कमाने लगता है ताकि धन कमाकर दुनिया को बता दे और खुद भी समझ ले कि नहीं, कुछ भी नहीं, बहुत कुछ ताकि सिंहसान पर खड़े होकर घोषणा कर दे कि कौन कहता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ- मैं कुछ हूँ। हीनता ही श्रेष्ठता की दौड़ बन जाती है। इसलिए जितने लोग श्रेष्ठ होने की पागल दोड़ में होते हें, भीतर हीनता की ग्रन्थि से पीड़ित होते हैं।
एडलर ने तो बहुत अद्भुत बातें कहीं हैं। उसकी बातें अर्थपूर्ण हैं। उसने कहा है कि अक्सर जो लोग दौड़ में प्रथम आते हैं, वे वे ही होते हैं, जो बचपन में लंगड़ाते हैं। और जो लोग संगीत में बहुत कुशल हो जाते हैं, वे वे ही होते हैं, जो बचपन में जरा कम सुनते हैं। ओर जो लोग राष्ट्रपति बन जाते हैं ओर प्रधानमन्त्री हो जाते हैं, वे अक्सर वे ही लोग हैं, जिनको स्कूल की बेंचों पर पीछे बैठना पड़ता था। वह जो चोट लगती है हीनता की, वह सिद्ध करने निकल पड़ते हैं दुनिया में कि हम कुछ हैं दिख देंगे कि हम कुछ हैं। इसलिए राजनीतिज्ञ अगर हीनता से पीड़ित होता है तो आश्चर्य नहीं। भीतर एक कीड़ा लगा हुआ है कि वह कुछ भी नहीं है। और वह मन को दुखाती है, तकलीफ में डाल देता है। दौड़ाता है।
लेकिन अगर कुर्सी पर बैठता था तो उसके पैर जमीन तक नहीं पहुँचते थे। उसके ऊपर के शरीर का हिस्सा बड़ा था और पैर छोटे थे। वह कुर्सी पर बैठे तो साधारणतः पैर जमीन नहीं छू पाते थे। हिटलर अत्यन्त साधारण बुद्धि का व्यक्ति था और सेना में साधारण हैसियत का सिपाही था। और वहाँ से भी अनफिट होकर, अयोग्य होकर निकाला गया था। स्टैलिन एक चमार का लड़का था और लिंकन भी एक चमार का लड़का था।
अगर हम दुनिया के राजनीतिज्ञों के पीछे झाकें तो बहुत हैरानी होगी इन्हें कहीं-न-कहीं बचपन में लगी हीनता की चोट, इनकी दौड़ बन गयी है। ये विक्षिप्त होकर दौड़ पड़ें हैं। और जब तक ये किसी पहाड़ पर न चढ़ गयें तब तक उन्होंने तृप्ति न पायी। पहाड़ पर चढ़कर तो इन्होंने दुनिया को दिखा दिया कि मैं कुछ हूँ, लेकिन निश्चित स्वयं वे कुछ भी न थे। इसलिए सभी पद, सभी धन, सभी यश, पाने वाले अन्ततः व्यर्थ मालूम पड़ते हैं। जब वह सिंहासनों पर खड़ा हो जाता है तब वह पाता है कि खड़ा तो मैं ही हूँ सिंहासन भला मिल गया, लेकिन मैं तो मैं ही हूँ। और वह हीनता का घुन खाये जाता है। इसलिए बड़े-से-बड़ा पद कोई तृप्ति नही लाता। बड़े-से-बड़े पद के आगे भी दौड़ बनी रहती है।
और जब किसी ने सिकन्दर से कहा था कि मैंने सुना है तुम सारी दुनिया जीत लोगे, लेकिन कभी यह भी सोचा है कि दुनिया जीत लेने के बाद फिर क्या करोगे? क्योंकि एक ही दुनिया है। तब सुना है मैंने, सिकन्दर बहुत उदास हो गया और उसने कहा था वह तो मैंने सोचा ही नहीं। ठीक कहते हैं अगर पूरी दुनिया जीत लूंगा तो फिर क्या करूंगा? दूसरी दुनिया कहाँ है? क्योंकि पूरी दुनिया जीतने के बाद भी सिकन्दर के मन में जो हीनता पकड़ी होगी, उससे तो छुटकारा नहीं है। दूसरी दुनिया जीत के भी छुटकारा नहीं है। हीनता की ग्रन्थि ही परवर्टेड होकर या इनवर्टेड होकर, शीर्षासन करके श्रेष्ठता की ग्रन्थि बन जाती है।
इसलिए जो आदमी सड़क पर अकड़ा हुआ दिखाई पड़े, उस पर दया करना, वह हीनता से पीड़ित है। किसी को जरा धक्का लग जाये तो वह कहता है, जानते नहीं मैं कौन हूँ? वह बेचारा हीनता से पीड़ित है।
जो आदमी जरा-जरा सी बातों में क्रोधित हो रहा है, जो जरा-जरा-सी बातों में अहंकार को चोट मान लेता है-रास्ते पर कोई हंसता हो तो जो समझता है कि उसे ही देखकर लोग हंस रहे हैं जानता है कि वह हीनता की गन्थि से पीड़ित है। यह पीड़ा उसे श्रेष्ठ होन की पागल दौड़ में डाल देती है।
हीनता रोग है। श्रेष्ठता रोग को दबाने के लिए महारोग है। और कई बार दवाएं बीमारियों से भी ज्यादा खतरनाक सिद्ध होती हैं। दबायी गयी बीमारियां और भी खतरनाक सिद्ध हो जाती हैं। तो योग दूसरी बात भी स्मरण

दिलाना चाहता है। वह यह कहता है कि परमात्मा भी अगर कहीं है। तो वह भी इस अहंकार में भर जाये कि मैं कुछ हूँ, क्योंकि जो उसके पास है, वह मिट्टी के कण के पास भी है। इसलिए एक दिशा से मिट्टी के कण को भी हीनता न पकड़े और दूसरी दिशा से परमात्मा को भी श्रेष्ठता न पकड़ जाये। और तब कोई हीनता और श्रेष्ठता दोनों से मुक्त होता है, तभी समत्व को उपलब्ध होता है। योग की यह घोषण मनुष्य के गहरे मानस रोग को मुक्त करने की चेष्टा है। लेकिन यह सिर्फ मानस रोग को ही दूर करने की चेष्टा नहीं है, सत्य भी यही है। न तो क्षुद्र को रोने का कारण है, न विराट को अकड़ जाने का कोई कारण है। यहाँ जो बहुत बड़ा दिखाई पड़ता है और जो बहुत छोटा दिखाई पड़ता है, उन सबके पास एक-सी ही सम्पदा हैं
जीसस एक छोटी-सी कहानी कहते हैं। एक दिन बहुत बड़े अमीर ने अपने बगीचे में कुछ मजदूर लगाये। फिर दोपहर कुछ और मजदूर अमीर के पास गये और उन्होंने कहा कि हमें भी काम दो। उसने उन्हें भी बगीचे में लगा दिया। फिर दोपहर ढलने लगी, तब कुछ मजदूर आये और उन्होंने कहा कि हमें भी काम दो। उस अमीर ने उन्हें भी काम पर लगा दिया। फिर सांझ पर सूरज ढलता था और दिन अस्त होत था, तब भी कुछ मजदूर आये। और उस अमीर ने उन्हें भी काम पर लगा दिया। फिर दिन ढल गया और सबको दिन भर का मेहनताना बांटा गया। उसने सबको बराबर मेहनताना दे दिया। जो सुबह से आये थे, वे नाराजगी में खड़े हो गये। उन्होंने कहा यह अन्याय है, हम सुबह से मजदूरी कर रहे हैं। कुछ लोग दोपहर के बाद आये और कुछ तो अभी आये ही हैं, जब हम काम ही खत्म कर चुके थे।
इन सबको बराबर मजदूरी देना अन्याय है। तो उस अमीर ने कहा तुम्हें जो दिया, वह तुम्हारे काम से कम तो नहीं है? उन्होंने कहा नहीं, हमारे काम के लिए तो बहुत है। लेकिन इन्हें जो बहुत पीछे आये हैं? उस अमीर ने कहा परमात्मा के राज्य में न कोई आगे है, न कोई पीछे हैं, सब बराबर हैं।
योग यही कह रहा हैं वह यह कह रहा है कि मिट्टी के कण को कोई दुखी होने
का कारण नहीं है और खुद परमात्मा को भी अहंकार से भरने का कोई कारण नहीं है। इस जीवन के खेल में न कोई आगे हैं, न कोई पीछे हैं, न कोई बड़ा है, न कोई छोटा है। योग क्षुद्र को दिखाता है। बूंद में सागर को दिखाता है, सागर में बूंद को दिखाता हैं सत्य भी यही है, मैंने कहा। चूकि विज्ञान अब बहुत अद्भुत बातें कह रहा है----
रदर फोर्ड ने जब सबसे पहले अणु के परिवार को तोड़ा तो एक बहुत अद्भुत अनुभव प्रकाश में आया और वह यह था कि सबसे कम मात्रा वाला परमाणु भी ठीक ऐसे ही है, जैसे महासूर्या का सौर-जगत्। एक परमाणु में, सबसे छोटे परमाणु में, एक तो केन्द्र हाता है और उस केन्द्र के आसपास चक्कर लगाने वाला इलेक्ट्रॉन उस केन्द्र का चक्कर लगाता हैं इस चक्कर की गति ठीक वैसे ही है जैसे सूरज के आसपास पृथ्वी और मंगल और बृहस्पति ग्रह चक्कर लगाते हैं। इस छोटे-से परमाणु की गति वही है। और उस केन्द्र पर जो ऊर्जा छिपी है, वह वैसी ही ऊर्जा है, जैसी सूर्य की ऊर्जा है। जैसे एक बहुत छोटे रूप में सौर परिवार इस परमाणु के भीतर बैठा है। फर्क सिर्फ मात्रा का है, गुण का कोई भी फर्क नहीं हैं।
तो विज्ञान ने कहना श्ुरू किया, जो योग का पुराना सूत्र है, हम सबको याद होगा कि अण्ड में ब्रह्माण्ड है। तो वैज्ञानिक रदरफोर्ड या उसक साथी कहते हैं, "द मैक्रोकाज्म इज द माइक्रोकाज्म।" वह जो विराट जगत है, वह बिल्कुल क्षुद्र माइक्रोकाज्म में मौजूद हैं वह जो कॉसमॉस, वही ब्रह्ममाण्ड है, वह छोटे छोटे अण्ड में इतना छोटा है कि उसे देखना भी सम्भव नहीं है। अनुमान ही किया जाता है कि वह है। सिर्फ अनुमान से ही जाना है। कि वह घूमता है। इतने छोटे से वह जो इतना विराट दिखाई पड़ रहा है, वह सब बहुत छोटी तस्वीर की तरह वहाँ मौजूद है। छोटा प्रिण्ट है।
यह ऐसा ही समझें, फर्क जो है वह मात्रा का है। यह ऐसा है कि जैसे हम कहें, दो और दो के बीच जो फर्क है, बीस और चालीस के बीच भी वही फर्क है। दो सौ और चार सौ के बीच भी वही फर्क है। दो करोड़ और चार करोड़ के बीच में भी वहीं फर्क है। दो और चार के बीच जो फर्क है, जो अनुपात है, दो करोड़ और चार करोड़ के बीच भी वहीं अनुपात है। दी सेम प्रपोर्शन। सिर्फ विस्तृत हो गयी

है संख्या, लेकिन दोनों के बीच अनुपात एक ही है। ठीक ऐसे क्षुद्रतम को अनुपात वही है, जो विराट्तम का अनुपात है।
इस सत्य को समझकर दो बातें स्मरण कर लेनी चाहिए। हीनता पागलपन है, श्रेष्ठता महापागलपन है। इसे समझकर ठीक से समझ लेना चाहिए। अपने को न-कुछ समझना भी पागलपन है, अपने को बहुत-कुछ समझना भी पागलपन है।
योग कहता है, तुम जो हो, वहाँ हीन और श्रेष्ठ होने का, दोनों का ही कोई उपाय नहीं है। बस तुम, हो, इतना ही जानो, इतना ही काफी है। इसका दूसरा अर्थ यह है कि अपने को तोलों ही मत, डोण्ट कम्पेयर। उसका कुछ अर्थ ही नहीं है। तुलना ही मत करो। तुलना का कोई अर्थ ही नहीं है। दो और चार, अगर बीस और चालीस से तुलना में कोई फर्क नहीं पड़ता। तुलना में कोई अन्तर नहीं है, दोनों बराबर हैं। अनुपात बराबर है, प्रपोर्शन बराबर है, इसलिए तुलना व्यर्थ है।
इसलिए येग कहता है, बूंद की सागर से तुलना मत करो, क्योंकि बूंद छोटा सागर ही है। और सागर को भी अकड़ने का मौका मत दो, क्यांकि सागर फैली हुई बूंद ही है। सिर्फ फैलाव का फर्क है। अभी वैज्ञानिकों को ख्याल है कि जल्दी ही, शायद इस सदी के पूरे होते-होते हम चीजों के फैलाव को कम ज्यादा कर सकेंगे।
इक्कीसवीं सदी की कहानी मैंने सुनी है कि एक आदमी एक स्टेशन पर उतरता है। उसके पास कोई सामान दिखाई नहीं पड़ता है। सिर्फ एक मचिस की डिब्बी भर उसके बेंच के पास रखी है। और नीचे उतरकर वह जोर से चिल्लाने लगा, दस-बीस कुली हों तो आ जायें।
तो पास-पड़ोस के यात्रियों ने कहा कि सामान तो आपके पास कुछ दिखाई नहीं पड़ता है, दस-बीस कुलियों का क्या करियेगा? तो उस आदमी ने कहा कि सामान मेरा उस माचिस की डिब्बी में रखा है। उन्होंने कहा लेकिन बीस-पच्चीस कुली उठायेंगे, आप नहीं उठायेंग? लेकिन उस आदमी ने डिब्बी खोलकर दिखाई तो उसमें एक कार एक डिब्बी के भीतर रखी है। पर उन्होंने कहा यह बच्चों के खेलने की कार होगी, उठा लें। उस आदमी ने कहा यह बच्चों के खेलने की कार नहीं है, सिर्फ कार को कन्डेन्स किया गया है, ताकि छोटी जगह में यात्रा करवायी जा सके। इसको जाकर हम फिर फुला लेंगे। जैसे कि गुब्बारे को हम खोलकर रख लेते हैं तो सिकुड़ जाता है, भीतर हवा भर देते हैं तो फैल जाता है।
अब वैज्ञानिक कहते हैं कि लोहे को और सिकोड़ा जा सकता है। जैसे कि गुब्बारों को सिकोड़ते हैं, ऐसे लोहे को भी सिकोड़ा जा सकता है, फैलाया जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक चीज परमाणुओं का जोड़ है और परमाणुओं के बीच में बहुत स्पेस है, उस स्पेस को छोटा-बड़ा किया जा सकता है। तो यह हो सकता है कि पूरी रेलगाड़ी एक छोट-सी माचिस की डिब्बी में लायी जा सके और फिर वापस फैला कर बड़ी की जा सके। जिस दिन यह हो जायेगा, प्रयोग तो हो गया है, बड़े पैमाने पर उपयोग में आयेगा वक्त पर। जिस दिन यह हो जायेगा, इस दिन बूंद की सागर से तुलना करने में क्या अर्थ रहेगा? सागर सिकोड़कर बूंद बनाया जा सकता है। और बूंद को फैलाकर सागर बनाया जा सकता है। व्यक्ति को फैलाकर परमात्मा बनाया जा सकता है, परमात्मा को सिकोड़कर व्यक्ति बनाया जा सकता है। ऐसा हो ही गया है। योग इसे बहुत दिन से कह ही रहा है कि चीजों में सिर्फ फैलाव का अन्तर हैं, और कोई अन्तर नहीं है। बड़ा और छोटा सिर्फ फैलाव है। छोटा और बड़ा सिर्फ फैलाव है।
यह पांचवा सूत्र हैं और महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि एक बार यह दृष्टि में साफ आ जाये तो आपकी हीनता कहाँ टिकेगी? आपकी श्रेष्ठता कहाँ टिकेगी? कहाँ रखियेगा? किसलिए बोझढोइयेगा? उसे आप छिटककर फेंक देंगे और अपने रास्ते पर चल पड़ेंगे। और उस दिन अगर कोई अकड़ेगा। तो हंसेंगे और अगर कोई हीन होकर पूंछ हिलायेगा तो भी हंसेंगे।
पूंछ हिलाने वाले से कहेंगे कि बेकार मेहनत मत करो। अकड़ने वाले से कहेंगे-नाहक शरीर को दुखाये जा रहे हो, कोई जरूरत नहीं है। सब चीजें अपने होने में हैं। सब चीजें अपने स्वभाव में हैं और सब स्वभाव अतुलनीय हैं, तुलना का कोई अर्थ ही नहीं है। कोई आयोजन भी नहीं है। योग का सूत्र। योग का छठवा सूत्र है कि ऐसा नहीं है कि जो क्षुद्र दिखाई पड़ता है वह और जो विराट

दिखाई पड़ता है वह इनमें विराट दाता हो और क्षुद्र सिर्फ ग्राहक हो, भिखारी हो। ऐसा नहीं है।
छठवा सूत्र है योग का, दान और ग्रहण भिखारी होना सम्राट होना सबके साथ इकट्ठा है। यहाँ बूंद भी सागर को दान देती हे और सागर से दान लेती है। यहाँ बूंद भी विराट को देती है और यहाँ विराट भी क्षुद्र में अपने को उड़ेलता है। यहाँ देना और लेना बिल्कुल बराबर चल रहा है।
अभी एक फ्रेंच वैज्ञानिक एस्ट्रन ने एक छोटा-सा यन्त्र बनाया है। और
यह मन्त्र योग की दिशा में बड़ा क्रान्तिकारी सिद्ध होगा। एस्ट्रन का यह यन्त्र व्यक्ति में जो प्रतिपल अनन्त से ऊर्जा समाहित हो रही है, उसकी रिपोर्ट करता है कि वह कितनी मात्रा में प्रवेश कर ही है। आप खड़े हो जायें उस यन्त्र के पास तो वह यन्त्र बताता है। कि आपके भीतर चारों ओर ब्रह्माण्ड से जो शक्ति आ रही है वह किसी मात्रा में आ रही है। पूरे वक्त जैसे अनन्त-अनन्त मार्गों से शक्ति आपके ऊपर गिर रही है और आपके राये-रोये से प्रवेश कर रही है।
बड़े मजे की बात है कि जब आप आनन्दित होते हैं। तो यह शक्ति ज्यादा प्रवेश करती है और जब आप दुखी होते हैं तो यह कम प्रवेश करती है। एस्ट्रन का यह यन्त्र बड़ा कीमती है। अगर आप दुखी हैं तो आपके द्वार-दरवाजे बन्द होते हैं सिकुड़े होते हैं। आपक भीतर शक्ति कम प्रवेश करती है। आपने भी अनुभव किया होगा क दुख सिकोड़ता है। इसलिए दुखी आदमी कहता है।, मुझसे बोलो मत, मुझे छेड़ो मत, मुझे एक कोने में बैठ जाने दो, मुझे एक कोने में सो जाने दो। दरवाजा बन्द कर लेता है, अंधेरा कर लेता है। देखी आदमी सिकुड़ता है, आनन्दित आदमी बंटना चाहता है। आनन्दित आदमी अकेला हो तो बेचैन होता है, भागता है किसी के पास कि आनन्द की खबर दे।
हम सबको पता है कि बुद्ध जब दुखी थे तो जंगल गये और जब आनन्दित हुए तब वापस गाँव में लौट आये। महावीर जब दुखी थे जब जंगल गये और जब आनन्दित हुए तब वापस गाँव में लौट आये। कोई पूछे कि दुखी आदमी जंगल क्यों जाता है? सिकुड़ जाता है, मिलने से भी भय खाता है। आनन्दित आदमी नदी की धार की तरह दौड़ता है, सबको बांटना चाहता है। आनन्द बंटना चाहता है, आनन्द एक शेयरिंग है। बिना बंटे आनन्द प्रसन्न नहीं होता। दुख सिकुड़ना चाहता है। इसलिए दुखी आदमी अकेला रह जाता है। आनन्दित आदमी को बहुत मित्र मिल जाते हैं। दुखी आदमी आईलेंड बन जाता है। उसके साथ भी कोई खड़ा नहीं होना चाहता वह भी किसी को खड़ा नहीं करना चाहता। आनन्दित आदमी महाद्वीप हो जाता है, दुखी आदमी छोटा-सा द्वीप हो जाता है अपने में बन्द और अपने मे अकेला आइसोलेटेड। एस्ट्रन का यन्त्र यह बताता है कि जब दुखी आदमी सामने खड़ा होता है तो उसमें विराट की ऊर्जा कम बरसती है और जब आनन्दित आदमी खड़ा होता है तो विराट सब तरफ से उसमें प्रवेश करने लगता है जैसे बांध टूट गये हों और सब तरफ से उसमें ऊर्जा आने लगी हो।
योग इसे बहुत दिन से कहता है। येग कहता है कि आदमी के भी द्वार-दरवाजे तुम्हारे हाथ में हैं कि तुम परमात्मा के लिए अपने दरवाजे खुले रखो कि बन्द रखो।
लिवनित्ज हुआ एक बड़ा गणितज्ञ। वह कहता था, आदमी एक "मोनोड" है। मोनोड उसका शब्द है। और मोनोड का अर्थ है विण्डोलेस। आदमी ऐसा घर है, जिसमें कोई खिड़की दरवाजा नहीं है। बन्द घर है। और लिवनित्ज कहता था कि इस बन्द घर में हाथ भी फैलाओ तो दूसरे तक नहीं पहुँचते, अपने ही मकान की दीवारों को छूते हें। दूसरे तक तुम पहुँचते ही नहीं। सब आदमी अपने-अपने में बन्द हैं। साधारणतः दुखी आदमी मोनोड होता है। और ऐसा लगता है कि लिविनित्ज दुखी आदमी रहा होगा या जिन लोगों को उसने जाना और सोचा होगा, वे दुखी रहे होंगे। उसने किसी योगी को शायद कभी नहीं देखा, क्योंकि योगी बिल्कुल उल्टा आदमी होता है।
अगर हम मोनोड के खिलाफ कोई शब्द बनायें तो "ओपनिंग" शब्द है।
मोनोड का अर्थ है विण्डोलेस, खिड़की-रहित, द्वार-रहित। अगर हम योगी के लिए कोई शब्द बनायें तो कहना पड़ेगा दीवार-रहित। खिड़की-द्वार तो सवाल ही नहीं है, पूरे मकान को द्वार बना लेता है। इसलिए दीवारे भी अलग कर देता है,

खुले आकाश के नीचे हो जाता है। सब तोड़ देता है, ताकि विराट उसमें सीधा बरसता रहे। बरसता नहीं, जुड़ ही जाता है। इसलिए येग शन्ति पर, आननद पर, मौन पर, स्वार्थ पर जोर देता है।
अभी एस्ट्रन का यन्त्र बताता है कि जब मौन में आदमी खड़ा होता है, तब ऊर्जा की मात्रा बढ़ जाती है और जब बोलता है, बात करता है, विचार करता है, तब ऊर्जा की मात्रा कम हो जाती है। जब शान्त खड़ा होता है तब ऊर्जा ज्यादा बरसने लगती है। जब अशान्त खड़ा होता है, टेन्स होता है।, चिन्तित होता है।, तब ऊर्जा कम आनी शुरू हाती है। मौन या शान्ति या आनन्द परमात्मा तक पहुँचने के लिए इसीलिए मार्ग समझे योग ने, क्योंकि उनसे आप ज्यादा खुले हो जाते हैं, ओपन। खिड़कियां-दरवाजे सब खुल जाते हैं। धीरे-धीरे वे गिर जाते हें। फिर दीवारें भी गिर जाती हैं। फिर आप खुले आकाश के नीचे आ सकते हैं। एस्ट्रन का यन्त्र न केवल इतना ही रेकार्ड करता है कि बाहर से ऊर्जा आ रही है, वह यह भी रेकार्ड करता है कि व्यक्ति से प्रतिपल रिस्पॉन्स हो रहा है। व्यक्ति भी प्रति पल ऊर्जा की तरगे छोड़ रहा है। हम परमात्मा से ले ही नहीं रहे हैं, हम दे भी रहे हैं। और ऐसा मत समझना कि अगर परमात्मा न होगा तो आप न हो सकेंगे। इससे उल्टा भी सच है, अगर आप न होंगे तो परमात्मा भी नहीं हो सकेगा। ऐसा मत सोचना कि सागर सिर्फ बादलों को पानी देता ही नहीं लेता भी हैं। सागर लेता ही नहीं, देता भी है। और नदियां सिर्फ लेती ही नहीं, देती भी हैं। जहाँ भी लेना हे, वहाँ देना भी है। और समतुल है, लेन-देन बराबर है। अगर यह हिसाब ठीक न हुआ तो भूल होती है। और जिन्दगी उलझ जाती है। इसलिए योग के इस छठे सूत्र को ठीक से समझ लेना जरूरी है। उस आदमी को मैं योगी कहूंगा, जो जितना लेता है, उतना दे देता है। और हिसाब सदा चुकाता है।
कबीर जब कह सके मरते वक्त कि "ज्यो की त्यों धर दीन्हीं चदरिया" तो उसका मतलब है। उसका मतलब है, लेन-देन सब बराबर है। खाते में न कुछ देना बचा, न कुछ लेना बचा। हिसाब-किताब पूरा हो गया। हम जाते हैं। कोई उधारी नहीं। ऐसा नहीं कि लिया ही हो और दिया न हो। हम सारे लोग लेते हैं, लेकिन दे नहीं पाते, बाँट नहीं पाते। और लेने तक में कंजूसी कर जाते हैं तो देने में कंजूसी करेंगे ही। लेते तक खुले मन से नहीं हैं, वहाँ भी दरवाजे बन्द रखते हैं। और देने में तो बहुत कठिनाई है।
जैसा कहा, आनन्द में ज्यादा मिलता है, वैसे ही आनन्द में ज्यादा दिया जाता हे। मौन में ज्यादा मिलता है।, मौन में ज्यादा दिया जाता है।
असल में जब कोई बिल्कुल शान्त, मौन होता है। तो ऐसे हो जाता है जैसे पहाड़ो पर "ईको प्वाइण्ट" होते हैं। आपने आवाज दी ओैर पहाड़ ने उन्हें लौटा दिया। खाली मन्दिर में आप बोले, गूंजी आवाज लौटकर आप पर बरस गयी। खाली, मौन, ध्यान को उपलब्ध आदमी पर जो भी आता है, तत्काल रिसपॉन्स, तत्काल प्रतिध्वनित होकर लौट जाता है। वह प्रति पल ले रहा है। और दे रहा है। लेने और देने में फासला भी नहीं है। जैसे लहर सागर की तट पर आयी और वापस लौट गयी और सागर अपने तट पर सदा ही ऋणमुक्त खड़ा है। जितना लेता है, उतना लौटा देता है। जो भी लेता है, लौटा देता है।
यह जो मैंने कहा, एस्ट्रन के यन्त्र में यह भी पकड़ा जाता है कि आपके बाहर कितनी ऊर्जा गिर रही हैं आपके भीतर से कितनी एनर्जी-वेव्ज बाहर जा रही है। दुखी आदमी से बहुत कम बाहर जाती है। दुखी आदमी अपने को पकड़ कर खड़ा हो जाता है। चिन्तित आदमी से बहुत कम बाहर जाती है। चिन्तित आदमी की शक्ति उसी के भीतर वर्तुल बन जाती है और गूंजने लगती है, जैसे पानी में भंवर बन जाते हैं। ऐसे ही चिन्तन आदमी की ऊर्जा भी भीतर भंवर बनकर घूमने लगती है। और वह उन्हीं-उन्हीं बातों को घूम-घूमकर सोचने लगता है जिन्हें हजार बार सोच चुका है। वह जुगाली करने लगता है, जैसे भैस करती है। खाना खा लिया है, फिर उसे निकालकर चबाने लगती है---- फिर चबाने लगती है----फिर चबाने लगती है। भैंस के चबाने का तो उपयोग भी है, क्योंकि भैंस इकट्ठा खा लेती है, फिर कोषों से चबाती रहती है। आदमी, चिन्तित आदमी जो चबाता है, उसका चबाना बिल्कुल बेमानी है। उसका कोई अर्थ ही नहीं है? वह एक ही बात को लाख दफे सोचने लगता है। उसका मतलब? उसका मतलब हुआ, उसके भीतर रुग्ण भंवर बन गया। अब सब उसके बाहर है, वह आब्सेस्ड हो गया। अब वह उसी बात को हजार बार सोच रहा

है। और यह भी सोचता है कि क्या मैं बेकार बात सोच रहा हूँ? लेकिन सोचे जा रहा हैं
ऊर्जा ने बाहर जाना बन्द कर दिया है, वह भीतर ही घूमने लगी है। ऐसा आदमी रुग्ण हो जायेगा, आध्यात्मिक अर्थों में रुग्ण हो जायेगा।
ऊर्जा आनी भी चाहिए, जानी भी चाहिए। और भीतर सदा ही समतुल, लेना-देना बराबर होने चाहिए। तो व्यक्ति और परमात्मा के बीच जो सम्बन्ध बनते हैं, उनका हिसाब लगाना मुश्किल है। तब सीधे सम्बन्ध होते हैं और तब ऐसा नहीं होता है कि व्यक्ति चरणो में होता है, परमात्मा सिर पर होता हैं तब व्यक्ति परमात्मा हो जाता है, परमात्मा व्यक्ति हो जाता है। तब भगवान भक्त हो जाता है, भक्त भगवान हो जाता है फर्क फासले नहीं रह जाते, क्योंकि कोई लेन-देन नहीं होता। भगवान भी जोर से नहीं कह सकता, क्योंकि जो लिया था, वह दे दिया गया है। कहीं कोई बाकी नही रह गयी है बात। दुख में, बेचैनी में, परेशानी में हम देते भी नहीं, लेते भी नहीं, सिकुड़कर बन्द हो जाते हैं और जीवन-स्रोत सूख जाते हैं। ऐसे ही जैसे कोई कुआं हो और कुआं कह दे कि सागर से अब मैं पानी नहीं लूंगा।
झरने बन्द करता हूँ अपने-और लोगों से कह दे कि अब तुम गगरियां डालना बन्द कर दो, अब मैं दूंगा नहीं स्वभावतः जो लेना बन्द करेगा, वह देना भी बन्द करेगा, नहीं तो वह सूखता जायेगा और जो देना बन्द करेगा, उसे लेना भी बन्द करना पड़ेगा। अन्यथा फट जायेगा, जी नहीं सकता। ये दोनों बातें एक साथ करनी पड़ेंगी। लेकिन ध्यान रहे, जो कुआं सागर से कह देगा कि नहीं लेता तुझसे और गाँव के लोगों से कह देगा कि नहीं देते तुम्हें तो वह सिर्फ सड़ेगा, गन्दा होगा, बदबू फैलायेगा उसकी ताजगी नष्ट हो जायेगी, उसका जीवन खो जायेगा।
हम सब ऐसे ही कुएं हो गये हैं। योग की दृष्टि से हम सड़ते हुए कुऐ हें। जीवित कुएं नहीं हैं, जो सागर से लेते हैं। और सागर को बांट देते हैं वापस क्योंकि वे जो लोग गगरियां लेकर आ गये हैं। वे सागर के साधन हैं। तो वे वापस सागर तक पहुँचा देंगे और कुंआ ताजे-से-ताजा बनता जायेगा। आश्चर्य की बात है, योग का यह कहना कि जो जितना ले जाये, उतना देगा, उतना जीवन्त, उतना लिविंग होगा। जो जितनी ही बड़ी मात्रा में लेगा और उतनी ही बड़ी मात्रा में लौटा देगा, वह उतना जीवन-ऊर्जा का केन्द्र हो जायेगा। उतनी पुलक, उतनी थिरक, उतना जीवन सघन होकर उसमें प्रगट होगा।
कृष्ण हों कि बुद्ध हों कि महावीर हों कि क्राइस्ट हों, ये सारे लोग,
जो इतने विराट जीवन-ऊर्जा से भरे हुए मालूम पड़ते हैं, उसका कारण? --... उसका एक ही कारण है लेने की भी कंजूसी नहीं है, देने की भी कंजूसी नहीं है। लेते भी बड़े पैमाने पर हैं, देते भी बड़े पैमाने पर हैं, देते भी उतने बड़े पैमाने पर हैं।
जीसस का एक वचन आपसे कहूं और जीसस पृथ्वी पर हुए उन थोड़े बड़े योगियों
मे से एक हैं, जिन्होंने कुछ कीमती सूत्र छोड़े। जीसस का एक वचन है "जो बचायेगा, उससे छीन जायेगा। जिसके पास थोड़ा है, उससे छीन लिया जायेगा और जिसके पास बहुत हे, उसे बहुत दे दिया जायेगा।"
बड़ी उलटी बात कहते हैं। हम कहेंगे कैसी ज्यादती कर रहे हैं। जिसके पास कुछ नहीं है उसे दो और जिसके पास बहुत-कुछ हैं उसे क्यों देते हो? उसे न दो तो भी चलेगा। लेकिन जीसस किसी और गहरी बात की बात कर रहे हैं। वे यह कह रहे हैं कि जिसके पास जितनी ज्यादा ऊर्जा है, उसे उतनी ही ज्यादा दी जायेगी, जिसके पास जितनी कम ऊर्जा है, उसे उतनी कम मिलेगी। मिलने का कारण यही है कि जिस आदमी के पास कम है, वह आदमी अपने द्वार-दरवाजे बन्द किये बैठा है, इसीलिए कम है। उसने देने में कंजूसी की है, इसीलिए लेने में हार गया, थक गया, ले नहीं सकता।
सुनी है मैंने एक कहानी कि गाँव में एक आदमी ने किसी किताब में पढ़ा कि रुपया रुपये को खींच लेता है। उसके पास एक रुपया था गरीब आदमी था।
उसने सोचा, अगर रुपया को खींच लेता है तो ऐसी जगह चलना चाहिए जहाँ रुपये हों, ताकि अपने रुपये को वहाँ रखे, वह रुपये को खींच लेगा। वह शहर गया। साहूकार की दुकान पर पहुँचा। सांय रुपये गिने जा रहे थे तो वह बाहर

सीढ़ी पर बैठकर अपने रुपये का बजाने लगा। बड़ी देर तक उसने रुपयें को बजाया, लेकिन कोई रुपया खिंचकर आया नहीं। तब उसने समझा कि लगता है, दूरी ज्यादा है। उसने अपने रुपयें को साहूकार की गड्डियों पर फेंका। फिर थोड़ी देर राह देखी कि रुपयों को लेकर आयेगा। लेकिन वह नहीं आया तो उसने साहूकार से कहा कि गलत थी वह किताब, मेरा रुपया वापस कर दो। साहूकार ने कहा, कौन-सी किताब? उसने कहा- मैंने एक किताब में पढ़ा है, रुपया रुपयें को खींच लेता है। साहूकार ने कहा-सही थी वह किताब, रुपयें ने रुपयें को खींच लिया है, तुम अपने घर जाओ। पागल, एक रुपया इतने रुपयें को खींच सकेगा! सही थी वह किताब, रुपये रुपये को खींच लेंगे। तुम अपने घर जाओं, कभी भूल से मत कहना कि किताब गलत थी। और उस किसान ने फिर कभी किसी से नहीं कहा कि किताब गलत थी, क्योंकि किताब सही साबित हुई।
जीसस जिस अद्भुत नियम की बात कर रहे हैं, वे यह कह रहे हैं कि अगर चाहते हो कि विराट से भर जाओ तो विराट के दाता बनो। बांटो तो मिलेगा, रोका तो छिन जायेगा। बचाया तो खो दोगे, खोया तो पा लोगे। उलटे लगते हैं सूत्र, लेकिन योग उन सूत्रों को कहने का कारण समझता है। कारण है, जितना ही हम अपने को खाली करते हैं, उतना ही हम विराट के लिए स्थान रिक्त करते हैं। जितना ही विराट हममें उतरता है, उतना ही हम खाली करने के आनन्द से, के आनन्देस भरते हैं और उलीचते हैं
यह छटवा सूत्र यह कहता है कि यहाँ कोई भी न दाता है अकेला, न ग्राहक है। यहाँ न कोई भिखारी है और न कोई अकेला सम्राट है। और जो आदमी अकेला सम्राट होना चाहेगा, वह मुश्किल में पड़ेगा। और जो आदमी भिखारी होना चाहेगा, वह भी मुश्किल में पड़ेगा।
यहाँ तो भिखारी और सम्राट एक के ही भीतर हैं। एक हाथ से देना है और एक हाथ से लेना है। और हाथ उतना ही ले पायेगा, जितना दूसरे हाथ ने दिया है। और दूसरा हाथ उतना ही दे पायेगा, जितना एक हाथ से लिया गया है।
काश! यह हमारी समझ में आ सके तो हमारी जिन्दगी की सारी रूप रेखा बदल जाये। तब हम चीजों को पकड़ने वाले सिद्ध न हों, क्योंकि जो चीजों को पकड़ लेता है, वे दरिद्र रह जाता है। जो जितने जोर से पकड़ लेता है, वह उतना ही दीन रहा जाता है। छोड़ने की कला आनी चाहिए, दे देने की कला आनी चाहिए, क्योंकि दे देने की कला ही पा लेने का मार्ग है जितने हम खाली होंगे, उतने हम पाने में समर्थ और पात्र हो जाते हैं। जो खाली होंगे, वे हार जायेंगे। जो पहले से ही भरे हुए, पकड़े हुए, अपने को रोके हुए हैं, वे खाली रह जायेंगे। झीलें भर जाती है, पहाड़ खाली रह जाते हैं।
पहाड़ों पर भी वर्षा होती है लेकिन पानी उन पर टिकता नहीं, वह पहले से
ही भरे पड़े हैं। झीलें खाली होती हैं, उन पर वर्षा न हो तो भी कोई चिन्ता नहीं, पहाड़ों का पानी बहकर झीलों में आ जाता है और भर जाता है। झीलें खाली हैं, यह उनका राज़ है।
खाली होते रहना है सब दृष्टियों से तो भरते रहेंगे। और सब दृष्टियों
से भरते रहना है तो खाली होते रहेंगे। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और परमात्मा से अगर कोई मांगता ही चला जाये तो ध्यान रखें, परमात्मा से उसका कोई सम्बन्ध न हो सकेगा। हमारे सम्बन्ध नहीं है।, क्येंकि मन्दिर हमारे प्रार्थनागृह हैं, वहाँ हम सिर्फ माँगते हैं। वहाँ हम पाचक होते हैं। हमारी प्रार्थनाएं झूठी हो जाती हैं, क्योंकि हमारी प्रार्थनाएं भिखमंगों की प्रार्थनाएं हैं जो सिर्फ माँगने के लिए ही जाते हैं।
ध्यान रहे, जब हम माँगने को जाते हैं, तब हम परमात्मा को कोई मूल्य नहीं दे रहे हैं, जो हमें चाहिए, उसी को मूल्य दे रहे हैं। एक आदमी मेरे पास आया और कहा- मैं तो पहले परमात्मा में नही विश्वास नहीं करता था, अब करने लगा हूँ।
मैंने उसे पूछा-क्या तुम्हारी माँग कोई पूरी हो गयी? उसने कहा-आप कैसे पहचाने? तो मैंने कहा- और तो मुझे दिखाई नहीं पड़ता तुम्हारी शक्ल से कि तुमने परमात्मा की थोड़ी-सी भी यात्रा की हो। जरूर कोई माँग पूरी हो गयी है। उसने कहा-बिल्कुल, मेरे लड़के की नौकरी नहीं लगती थी, मैंने प्रार्थना की और ठीक अल्टीमेटम दे दिया भगवान को कि एक महीने के भीतर अगर नौकरी नहीं

लगी तो ध्यान करना, फिर कभी विश्वास न करेंगे। और नौकरी लग गयी, अब मैं बिल्कुल पक्का विश्वास करता हूँ।
इस आदमी को लड़के की नौकरी परमात्मा से ज्यादा कीमती है। अगर इसके लड़के की नौकरी छूट जाये तो परमात्मा भी अनएम्प्लायड हो जायेगा, इसी तरह। वह भी बेकार हो जायेगा। उसका भी कोई मतलब नहीं रह जायेगा। यह जाकर ठोकर मार देगा कि हटो सिंहासन से, बहुत हो गया।
हम परमात्मा के पास सिर्फ प्रार्थनाएं लेकर जाते हैं, माँग की। ध्यान रहे, परमात्मा के पास जो दान लेकर जाता है, उसकी ही प्रार्थनाओं का अर्थ है। जो परमात्मा के पास देने जाता है, वही जुड़ता है। ऐसा नहीं है, जो देने जाता है, उसे नहीं मिलता, बहुत मिलता है। लेकिन देने वाले को मिलता है। माँगने वाले से और पाते हों तो छीन लिया जाता है।
इसलिए जीसस कहते है, जिसके पास थोड़ा है, उससे छीन लेंगे। जैसे ही कोई देने को तैयार हो जाता है, वह पाने का हकदार हो जाता है, क्योंकि देने के लिए हृदय के द्वार खोलने पड़ते हैं। उन्हीं द्वारों से मिलता है। और जो देने में डरता है, उसे दरवाजे बन्द करने पड़तें हैं कि चोर न आ जायें, भिखारी न आ जायें, कोई दरवाजे पर माँग न ले उससे। उसे खिड़की-दरवाजे सब बन्द रखने पड़ते हैं। घर के भीतर से वह माँग करता है कि यह दें, वह दें, दरवाजे न खोलेगा कि पता नहीं कोई भिखारी आ गया हो, कोई मांगने वाला न आ गया हो।
और मैंने सुना है कि परमात्मा यह मजाक बहुत बार करता है कि भिखारी की शक्ल में द्वार पर आ जाता है। तब पहचान हो जाती है पक्की कि यह आदमी पाने का पात्र नहीं है, क्योंकि जो अभी देने में ही समर्थ नहीं हुआ, वह पाने का पात्र नहीं हो सकता। स्वभावतः भगवान आपसे धन नहीं माँग सकता है। स्वभावतः परमात्मा आपसे मकान नहीं माँग सकता है, क्योंकि मकान आपका नहीं, आपके हाथ में है आज, कल किसी और के हाथ में होगा। परमात्मा तो एक ही चीज हो सकते हैं। इसलिए योग कहता है-जो अपने को देने को तैयार है, वह सब पा लेने का हकदार हो जाता है। हम अपने को दे पायें, हम अपने को छोड़ पायें, हम कह पायें-जो तेरी मर्जी, मुझे ले ले... ।
विवेकानन्द के जीवन में एक छोटा-सा संस्मरण है। विवेकानन्द के पिता
चल बसे तो घर में बहुत गरीबी थी और घर में भोजन इतना नहीं था कि माँ और बेटा दोनों भोजन कर पायें। तो विवेकानन्द अपनी माँ को यह कहकर कि आज किसी मित्र के घर निमंत्रण है, मैं वहाँ जाता हूँ- कोई निमंत्रण नहीं होता था कोई मित्र भी नहीं होते थे-सड़कों पर चक्कर लगाकर घर वापस लौट आते थे, अन्यथा भोजन इतना कम है कि माँ उन्हीं को खिला देगी और खुद भूखी रहेगी।
तो भूखे घर लौट आते। हँसते हुए आते थे कि आज तो बहुत गजब का खाना मिला। क्या चीजें बनी थीं। बस उन्हीं चीजों की चर्चा करते आते थे, जो कहीं बनी ही नहीं थीं, जो कहीं खायी भी नहीं थीं। भूखे, चक्कर लगाकर लौट आते थे, ताकि माँ खाना खा ले। रामकृष्ण को पता चला तो उन्होंने कहा-तू कैसा पागल है, भगवान से क्यों नहीं कह देता, सब पूरा हो जायेगा तो विवेकानन्द ने कहा कि खाने-पीने की बात भगवान से चलाऊँ तो जरा... बहुत साधारण बात हो जायेगी। फिर भी रामकृष्ण ने कहा कि तू एक दफा कहकर देख तो। विवेकानन्द को भीतर भेजा घण्टा बीता, डेढ़ घण्टा बीता, वह मन्दिर से बाहर आये, बड़े आनन्दित थे। नाचते हुए बाहर निकले। रामकृष्ण ने कहा-मिल गया न? माँग लिया न? विवेकानन्द ने कहा-क्या? रामकृष्ण ने कहा-तुझे मैंने कहा था कि माँग अपनी रख देना। तू इतना आनन्दित क्यों आ रहा है? विवेकानन्द ने कहा-वह तो भूल गया।
ऐसा कई बार हुआ। रामकृष्ण भेजते और विवेकानन्द वहाँ से बाहर आते और
वे पूछते तो वे कहते-क्या? तो रामकृष्ण ने कहा-तू पागल तो नहीं है, क्योंकि भीतर जाता हैं तो पक्का वचन देकर जाता है। विवेकानन्द कहते हैं कि भीतर जाता हूँ तो परमात्मा से भी मांगू, यह तो ख्याल ही नहीं रह जाता। देने का मन हो जाता है कि अपने को दे दूं। और जब अपने को देता हूँ तो इतना आनन्द, इतना आनन्द कि फिर कैसी भूख, कैसी प्यास, कौन माँगने वाला, कौन याचक, नहीं माँग सके। यह सम्भव नहीं हो सका।

आज तक किसी धार्मिक आदमी ने परमात्मा से कुछ भी नहीं माँगा है। और जिन्होंने माँगा हो, उन्हें ठीक से समझ लेना चाहिए। कि धर्म से उनका कोई नाता नहीं है। धार्मिक आदमी ने दिया है। जीसस को सूली लगी। सूली लगने की रात बगीचे में उनके मित्रों ने कहा- अपने परमात्मा से कह दो, माँग लो जो माँगना है। जीसस हँसते रहे। फिर सुबह उनको सूली लगने का वक्त भी आ गया और साथी उनके उनसे बार-बार कहते रहे कि तुम अपने परमात्मा से कह क्यों नहीं देते कि यह मत करवाओ, लेकन जीसस हँसते रहे। फिर सूली पर वे लटका भी दिये गये। हाथ में कीलें ठोंक दी गयीं और तब उनके मुँह से एक आवाज निकली और वे सूली पर लटक गये। फिर यह सूली नहीं थी, यह परमात्मा का प्रतीक हो गयी थी। अब वे अपने को दे सके। वे सूली पर लटक गये।
सूली पर लटकना प्रतीक बन गया। है भी अद्भुत प्रतीक कि जिन्हें परमात्मा तक जाना है, उन्हें अपने को, "मैं" को बिल्कुल सूली पर लटका देने का साहस चाहिए।
लेकिन आदमी बेईमान है, उसकी बेईमानी का कोई अन्त नहीं। ईसाई पादरी गले में सोने की सूली लटकाये हुए सारी प्थ्वी पर घूम रहे हैं! कोई पूछे कि गला सूलियों पर लटकाया जाता है कि गले में सूलियां लटकायी जाती है? लेकिन आदमी धोखेबाज है। जीसस सूली पर लटकाये गये, उनको मानने वाला गले में एक छोटी-सी सूली लटकाए घूम रहा है! सूली को भी आदमी आभूषण बना सकता हे, आदमी इतना बेईमान है! देने की बात ही भूल जाता है, मिटने की बात ही भूल जाता है- पाने की, पाने की बात ही याद रखता है!
योग कहता है, जिस अनुपात में दिया जायेगा, उसी अनुपात में मिलता है।
और जो दिया जायेगा, वही मिलता है। अगर जीवन दे देंगे तो जीवन मिलेगा, अगर स्वयं को दे देंगे तो स्वयं का होना परिपूर्ण रूप से मिलेगा। अगर अहंकार दे देंगे तो आत्मा मिलेगी। अगर यह न कुछ व्यक्तित्व दे देंगे तो परम व्यक्तित्व मिलेगा जो भी दिया जायेगा वह मिलेगा। और हमारे पास क्या हो सकता है देने योग्य? हमारे पास मरणधर्मा देह है, एक झूठा अहंकार है, ख्याल है कि मैं कुछ हूँ। बस, यही चीज है, वापस आ जाता है, सच में जो मेरी देह है- अमृतवत वह मुझे मिल जाती है।
इसलिए योग के छठेवें सूत्र को ठीक-से ध्यान में रखना, देना ही पाना है, मिटना ही होना है, क्योंकि यहाँ बूँद भी सागर को देती है। लेकिन जब कोई बूँद सागर को देती है, तब कभी देखा है? जब बूँद अपने को सागर को देती है तो सागर बूँद को मिल जाता है? तत्काल बूँद सागर हो जाती हे? कबीर ने कहा है, एक बहुत अद्भुत वचन कहा है कबीर ने कहा है खोजते-खोजते मैं खो गया और फिर ऐसा हुआ कि "बूँद समा गयी समुन्द्र में, सो कत हेरी जाई" और फिर बूँद सागर में गिर गयी, अब मैं बूँद को कैसे वापस निकालूं। लेकन कुछ दिन बाद उन्होंने एक दूसरा वचन भी लिखा और अपने मित्रों को कहा कि पहले वचन को छोड़ देना, उसमें कुछ गलती हो गई। पहला वचन था- "हेरत-हेरत हे सखी, रह्या कबीर हेराई, बूँद समाना समुन्द्र में, तो कत हेरी जाई।"
कहा कि काट दो वह पहली बात, उसमें कुछ उसमें कुछ गलती हो गयी कि बूँद सागर में कूद गयी। अब मैं तुमसे ज्यादा असली बात कहता हूँ कि सागर बूँद में गिर गया, और बूँद सागर में गिरी होती तो निकाल भी लेते, अब सागर बूँद में गिर गया, अब कहाँ निकालेंगे? अब कैसे निकालेंगे?
जब बूँद सागर में गिरती है तो यह बूँद की तरफ से हमें लगता है कि बूँद सागर में गिर रही है, लेकिन जब गिर जाती है तब बूँद से पता चलता है कि यह तो सागर ही मुझमें गिर गया। जब व्यक्ति अपने को खोता है, तब उसे लगता है कि मैं अपने को खो रहा हूँ, जैसे ही खोता है, वैसे ही उसे पता चलता है, यह तो परमात्मा का मिलना हो गया। यह तो मैंने खोया नहीं, पाया।
बुद्ध का एक युवा भिक्षु ज्ञान को उपलब्ध हो गया तो बुद्ध ने उससे कहा-अब तूने पा लिया, अब तू जा और लोगों को खबर दे उस मार्ग की, उस राह की, उस द्वार की, जहाँ से तूने प्रवेश किया। जा और लोगों को बता वह मन्दिर जहाँ आनन्द के निनाद हो रहे हैं। उस भिक्षु ने कहा-बस, मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा करता था, आज ही चल पड़ता हूँ। जो मिला है, उसे बाँट दूंगा। बुद्ध ने पूछा-तू जायेगा कहाँ, किस ओर? उस भिक्षु ने कहा, उस भिक्षु का नाम था,

पूर्ण। उसने कहा- मैं? बिहार का एक हिस्सा था सूखा, वहाँ जाऊँगा। वहाँ अब तक कोई आपकी खबर नहीं ले गया। बुद्ध ने कहा-वहाँ मत जा। मैं तुझे सलाह नहीं दूंगा, क्योंकि वहाँ के लोग अच्छे नहीं है। इसीलिए तो वहाँ अब तक कोई गया नहीं। तो उस पूर्ण ने कहा कि जहाँ लोग अच्छे हैं, वहाँ मेरे जाने की जरूरत ही क्या है? मुझे वहीं जाने की आज्ञा दें। तो बुद्ध ने कहा-मैं तुमसे तीन सवाल पूछ लूं, फिर तू जा सकता है।
पहला सवाल यह पूछता हूँ कि वहाँ के लोग दुष्ट हैं, कठोर हैं, गंवार हैं, वे तुझे गालियां देंगे तो मेरे मन को क्या होगा? वही, जो आपके मन को होगा। मेरे मन को यही होगा कि कितने भले लोग हैं, सिर्फ गालियां देते हैं, मारते नहीं हैं। मार भी सकते थे! तो बुद्ध ने कहा-पूर्ण! समझ कि वे तुझे मारे भी, क्योंकि वे लोग बहुत बुरे हैं, मारेंगे भी। वे जब तुझे मारेंगे तब तेरे मन को क्या होगा? तो पूर्ण ने कहा-वहीं, जो आपके मन को होगा। धन्यवाद दूंगा कि कृपा है प्रभु की कि अच्छे लोग हैं, मार ही नहीं डालते हैं। मार भी डाल सकते थे। तो बुद्ध ने कहा-बस, आखिरी सवाल और पूछ लूं कि अगर वे मार ही डालें तो मरते क्षण में आखिरी ख्याल क्या होगा? तो पूर्ण ने कहा-आप व्यर्थ ही पूछते हैं। जानते हैं भली-भाँति वहीं, जो आपको होगा। मरते क्षण में हाथ जोड़कर धन्यवाद देकर जा सकूंगा कि अच्छे लोग हैं, इस जीवन से छुटकारा दिला दिया, जिसमें कोई भूल-चूक हो सकती थी, तो बुद्ध ने कहा-तू धिर्मक आदमी हो गया, तू कहीं भी जा सकता है। अब तेरे लिए सारी पृथ्वी स्वर्ग है और सब घर मन्दिर हैं और हर आँख परमात्मा की आँख है।
योग ऐसी दृष्टि के आधार रखता है। और सूत्रों पर कल आपसे बात करूंगा। कुछ सवाल आये हैं, कुछ सवाल और कल आ जायेंगे तो अन्त में सारे सवालों को इकट्ठा ही ले लेंगे। मेरी बातों को इतने प्रेम से सुना, इससे अनुगृहीत हूँ। सुबह के लिए दो सूचनाएं आपके दे दें। जो मित्र ध्यान करने आना चाहते हों, ध्यान रखें, जो करने आना चाहते हों वे ही सुबह आयें। देखने न आयें। देखने से कुछ पता हनीं चलेगा, करने से ही पता चल सकता है। और देखने से करने वालों को बाधा पड़ती है। जो आते हैं, वे स्नान करके आयें और चुपचाप आकर यहाँ बैठ जायें। जरा भी शब्द का उपयोग न करें, ताकि यहाँ का वातावरण ध्यान में आने के लिए सहयोगी और मित्र बन सके।
मेरी बातें इतने प्रेम से सुनी, उससे अनुगृहीत हूँ, अन्त में सबके भीतर बैठे प्रभु को प्रणाम करता हूँ, मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

चेतना का सूर्य
चौथा प्रवचन

प्रेम का केन्द्र

एक सूत्र मैंने आपसे कहा जीवन ऊर्जा है और ऊर्जा के दो आयाम हैं- अस्तित्व और अनस्तितव। और फिर दूसरे सूत्र में कहा कि आस्तित्व के भी दो आयाम हैं- अचेतन और चेतन। सातवें सूत्र में चेतन के भी आयाम हैं-स्व-चेतन, सेल्फ कान्शस और स्व-अचेतन, सेल्फ अनकान्शस। ऐसी चेतना, जिसे पता है अपने होने का और ऐसी चेतना, जिसे पता नहीं है अपने होने का।
जीवन को यदि हम एक विराट वृक्ष की तरह समझें तो जीवन-ऊर्जा एक है वृक्ष की। फिर दो शाखाएं टूट जाती हैं, अस्तित्व को हमने छोड़ दिया, उसकी बात नहीं की, क्योंकि उसका येग से कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर अस्तित्व की शाखा भी दो हिस्सों में टूट जाती है- चेतन और अचेतन। अचेतन की चचा्र भ्ी हमने चर्चा के बाहर छोड़ दी, क्योंकि उससे भी योग का कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर चेतन की शाखा भी दो हिस्सों में टूट जाती है- स्व-चेतन और स्व-अचेतन। सातवें सूत्र में इस भेद को समझने की कोशिश सबसे ज्यादा उपयेगी है। अब तक जो मैंने कहा है, वह आज का सातवां सूत्र आपसे कहूँग, उसके समझने के लिए भूमिका थी। सातवें सूत्र से योग की साधना प्रक्रिया शुरू होती है। इसलिए
इस सूत्र को ठीक से समझ लेना उपयोगी है।
पौधें हैं, पक्षी हैं, पशु है। वे सब चेतन हैं, लेकिन स्वयं की चेतना
उन्हें नहीं है। चेतन हैं, फिर भी अचेतन हैं। जीवन है, चेतना है, लेकिन स्वयं के होने का बोध नहीं है। आदमी हैं, वह भी वैसे ही है, जैसे पशु हैं, पक्षी हैं, पौधे हैं, लेकिन उसे स्वयं के होने का बोध है। उसकी चेतना में एक नया और जुड़ जाताह ै और वह स्व -चेतन भी है उसे यह भी पता है कि मैं चेतन हूँ। अकेला चेतन होना काफी नहीं है मनुष्य होने के लिए। मनुष्य होने की यह भी शर्त है कि मुझे यह भी पता है कि मैं चेतन हूँ। इतना ही फर्क मनुष्य और पशु में है। पशु भी चेतन है, लेकिन स्वयं बोध नहीं है उसे कि मैं चेतन हूँ।
अगर आप स्मरण करेंगे अतीत का तो आप ज्यादा-से ज्यादा पांच वर्ष या चार
वर्ष की उम्र तक की याद कर पायेंगे। उसके बाद अंधेरा छा जायेगा। चार वर्ष के जब आप थे, उसके पीछे फिर अंधेरा छा जाता है। चार वर्ष की उम्र तक आप थे तो जरूर, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि स्व-चेतन नहीं थे। इसलिए छोटे बच्चे और पशुओं में एक-सी सरलता दिखाई पड़ती है। तनाव भी नहीं है। छोटे बच्चे और पक्षियों और पौधें में एक-सी सहजता दिखाई पड़ती है। चार वर्ष शायद हमें भी बोध नहीं था कि हम हैं। फिर रोज रात आठ घण्टे सिर्फ बेहोशी में चले जाते हैं। अगर एक आदमी साठ साल जिये तो बीस साल सोता है। बीस साल जिन्दगी के सिर्फ बेहोशी में ही होते हैं। वहां भी आप चेतन नहीं होते हैं। यह जानकर आपको हैरानी होगी कि कितनी बार सो चुके हैं आप, लेकिन आप बता सकते हैं कि नींद किस भांति आती है? कब आती है? और क्या है?
नहीं बता सकते। जब तक जागते रहते हैं रात में, तब तक तो नींद आयी नहीं होती और जब नींद आ गयी है तब आप बेहोश हो गये होते हैं। नींद आपके बेहोश ही पाती हैं सुबह जब नींद जाती है, तब तक आप बेहोश होते है। जब चली जाती है, तब होश आता है।
इसलिए तो आप कहते हैं कि रात मैं आठ घण्टे सोया। इसका यह मतलब नहीं होता कि आपके पता है कि आप आठ घण्टे सोये। इसका कुल इतना मतलब होता है कि आपके रात जागने से आखिरी क्षण और सुबह जागने के आखिरी क्षण में आठ घण्टे का फासला है, गैप है। उससे आप हिसाब रखते हैं, अन्यथा नींद में आप पशुओं, पौधों के जगत में वापस चले गये।
शेष दिन में जब आपको लगता है कि आप होश से भरे हुए हैं, तब भी आप होश से भरे हुए कभी-कभी होते हैं। रास्ते पर किसी दिन खड़ें हो जायें और राह चलते लोगों को देखें तो आपको ऐसा लगेगा, उसमें से बहुत से लोग नींद में चले जा रहे हैं। कोई किसी से बातें कर रहा है। उससे जो कि साथ है ही नहीं! कोई हाथ हिला रहा है! कोई होठ हिला रहा है! वे किससे बातें कर रहे हैं? वे किसी सपने में हैं। जागे हैं। साथ तो कोई दिखाई नहीं पड़ता। यह चर्चा किससे चल रही

है? अगर अपने प्रति भी ख्याल रखेंगे तो आप पायेंगे कि जब आप जागे होते हैं तब भी पूरे समय होश में नहीं होते। होश कभी-कभी ही आता है। जैसे कोई आपकी छाती पर एकदम से छुरा रख दे तो उस क्षण में आप में सेल्फ अवेयरनेस होती है। उस क्षण में आप होश से भर जाते हैं, अन्यथा नहीं।
एक-दो-तीन उदाहरण से समझने की कोशिश करें। ये दोनों मकानों की छतें हैं। इन दोनों मकानों की छत पर एक फुट चौड़ी लकड़ी की पट्टी रख दी जाये और आपसे कहा जाये कि चल के पार कर जायें तो आप में से शायद ही कोई चलने को राजी होगा। उसी पट्टी को हम जमीन पर रख दें और आपसे कहें कि इसको चल के पार हो जायें, आप बूढ़ें, बच्चे, स्त्रियां-सभी पार हो जायेंगे और शायद ही कोई गिरे। पट्टी वही है, आप भी वही हैं। दो छतों के ऊपर रख दी है, आप चलने से इनकार क्यों कर रहे हैं? और जमीन पर इतने लोग चले और एक भी नहीं गिरा तो अभी भी गिरने की सम्भावना कहाँ है? लेकिन दिक्कत क्या आ रही है? कठिनाई बहुत दूसरी है। कठिनाई यह है कि जमीन पर चलते वक्त होश में होने की कोई जरूरत नहीं है, आप बेहोश चल सकते हैं। लेकिन उतनी बड़ी छत पार करने में होश रखना पडे़गा। होश तो अपने पास नहीं है, इसलिए बेहोशी में अगर गिर गये तो जान गयीं जमीन पर बेहोशी मे गिरे भी तो कोई जान जाने वाली नहीं है।
खतरे के क्षण में कभी-कभी होश होता है, बाकी और तो हम सोये होते हैं।
जब मौत निकट होती है तो होश होता है। ऐसे हम होश में नहीं होते। इसलिए हम अपनी आदतें नहीं बदलना चाहते, क्योंकि आदतें बदलें तो होश लाना पड़ता है। पुरनी आदतें बेहोशी से चल जाती हैं। एक आदमी को देखें, वह किस भांति सिगरेट खीसे से निकलता है, मुँह से लगाता है, माचिस जलाता है। अगर गौर से देखें तो पायेंगे वह बिल्कुल बेहोश, नींद में ही काम कर रहा है। कब उसने सिगरेट निकाल ली है, कब उसने माचिस जला ली है, कब उसने धुआं निकालना शुरू कर दिया है।
अगर दुनिया बहुत होश से भरी हा तो इतने नासमझ आदमी खोजने बहुत मुश्किल होंगे, जो धुएं को भी तर करने और बाहर करने का काम घण्टों करते हों। सिर्फ धुएं को बाहर और भीतर करने के काम को घण्टों करने वाले आदमी खोजना बहुत मुश्किल हो जायेगा। और किसी से आप कहेंगे तो वह कहेगा, मैं कोई पागल तो नहीं हूँ जो धुएं को बाहर और भीतर खींचूं। न केवल धुएं को बाहर और भीतर किया जा रहा है, सारी दुनिया चिल्लाती है, समझती है कि नुकसान है, उम्र कम होगी, बीमारी होगी, बेहोश, कान कुछ सुनते ही नहीं।
अमेरीका ने पीछे तय किया कि हर सिगरेट के पैकिट पर लाल स्याही में बड़े अक्षरों में लिखा होना चाहिए, "दिस इज हार्मफुल टु हेल्थ", यह हानिकर है स्वास्थ्य के लिए। सिगरेट के दुकानदारों ने, मालिकों ने, फैक्ट्री के बनाने वालों ने बड़ा शोरगुल मचाया कि हमें करोंड़ों कानुकसान हो जायेगा। जब मैंने यह सब पढ़ा तो मैंने कहा कि इन सिगरेट बनाने वालों को पता नहीं है कि लोग इतने बेहोश हैं कि लाल स्याही से लिखा हुआ कितने दिन तक पढ़ेंगे? और यही हुआ। छः महीने तक सिगरेट की बिक्री कम हुई, छः महीने के बाद फिर उतनी- की-उतनी हो गयी। और वह लाल स्याही से लिखा हुआ है पैकेट पर, मगर पढ़ने वाला तो मौजूद होना चाहिए। एक-दो दफा पढ़ लिया, फिर सो गये। वह सिगरेट की पैकिट आती है, उसमें सब लिखा है। कोई पढ़ता ही नहीं है उसको। सिगरेट की बिक्री फिर अपनी जगह आ गयी।
क्या लाल स्याही से किसी चीज पर लिखा हो कि यह जहर है, पीना खतरनाक है, होशपूर्वक आदमी कोई पियेगा? मुश्किल है। सब चीजों पर साफ है कि जहर क्या है? सब चीजों का साफ है कि बुरा क्या है? कितनी दफा आपने तय किया है कि अब क्रोध नहीं करेंगे। कितने दफे तय किया है, कितने दफे पूरा हुआ? एक भी बार पूरा नहीं हुआ, क्योंकि फिर दुबारा तय करने की जरूरत नहीं पड़ती।
मैं एक घर में मेहमान था। उस घर के बूढ़े ने मुझसे कहा कि मैंने ब्रह्ममचर्य का तीन बार व्रत लिया है। मैं बहुत हैरान हुआ ब्रह्मचर्य पर और व्रत तीन बार लिया कैसे होगा? मैंने उनसे पूछा कि फिर चौथी क्यों नहीं लिया? उस बूढ़े आदमी ने कहा तीन बार लेकर मैंने अनुभव किया कि यह पूरा नहीं हो सकता है, इसलिए चौथी बार नहीं लिया। ऐसा नहीं कि तीसरी बार पूरा हो गया।

रोज आप क्रोध करते है, रोज कसम खाते हें, फिर कल क्या होता है। जब क्रोध आता है? तब कसम का भी पता नहीं होता, क्योंकि आपको ही पता नहीं होता कि आप कहां हैं? जिसने कसम खायी थी, वह सोया हुआ है। सांझ को एक आदमी निर्णय करके सोता है कि मुझे चार बजे उठना है, कुछ भी हो जाये अब कल से उठना ही है। वही आदमी चार बजे बिस्तर मे करवट लेकर-अलार्म बजता रहता है, कहता है, छोड़ो भी, कल देखेंगे! मैंने चार बजे उठने की पक्की कसम खायी थी। लेकिन जिसने कसम खायी थी, वह सोया हुआ है। सुबह सात बजे फिर कसम खायी खा लेंगे, कल चार बजे फिर धोखा होगा। जिन्दगी भर ऐसे ही नींद में बीतते हैं। अगर हम अपने कृत्यों को देखें तो हम यह न कह सकेंगे कि हमने किये, क्योंकि अगर हमने किये होते तो इनमें से बहुत से तो किये हीं नहीं जा सकते थे।
दुनिया भर की अदालतों को पता है कि सैकड़ों अपराधियों ने अदालतों मे
यह कहा है कि हमने यह खून नहीं किया, हमने यह चोरी नहीं की, लेकिन मजिस्ट्रेट झूठा मानता है, अदालत झूठा मानती है कि गवाह हैं, प्रमाण हैं, चोरी हुई है। लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि वे अपराधी झूठ नहीं कह रहे। हैं। जब उन्होंने चोरी की, तब वह होश में नहीं थे। जब उन्होंने हत्या की, तब वे होश में नहीं थे। होशपूर्वक हत्या करना बहुत मुश्किल है। होशपूर्वक चोरी करना बहुत मुश्किल हैं। मेरी दृष्टि में और योग की दृष्टि में, पुण्य मैं उसे कहता हूँ, जिसे करने की अनिवार्य शर्त बेहोशी है। पाप का मतलब है, ऐसा काम जिसे बिना बेहोश हुए नहीं किया जा सकता है। बेहोश होंगे तो ही कर सकते हैं। अनिवार्य शर्त है, बेहोशी होना।
इसलिए जब हम कहते हैं किसी आदमी से कि उस आदमी से कि उस आदमी का काम पशुओं जैसा है तो इसका यह मतलब नहीं होता कि पशु ऐसे काम करते हैं। आदमी जैसे काम कोई पुश नहीं करते। नहीं, लेकिन पशुओं जैसे का मतलब बहुत दूसरा है। उसाक मतलब यह है कि जिस भांति पशु सेल्फ अनकॉन्शस हैं, जैसे उनहें स्वयें का पता नहीं, ऐसे ही आदमी को भी स्वंय का पता नहीं है। यह काम पशुओं जैसा इस अर्थ में है, अन्यथा न किसी कुत्ते ने हिटलर जैसा काम किया और न किसी सांप ने चंगेज खां का काम किया है। न ही किसी पुश ने ऐसी बुराइयां की हैं जैसी आदमी नाम के पशु ने की हैं कि मानसिक तल पर यह आदमी सबको भूलकर यह काम कर रहा है, बेहोश हे, यह होश में नहीं है। इसलिए छोटे बच्चों को, सात साल के नीचे तक के बच्चों को अदालत अपराधी मानकर, दण्ड देने के लिए राजी नहीं होती, क्योंकि हम मानते हैं कि बच्चे को अभी होश नहीं आया। लेकिन सत्तर साल के बूढ़े को आ जाता है, इसकी अदालत पक्की गारण्टी दे सकती हे? सत्तर साल के बूढ़े को भी नहीं आ जाता, हम मान के चलते हैं कि आ गया हे। क्योंकि हम सत्तर साल के बूढ़े आदमी के भी कृत्य देखें तो पता चलेगा, नींद में चलते हैं, बेहोशी में चलते हैं। सत्तर साल की जिन्दगी में अगर कोई आदमी सात मिनट के होश से भर जाता हो तो काफी बड़ी मात्रा है। सात मिनट भी! अगर किसी आदमी के सत्तर साल की जिन्दगी में कॉन्शसनेस के कुछ क्षण हों तो यह पर्याप्त है उस आदमी को महावीर, बुद्ध और कृष्ण बनाने के लिए। लेकिन इतने क्षण भी नहीं होते। हम जिये जाते हैं बेहोश!
लेकिन मैंने कहा कि आदमी शुरू ही उस दिन होता है, जिस दिन सेल्फ कॉन्शसनेस, स्व-चेतना शुरू होती है। तो हम सिर्फ आदमी होने की सम्भावना हैं, आदमी नहीं। सिर्फ आदमी होने का अवसर है, आदमी नहीं। हम सिर्फ बीज रूप से सम्भव हैं कि हम स्व-चेतन हो सकते हैं, लकिन हो नहीं गये। इसलिए हमारी कठिनाई रही सदा कि बुद्ध या महावीर जैसा आदमी हो तो हम उनके आदमी कैसे कहें, हम उनको भगवान कहते हैं। भगवान का कुल कारण इतना है कि हम अपने को आदमी कहते हैं, जोकि हम आदमी ठीक अर्थों में नहीं हैं। तो अब उनको हम कहां रखें? अगर आदमी कहें तो हमारे साथ रखना पड़े। हम एक नयी कैटेगरी खोजते हैं, भगवान की।
अच्छा यह होता है कि उनको हम आदमी कहें और अपने को सब-हयूमन, उप-आदमी कहें। अभी आदमी होने की तरफ हैं, अभी आदमी हो नहीं गये। यही उचित है। यही सही है। लेकिन हमारी जिन्दगी में भी कभी-कभी एकाध क्षणों को हम चेतन हो जाते हैं। वे क्षण ही हमारी जिन्दगी के आनन्द के क्षण हैं, क्योंकि वे

क्षण ही हमें हमारे स्वरूप की एक झलक, एक बिजली कौंध जाती है जैसे-ऐसी झलक दिखा जाते हैं।
योग चेतना को इन दो हिस्सों में बांटता है-स्व-चेतन और स्व-अचेतन। जो अचेतन हैं स्व की दृष्टि से, वे तो स्व-अचेतन हैं ही। हम जिन्हें कि स्व-चेतन होना चाहिए, हम बहुत हिस्सों में पशुओं के साथ हैं, बहुत हिस्सों में पौधों के साथ है, बहुत हिस्सों में पशुओं के साथ हैं। थोड़ा सा हिस्सा हमारा आदमी हुआ है।, बहुत थोड़ा-सा हिस्सा। जैसे कि बर्फ के एक टुकड़े को हम पानी में डाल दें तो जरा-सा हिस्सा बाहर निकला रहता है, दसवां हिस्सा। और नौ हिस्से नीचे डूबे रहते हैं। हम ऐसे ही हैं। हमारे नौ हिस्से तो नीचे डूबे हैं, अंधेरे में, एक हिस्सा थोड़ा-सा सतह के ऊपर आकर आदमी हुआ है। इसलिए आदमी की बैचनी बहुत ज्यादा हैं, पशु बेचैन नहीं हैं। कोई पशु आत्मघात नहीं करता, सुसाइड नहीं करता। जिस दिन कोई पशु सुसाइड कर ले, उस दिन समझ लेना कि बहुत दिन तक वह पशु, पशु नहीं रहेगा। उसने आदमी होना शुरू कर दिया। कोई पशु आत्महत्या नहीं करता। इतनी चिन्ता ही पैदा नहीं होती कि आत्महत्या की जा सके। कोई पशु हंसता नहीं, आदमी को छोड़कर। अगर रास्ते पर भैंस हंसती हुई मिल जाये तो आप फिर दुबारा उस रास्ते पर नहीं निकलेंगे। कोई पशु हंसता नहीं, बात क्या है? कोई पशु इतना दुखी नहीं है। कि हंस
के अपने दुख को भुलाये। हंसी दुख का भुलाने की व्यवस्था है। इसलिए दुनिया में जितना दुख बढ़ता जाता है, उतना हमें मनोरंजन के साधन खोजने पड़ते हें। सिनेमा है। टेलीविजन है, रेडियों है, नाच है, गीत है। और वे सब चुक जाते हैं और आदमी कहता है और नया लाओ, क्योंकि अब वे बहुत ऊब गये हैं।
इस समय सारी दुनिया की पचास प्रतिशत ताकत मनुष्य को मनोरंजन के साधन देने में लग रही है। और इस वक्त जो आदमी को मनोरंजन दे पाता है, वही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। जैसे अभिनेता। उनके महत्त्वपूर्ण होने का और कोई कारण नहीं है। वह आपको थोड़ी देर तक मनोरंजन दे पाते हैं। इतने दुखी हैं आप कोई आपका थोड़ा-सा मनोरंजन दे पाये तो महत्त्वपपूर्ण हो जाता है।
कोई पशु हंसता नहीं, क्योंकि पशु इतना दुःख में नहीं है कि हंसी की जरूरत हो। हंसी जो है वह सेफ्टी वाल्ब है। जैसे कि कोई भी भाप का यन्त्र हो तो सेफ्टी वाल्व लगाना होता है। कि भाप ज्यादा हो जाये तो वाल्व टूट जाये और भाप बाहर निकल जाये, अन्यथा सबकी जान खतरे में हो जायेगी। तो हंसी जो हैं, आदमी का सेफ्टी वाल्व है। जब भीतर बहुत तकलीफ इकट्ठी हो जाये तो उसके रिलीफ के लिए, उससे मुक्त होने के लिए हंसी है। इसलिए कोई पशु हंसता नहीं है।, क्योंकि इसका तनाव, इतनी एंग्जाइटी, इतनी चिन्ता नहीं है।
आदमी की चिन्ता क्या है?
आदमी की चिन्ता यह है कि उसका एक हिस्सा तो स्व-चेतन हो गया है बाकी हिस्सा अचेतन में पड़ा हुआ है। आदमी की तकलीफ वही हैं, जो नरसिंह अवतार की तकलीफ रही होगी कि आधा हिस्सा जानवर का है और आधा हिस्सा आदमी का हो गया है। नरसिंह जिस मुसीबत में पड़े होंगे, उसी मुसीबत में हम सब हैं। तो लेग मुझसे पूछते हैं कि नरसिंह अवतार हो कैसे सकता है? मैं उनसे कहता हूँ कि सभी आदमी नरसिंह के अवतार हैं और आधा-ही-आधा बंटवारा होता तो भी एक बैलेन्स, एक सन्तुलन हो जाता। जरा-सी खोपड़ी बहुत छोटा-सा हिस्सा पूरी खोपड़ी भी नहीं आदमी हो गयी है बाकी सारा-का-सारा हिस्सा पशु का है। सारी जिन्दगी पशु की है।, अचेतन का है। जरा-सा कोना बुद्धि का, पूरा मन भी नहीं बुद्धि का जरा-सा कोना! जैसे बड़ा हिस्सा एक अन्धकार में हैं और जैसे दीया एक कोने में जलता है, उसी कोने में बुझ जाता है। और अगर नहीं बुझता है किसी का तो आदमी शराब पीकर बुझा लेता है। हजार तरह के नशे करके बुझा लेता हे। शराब पीने में इसीलिए राहत मिलती हैं कि आपको जो हिस्सा थोड़ा-सा बेचैनी डालता था, आदमी हो गया था।
वह भी नीचे गिर जाता है। बर्फ का पूरा टुकड़ा पानी में डूब जाता हैं अब
आप भी पशु की दुनिया में हो गये, अब कोई चिन्ता नहीं है। इसलिए नींद राहत देती है, क्योंकि नींद में आप शत-प्रतिशत नीचे डूब गये। इसलिए सुबह आप ताजे उठते हैं। अब आप पशु की दुनिया से फिर वापिस लौट रहे हैं, जहाँ कोई

चिन्ता न थी, जहाँ कोई परेशानी न थी। अब फिर आदमी की दुनिया शुरू होगी।
चौबीस घण्टे यह हो रहा है।
तो जब मैं कहता हूँ कि आदमी स्व-चेतन है तो मेरा मतलब इतना है कि स्व-चेतन होने की सम्भावना है। आदमी के साथ थोड़ा-सा हिस्सा स्व-चेतन हुआ है।
योग कहता है, अगर पूरा स्व-चेतन हो जाये तो आदमी ध्यान को उपलब्ध हो जाता है। अगर उसके सब अंधेरे कोने प्रकाश से भर जाये तो आदमी समाधि को उपलब्ध हो जाता है।
सव-ज्ञान, सेल्फ-नॉलेज तभी होगी, जब मेरा पूरा-का-पूरा भवन मेरे जीवन का, मेरे प्रकाश से भर जाये। यह एक छोटे-से दीये की बत्ती से काम नहीं चलेग। यह पूरे घर में सूर्य का प्रकाश चाहिए। इसका कोना-कोना उजाले से भर जाये, अन्यथा मैं सदा ही टूट रहूंगा, दो हिस्सों में। वह जो हिस्सा है उजाले से भरा, वह निर्णय करेगा कि मैं घर में सांप न आने दूंगा। लेकिन उस अंधेरे के बाबत क्या निर्णय करेगा, वहाँ सांप निवास कर ही रहे हैं! और थोड़ी बहुत देर में जब सांप सड़क की रोशनी पर आ जायेंगे दीये की, तब हम चिल्लाकर कहेंगे कि मेरा व्रत टूट गया, मैंने तो कसम खायी थी कि घर में सांप न आने देंगे।
अब आप कसम खाते हें कि मैं अब क्रोध न करूंगा ता आप उस छोटे-से हिससे में कसम खा रहे हैं जो प्रकाशित हैं और बाकी अंधेरे नौ हिस्सों के बाबत आप फिक्र ही छोड़ देते हें जो अंधेर में डूबे हैं, जहाँ क्रोध अभी तैयार हो रहा है, ढल रहा है। जब आप कसम खा रहे हैं। तब आपके भीतर किसी कोने में क्रोध तैयार हो रहा है। और आपका पूरा भीतरी हिस्सा हैरान होता होगा कि आप क्या कसमें खा रहे हैं? यह ऐसे ही जैसे घर में भीतर बैठा हुआ चपरासी, जिसे पूरे घर का कोई भी पता नहीं है, भवन के सम्बन्ध में निर्णय लेता रहे। उसे कुछ भी पता नहीं कि भीतर क्या हो रहा है। अंधेरे हिस्सों में सब तैयारियां चल रही हैं।
आपने ब्रह्मचर्य की कसम खा ली, लेकिन आपके सेक्स-सेण्टर सब अंधेरे में डूबे हुए हैं। वहाँ तक आपकी बुद्धि की कोई रोशनी नहीं गयी है। तो आपने खोपड़ी के एक कोने से तय कर लिया है कि ब्रह्मचर्य की कसम खाता हूँ? लेकिन आपके सेक्स-केन्द्र को पता नहीं चलता इस कसम का कि आपने कोई कसम खायी। वह अपना काम जारी किये चले जाते हें। वहाँ से सेक्स उठेगा, वही आपकी बुद्धि- उद्धी को, सबको दबा डालेगा, क्योंकि वह नौ-गुना ताकतवर है और बुद्धि सिर्फ एक हिस्सा है। तब आप रोयेंगे, चिल्लायेगे, फिर कसम खायेंगे, लेकिन कभी न समझ पायेंगे कि कसमें बेकार हैं। असली सवाल यह नहीं है कि इस छोटे-से हिस्से से कसमें खाये, असली सवाल यह है कि इस छोटे-से हिस्से को बड़ा करें और पूरा व्यक्तित्व आपका चेतना हो जाये। फिर कसम खाने की जरूरत न होगी। इसलिए मैं आपको कहता हूँ, योग किसी को कसम खाने के लिए नहीं कहता, व्रत
के लिए नहीं कहता। सिर्फ अज्ञानियों के सिवाय दुनिया में किसी ने भी व्रत नहीं लिये हैं। व्रत का कोई अर्थ ही नहीं है। असली सवाल दूसरा है, असली सवाल यह है कि आपका पूरा-का-पूरा व्यक्तित्व रोशन हो जाये, फिर व्रत की जरूरत न पड़ेगी। लेकिन हम व्रत लिये चले जायेंगे! किसके खिलाफ लेते हें व्रत? अपने ही अंधेरे हिस्से के खिलाफ कसमें खाते हैं और अंधेरे हिस्से में आपकी कोई भी गति नहीं है। आपकी कोई पहुंच नहीं है, आपके सारे निर्णय खोपड़ी के एक कोने मे बैठे रहते हैं। पूरी खोपड़ी भी रोशन नहीं है।
अभी वैज्ञानिक इस बात से राजी होते हैं योग की यह दृष्टि कि अभी मनुष्य का पूरा मस्तिष्क भी चेतन नहीं हैं अब विज्ञान इसको सहमति देता है। इसलिए मैं बार-बार दोहरा रहा हूँ कि योग विज्ञान है, क्योंकि प्रतिदिन विज्ञान जितनी खोजें करता है, उतनी योग की अनुभूतियां और योग की अन्तर्दृष्टियां प्रमाणित होती चली जाती हैं। अब वैज्ञानिक भी कहते हैं कि आदमी की आधी से ज्यादा खोपड़ी बिल्कुल निष्क्रिय पड़ी है, उसमें कोई काम ही नहीं होता, वह बन्द पड़ी है। यह भी सबकी नहीं, जो बुद्धि से बहुत काम लेते हैं, उनकी बात है।
जो बुद्धि से बहुत कम काम लेते हें, उनका तो तीन चौथाई मस्तिष्क बन्द पड़ा है और जितना हिस्सा काम करता है, एक चौथाई या आधा बड़े-से-बड़े

प्रतिभाशाली आदमी का भी आधा मस्तिष्क काम करता है और आधा बन्द पड़ा है। साधारण मनुष्य का तो आधा भी काम नहीं करता है। आधे का भी कोई हिस्सा काम करता है। और यह जितना हिस्सा काम करता है, चौथाई या आधा यह भी अपनी कैपेसिटी, अपनी क्षमता का पूरा काम नहीं करता। बड़े-से-बड़ा बुद्धिमान आदमी भी पन्द्रह प्रतिशत अपनी क्षमता का उपयोग करता है। बाकी पचासी प्रतिशत क्षमता बेकार पड़ी रह जाती है वह आधे को छोड़ दें, उसकी बात नहीं कर रहे हैं, जितना हिस्सा काम कर रहा है, उसकी सौ प्रतिशत क्षमता अगर माने तो हम पन्द्रह प्रतिशत क्षमता को जिन्दगी में उपयोग करते हैं।
अब इसके लिए तो वैज्ञानिक आंकड़े, प्रमाण, खोज-बीन सब सहयोगी हो गये हैं कि आदमी का इतना छोटा-सा हिस्सा काम करता है। और यह हिस्सा भी आमतौर से अठारह साल के बाद शान्त रहता है, फिर काम-वाम नहीं करता। इसलिए आपके पास करीब-करीब उतनी ही बुद्धि होती है, जितनी अठारह साल तक आपने विकसित की है। इस भ्रम में आप मत रहना कि अस्सी साल के हो गये तो बुद्धि आपके पास ज्यादा हो गयी होगी। बहुत कम लोग हैं जो अठारह साल के बाद अपनी बुद्धि को विकसित करते हैं। अधिक लोग अठारह साल तक जो हो गया, उसी बुद्धि के द्वारा अनुभवों को इकट्ठा करते चले जाते हैं। अनुभव बढ़ जाते हैं, बुद्धि नहीं बढ़ती। अनुभव का संग्रह बढ़ जाता है, बुद्धि नहीं बढ़ती। लोग उतनी ही बुद्धि में अनुभव किये चले जाते हैं। अनुभव बढ़ जाते हैं। तो अस्सी साल के आदमी के पास अनुभव बहुत होते हें, लेकिन बुद्धि उतनी ही होती हैं, जितनी अठारह साल की होती है।
पिछले महायुद्ध में बड़ी हैरानी का अनुभव अमेरीका में हुआ हे। अमरीका
जो कि कहना चाहिए, सर्वाधिक शिक्षित, विकसित, बुद्धि का सर्वाधिक उपयोग करने वाला मुल्क है आज पृथ्वी पर। पिछले महायुद्ध में सैनिकों की बुद्धि का माप करके भर्ती करने का उन्होंने इन्तजाम किया जो बड़ी हैरानी हुई। लाखों सैनिकों की भर्ती ने जो नतीजे दिये, वे ये हें कि उन लाखों सैनिकों मे साल से़ऊपर की उम्र की बुद्धि नहीं थी। एवरेज तेरह साल की बुद्धि! तेरह साल सब रुक गया जैसे।
योग बहुत पूर्व से इस बात को कहता रहा है कि मनुष्य का पूरा मन भी रोशन नहीं है। अगर मनुष्य का पूरा मन रोशन हो जाये तो अद्भुत घटनाएं घटनी शुरू हो जाती हैं। जिनको आप सिद्धियां कहते हैं, योग उन्हें मन के उन हिस्सों के काम कहता है, जो निष्क्रिय हैं और कुछ भी नहीं हैं।
इसके लिए भी वैज्ञानिक प्रमाण धीरे-धीरे उपलब्ध होने शुरू हो गये हैं। अमेरीका में अभी एक आदमी है "टेड सीरिओ"। उसके मस्तिष्क के उस हिस्से का कुछ हिस्सा सक्रिय है जो आमतौर से निष्क्रिय होता हे। अब इसकी जांच के उपाय हैं कि मस्तिष्क का कौन सा हिस्सा काम कर रहा है। और मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्से काम करते हैं। और मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्से अलग-अलग काम करते हैं। जब आप पढ़ते हैं, जब मस्तिष्क का दूसरा हिस्सा काम कर रहा है, जब आप रोते हैं तो दूसरा हिस्सा काम करता है।? जब आप हंसते हैं तो दूसरा हिस्सा काम करता हैं। जब आप गीत गाते हैं तो दूसरा हिस्सा काम करता हैं और जब आप वीणा बजाते हैं तो दूसरा और जब प्रेम करते हें तो दूसरा। यहाँ तक भी कि यदि आप हिन्दी भाषा में बोलते हैं तो दूसरा हिस्सा काम करता है। और अगर आप मराठी भी बोलते हैं साथ मे तो आपके मस्तिष्क का दूसरा हिस्सा काम करता है। अंग्रेजी भी जानते हों तो तीसरा हिस्सा काम करता है। मस्तिष्क के लाखों केन्द्र हैं, जो अलग-अलग काम करते हैं।
टेड सीरिओ के मस्तिष्क के कुछ ऐसे हिस्से काम कर रहे हैं, जो साधारणतः काम नहीं करते। वह आंख बन्द कर ले अमेरीका में और उससे कहा जाये, यहाँ पूना में, आज रात संघवी फैक्ट्री में क्या हो रहा है तो वह आंखें बन्द करके पन्द्रह मिनट बैठा रहेगा, फिर आंख खोल देगा बतायेगा नहीं, आंख खोल देगा और उसकी आंख को कैमरे के सामने रखकर फोटो ले ली जायेगी आंख की ओर आपके इतने सिरों का चित्र, इस भीड़ को चित्र उसकी आंख में कैमरा पकड़ लेगा। अब यह अगर दो हजार साल पहले की किसी किताब में वर्णन होता तो वह कहते गप्प होगा। यह आदमी अभी जिन्दा है और सारे अमेरीका के सब विश्वविद्यालयों ने उसकी परीक्षा की है, जगह-जगह उसने प्रयोग करके दिखाये। थोड़ा-सा फर्क होगा, अगर

हमारा फोटोग्राफ अगर हम यहाँ से भेजें और उसके फोटोग्राफ में इतना फर्क होगा, जैसे फीकी कॉपी हो, बस।
इससे ज्यादा फर्क नहीं होगा। थोड़ी धुंधली कॉपी इससे ज्यादा फर्क नहीं होगा। उसकी आंख इतनी दूर बैठे हम सबके चित्र को पकड़ पाती हैं तो अगर महाभारत कहता है कि संजय अन्धे धृतराष्ट्र के पास बैठकर और दूर-सैकड़ों मील दूर होते हुए कुरुक्षेत्र के युद्ध की खबर देता रहता तो टेड सीरिओं कर सकता है तो संजय को क्या अड़चन हैं? आंख इतनी दूर देख सकती हैं आंख कितनी ही दूर देख सकती हैं, लेकिन फिर मस्तिष्क के दूसरे हिस्से रोशन होने चाहिए। रूस से एक उदाहरण आपको दूँ। फयादोव एक वैज्ञानिक है रूस का। अमरीका
को छोड़ दें, रूस तो नास्तिक मुल्क है। और रूस तो आत्मा-परमात्मा को मानने को अब तक राजी नहीं हैं, लेकिन फयादोव ने एक हजार मील दूर तक टेलीपैथिक सन्देश भेजकर बिना किसी यन्त्र के, सिर्फ विचार के सन्देश भेजकर बडे़ प्रयोग किये। मास्को में बैठकर तिफलिस तक उसने सन्देश भेजे हें, सिर्फ आंख बन्द करे। वह मास्को में बैठकर सन्देश सोचेगा और तिफलिस में पकड़ें जायेंगे। तिफलिस में एक दिन प्रयोग किया और तिफलिस के बगीचे में दस नम्बर की बेंच पर एक आदमी आकर बैठा। इस आदमी को कोई पता नही है, राहगीर है, थका- मांदा, दोपहर में विश्राम करने बैठा है, इसे कुछ भी पता नही है। झाड़ियों में छिपे हुए लोगों ने फयादोव को वायरलेस से खबर दी कि दस नम्बर की सीट पर एक आदमी बैठा है, तुम अगर पांच मिनट में सन्देश भेजकर इसे सुला दो हम समझें। अब मास्को में बैठे हुए फयादोव पांच मिनट तक अपने मन में सोचता रहा, उस दस नम्बर की बेंच पर बैठे आदमी को सो जाना चाहिऐ। वह आदमी पांच मिनट में गहरी नींद में सोकर खर्राटे भरने लगा। उन छिपे हुए मित्रों को लगा, स्वभावतः हो सकता हैं थका-मांदा हो और अपने-आप सो गया हो। संयोग सम्भव है। तो उन्होंने खबर भेजी कि वह आदमी तो सो गया है, ठीक सात मिनट पर तुम उसे वापिस उठा दे तो हम समझें। ठीक सात मिनट पर वह आदमी चौंककर उठ आया। उसने चारों तरफ देखा, जैसे किसी ने आवाज दी हो। वे लोग झाड़ी से निकल आये, उन्होंने कहा तुम किसको देख रहे हो? उसने कहा कोई मुझसे निरन्तर कह रहा है कि उठो, जागो, अब सोय मत रहो, ठीक सात मिनट पर उठ जाना है। कौन कह रहा है? वहाँ कोई भी नहीं है। वह आदमी तो सैकड़ों मील दूर वहाँ मास्कों में बैठा हुआ है।
मन भी पूरा लग जाये तो आदमी महाशक्ति का आविष्कारक हो जाता है। ऐसी और सैकड़ों सम्भावनाएं मनुष्य के मस्तिष्क में हैं। योग उनको सिद्धियां कहता था। हम उन्हें कोई भी नाम दें, इससे फर्क नहीं पड़ता है। हमारा पूरा मस्तिष्क भी जागा हुआ नहीं है। जितने दीन-हीन हम दिखाई पड़ रहे हैं, यह दीन-हीनता हमारे सोये होने की दीन-हीनता है। और जो बेचैनी हमारी जिन्दगी में बनी रहती हे यह यही बेचैनी है कि हम जो सम्पत्ति लेकर आये हैं, हम उसका पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। योग कहता है, मन के ये सारे-के-सारे केन्द्र सजग किये जा सकते और यह खोपड़ी के भीतर छिपा हुआ मस्तिष्क है, यह पूरा व्यक्तित्व नहीं है। ठीक इतना ही बड़ा मस्तिष्क हृदय के पास भी छिपा हुआ है। उसकी तो हमें खबर ही मिलनी बन्द हो गयी है। कभी-कभी किसी की जिन्दगी में थोड़ा प्रेम झलकता है तो उसे हृदय के पास केन्द्रों का ख्याल आता है, अन्यथा नहीं ख्याल आता। और जिन्दगी से प्रेम रोज-रोज कम होता चला
गया है। प्रेम के नाम पर और हमने बहुत तरह के नकली सिक्के चलाये हुए हैं,
जो जिन्दगी में चलते रहते हैं। मस्तिष्क पूरा-का-पूरा भी विकसित जो जाये
तो हृदय के पास भी अपना मस्तिष्क है, वह बिल्कुल अधूरा रह जाता है, वह तो छूता ही नहीं, क्योंकि हमारी सारी शिक्षा मस्तिष्क है, तो थोड़ा-बहुत मस्तिष्क तो विकसित होता है, लेकिन हृदय की तो कोई शिक्षा नहीं है। वह बिल्कुल विकसित नहीं होता। वह अविकसित रह जाता है। और आदमी बहुत भीतरी तनाव में भर जाता हे और हृदय और मस्तिष्क मिल कर भी पूरा मनुष्य नहीं है। मनुष्य के
और केन्द्र हैं और योग मनुष्य का ेसात केन्द्रों में बांटता है। और वह
कहता है, मनुष्य के पास सात तलों पर व्यक्तित्व के विकास की सम्भावना है।
ये मोटे तल हैं, यह मोटा विभाजन है, विभाजन और ज्यादा भी किये जा सकते हैं।

बुद्ध ने नौ विभाजन किये हैं। वह जगत में हुए महायोगियों में से एक हैं। पतंजलि ने सात विभाजन किये हैं। कोई और विभाजन भी कर सकता है, क्योंकि सैकड़ों केन्द्र हैं मनुष्य के भीतर, जिन सबकी अपनी क्षमताएं हैं और वे सब क्षमताएं अगर पूरी विकसित हों और पूरा मनुष्य जाग जाये तो मनुष्य अगर उस स्थिति में कह सके, "अहं ब्रह्मास्मि", मैं ब्रह्म हूँ, तब उसके वक्तव्य में अतिशयोक्ति नहीं होगी।
लेकिन घर में बैठे हुए ब्रह्मसूत्र से वचन निकालकर, उपनिषद से महावाक्य खोज बैठे हैं किताब रखे हुए, मिट्टी के तेल के दीये जला के बैठे हैं और कह रहे हैं अहं ब्रह्मास्मि!
मिट्टी के तेल से काम नहीं चलेगा और बाहर के दीये में पढ़े गये शास्त्र काम के नहीं हो सकते। भीतर का दीया जले और भीतर की ज्योति पूरे सात केन्द्रों तक जल जाये, तब उस समय जिस शास्त्र का उद्घाटन होगा, जिस वेद का अनुभव होगा, वह वेद किसी किताब में लिखा हुआ नहीं है। और उस क्षण जो उच्चारण होगा, जो उद्घोष होगा "अहं ब्रह्मास्मि" का, वह कहीं शास्त्र में आया नहीं होगा, स्वयं की समग्र सत्ता से आया होगा।
योग को तो। आदमी जो मानता है एक शास्त्र और उसमें बहुत-से अनपढ़े अध्याय पड़े हैं-अनजाने, अपरिचित, जिन पर हम कभी रोशनी लेकर नहीं गये, जिनका हमें कोई पता नहीं रहा है ऐसे ही, जैसे कोई सम्राट अपने महल में सोया हो और भूल गया हो अपनी तिजोरियों को, अपने धन को और सपना देख रहा हो कि मैं भिखारी हो गया और सड़क पर भीख माँग रहा हूँ और कोई एक पैसा नहीं दे रहा है। और वह रो रहा है और पेरशान हो रहा है और चिल्ला रहा है। करीब-करीब हम ऐसे सम्राट की हालत में हैं, जिन्हें अपनी पूरी सम्पत्ति का पता ही नहीं है। अगर कोई हमसे कहे तो भरोसा नहीं होगा। कैसे भरोसा हो। कि हमारे पास और इतनी सम्पत्ति! नहीं-नहीं। अगर उस सम्राट को उसके सपनों में कोई कहे कि तुम और भीख माँगते हो? तुम तो सम्राट हो! वह सम्राट कहेगा, कैसा मजाक करते हो? मजाक मत करो, एक पैसा दान करो, समझ में आयेगा।
ठीक, हमारी स्थिति वैसी है।
योग कहता है, हमारे भीतर अनन्त सम्पदाओं का विस्तार है। लेकिन वे सारी सम्पदाएं स्व-चेतन होने से जागेंगी, उसके अतिरिक्त कोई जगने का उपाय नहीं है। अब इसे थोड़ी समझें। हमारे व्यक्तित्व के सारे केन्द्र कॉन्शसनेस से जगते हैं और सक्रिय होते हैं। जितनी चेतना उन पर इकट्ठी होती है, उतने सक्रिय होते हैं। जिस हिस्से पर चेतना इकट्ठी होती है, वही सक्रिय हो जाता है।
छोटे बच्चों की सेक्स के केन्द्र पर कोई सक्रियता नहीं होती तो उनको पता भी नहीं होता। चौदह वर्ष के बाद प्रकृति उस केन्द्र को सक्रिय करती है तो होश आना शुरू होता है। तो केन्द्र सक्रिय हो जाता है। वह प्रकृति करती है। इसलिए अगर प्रकृति सेक्स के केन्द्र को सक्रिय न करे तो आपको पता नहीं चलेगा। कैसे पता चलेगा? लेकिन प्रकृति को उस केन्द्र से काम लेना है, जीवन को बनाये रखने का, इसलिए उस केन्द्र को वह खुद सक्रिय करती है, वह आप पर नहीं छोड़ती। पशुओं में भी सक्रिय करती है, पौधों में भी सक्रिय करती है, समस्त जीवन में खुद सक्रिय कर देती है।
मस्तिष्क के केन्द्र को समाज सक्रिय करवाता है- शिक्षा से, समझाने से, क्योंकि जिन्दगी चलानी मुश्किल हो जोयगी। तो गणित सिखाता है, भूगोल सिखाता है। उतनी चीजे सिखाता है समाज, जितने से आदमी की जिन्दगी चलनी आसान हो जाये। लेकिन मस्तिष्क के केन्द्र को समाज सक्रिय करवा देता है थोड़ा, सेक्स के केन्द्र को सक्रिय करवा देती हे प्रकृति। बीच के सब केन्द्र बन्द पड़े रह जाते हैं। वे कभी सक्रिय नहीं होते। उनकी किसी को जरूरत नहीं है। समाज को उनकी जरूरत नहीं, बल्कि समाज नहीं चाहेगा कि कुछ केन्द्र सक्रिय हो। जैसे व्यक्ति का प्रेम अगर बहुत सक्रिय हो जाये तो समाज पसन्द नहीं करेगा। समाज कहेगा कि प्रेम का केन्द्र बहुत सक्रिय न हो। परिवार भी चाहेगा कि प्रेम का केन्द्र बहुत सक्रिय न हो। पत्नी भी चाहेगी, प्रेम का केन्द्र बहुत सक्रिय न हो। माँ भी चहेगी, बाप भी चाहेगा। उसका कारण है, क्योंकि जब प्रेम के केन्द्र पूरी तरह सक्रिय हों तो फिर प्रेम किसके साथ

और किसके साथ नहीं, यह फासला टूटना बन्द हो जाता है। फिर माँ यह नहीं कर सकती कि मुझी को प्रेम करो। अगर प्रेम का केन्द्र ठीक से सक्रिय हो जाये तो बच्चा सभी को प्रेम करने लगेगा। तो माँ की ईर्ष्या उसे रोकेगी। पत्नी नहीं चाहेगी कि पतिउसका किसी को भी प्रेम से देखने लगे। उसकी ईर्ष्या उसे रोकेगी। सारा समाज कोशिश करेगा कि प्रेम का केन्द्र सक्रिय न हो पाये, क्योंकि प्रेम का केन्द्र खतरनाक न हो जाये। इसलिए उसको दबाने की कोशिश करेगा, काट डालने की कोशिश करेगा। और दूसरे केन्द्र हैं, उनको तो समाज और भी बर्दाश्त नहीं करेगा। अब जैसे यह टेड सीरिओ है, इस तरह के दुनिया में बहुत लोग हो जायें तो समाज इनके खिलाफ कोई कानून बनाने की कोशिश करेगा। अभी ऐसी एक घटना घटीं इण्डोनेशिया में एक आदमी है, टोनी उसका नाम है।
और इस सदी की महत्त्वपूर्णतम घटनाओं में से महत्त्वपूर्ण घटना टोनी की जिन्दगी में एशिया, इण्डोनेशिया में घट रही है। लेकिन सारा समाज, अदालतें, कानून, सब उसके खिलाफ खड़े हो गये हैं। टोनी ने एक प्रयोग किया है जो योरोप के बहुत गहरे प्रयोगों में से एक है। स्प्रिचुअल सर्जरी का-आध्यात्मिक शल्य चिकित्सा, आध्यात्मिक सर्जरी। यह सब विधि ख्याल में नही पड़ती। टोनी किसी भी तरह का, जैसे आपके पेट में एपेडिक्स है तो टोनी बिना किसी औजार के दोनों हाथ, नंगे हाथ आपके पेट पर रख देगा, आँख बन्द करेगा, परमात्मा से प्रार्थना करेगा और दोनों हाथ आपके पेट में प्रवेश कर जायेंगे। चमड़ी जगह दे देगी बिना किसी औजार के! खाली हाथ आपके पेट के भीतर पहुँच जायेंगे। और ये पच्चीसों मेडिकल वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, सर्जनों के सामने यह घटना हो चुकी है। उसकी सब फिल्में ली जा चुकी हैं, सारी दुनिया में उनका प्रदर्शन हो चुका है।
उसके हाथ भीतर पहुँच जायेंगे, उसकी आँखें बन्द ही रहेंगी। वह आपके भीतर, खुले पेट के भीतर आपके अपेण्डिक्स को पकड़ेगा, हाथ से ही वापस खींचकर बाहर निकाल देगा, तोड़ के बाहर रख देगा। दोनों हाथ आपके पेट पर वापस फेरेगा, आपकी कटी हुई चमड़ी वापस जुड़ जायेगी। और दो दिन के बाद कोई निशान भी देखने को नहीं मिलेंगे कि पेट को कोई काटा गया था! अब ऐसे आदमी की कीमत होनी चाहिए, लेकिन इण्डोनेशिया की सरकार उसके खिलाफ मुकदमा चला रही है और मेडिकल एसोसिएशन ने उसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर किया है कि उस आदमी के पास सर्जरी का लायसेन्स नहीं हे, वह सर्जरी कैसे कर सकता है? आदमी के पागलपन का कोई हिसाब है? क्योंकि उसके पास किसी मेड़िकल कॉलेज
का सर्टिफिकेट नहीं है, वह एम.डी. नहीं है तो वह सर्जरी कैसे कर सकता है? और अदालत तो उसके खिलाफ वक्तव्य देगी, क्योंकि कानून तो सदा से अन्धा है।
उस आदमी को सरकार ने हुक्म दिया है कि वह अब कहीं भी सर्जरी नहीं कर सकता। इस आदमी के पास पच्चीस मित्रों का एक समूह है। वे सब प्रार्थना और ध्यान करने वाले लोग हैं। उनसे पूछा जाता है तो वे कुछ भी नहीं बता सकते। वे कहते हैं कि हम कुछ भी नही जानते। हम परमात्मा के हाथ में छोड़ देते हैं। वह जो हमसे काम करवाता है, वह हम कर देते हैं। हम कुछ भी नहीं करते। लेकिन अगर यह आदमी बढ़ जाए तो मेडिकल प्रोफेशन का क्या होगा, सर्जन्स का क्या होगा? वह उसके खिलाफ उपद्रव करेंगे। वे इसको जालसाजी में फेंसायेंगे। यह गरीब आदमी है, सीधा-सादा आदमी है। उनके उपद्रव से परेशान होकर हाथ जोड़ लेगा कि ठीक है। मैं कुछ भी नहीं करता, माफी मांगे लेता हूँ।
इस दुनिया में बहुत बार बहुत से चमत्मार घटित हुए हैं हमने उन्हें बन्द किया है। और हमने सदा ऐसी व्यवस्था की है कि इस तरह की बातें न हो जायें, क्योंकि इन बातों के कारण हमारे जो एस्टेब्लिशमेण्ट होते हें, हमारी जो व्यवस्थित संस्थाएं होती हैं, सब दिक्कत में पड़ जाती हैं। पड़ ही जायेंगी, क्योंकि उन सबका क्या होगा? और फिर इन सब चीजों के आधार पर, जिनको हम बहुत वैज्ञानिकता कहते हैं, साइण्टिफिक आउटलुक कहते हैं, वह भी दो कौड़ी का हो जाता है, क्योंकि ये बातें कुछ और दूर की खबर लाती हैं। टेड सीरियों या टोनी जैसी लोगों के खिलाफ हम हो जायेंगे, क्योंकि हम कहेंगे कि ये बातें तो हमारी सारी व्यवस्था को तोड़ देंगी। अगर टेड सीरिओ दूसरे के घर के भीतर की चीजें देख सकता है। तो आज नहीं कल, हम चिन्तित हो जायेंगे। वह हमारी तिजोरी भी देख सकता है! हम इसे रोकने की कोशिश करेंगे। समाज योगी की

बहुत कीमती उपलब्ध्यियों को दबाने का काम करता रहा है और स्वभावतः जिन चीजों को बिल्कुल दबा दें, वह प्रगट होना बन्द हो जाती हैं, क्योंकि उनके प्रगट होने के अवसर, परिस्थितियाँ हम रोक देते हैं।
मेरे सामने और मेरे पास एक घटना घटी और तब मुझे लगा कि कितना आश्चर्य है। एक मित्र मेरे पास आते थे ध्यान करने। उनका बच्चा जो तीसरी क्लास में हिन्दी पढ़ता है, वह भी उनके साथ आता था। उन्होंने मुझे कहा कि यह बच्चा मेरे पास बैठा रहे तो कोई हर्ज तो नहीं हैं?
मैंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। अच्छा ही है कि आता है वे मित्र ध्यान करते थे, वह बच्चा भी उनके पास बैठकर ध्यान करने लगा। पिता तो बहुत गहरी गति नहीं कर पाये, लेकिन वह छोटा बच्चा बहुत गति कर गया। चार दिन उनको आना था, चार दिन बाद तो वह नहीं आये, पन्द्रह दिन बाद बहुत घबराये हुए आये और उन्होंने कहा कि आपने बच्चे को क्या कर दिया? उसे बुलाइऐ, हम नहीं चाहते कि वह ध्यान में जाये। मैंने पूछा क्या हुआ? उन्होंने कहा अजीब अजीब बातें होने लगी हैं। वह और उनकी पत्नी दरवाजा बन्द करके ताला लगा के, बच्चे को भीतर करके कि तुम घर में खेलना और हम किसी पड़ोसी के घर जा रहे हैं। जब वे लौटे तो बच्चा खिड़की पर खड़ा था और उसने कहा कि झूठ बोले, आप सिनेमा देखकर आ गये, आप मैटिनी शो में गये थे। तो मैटिनी शो में ही थे, बच्चे को धोखा देकर गये थे पर वे हैरान हुए। उन्होंने कहा तुम्हें पता कैसे चला? उसने कहा कुछ नहीं, जब कोई घर में नहीं था तो ध्यान करने बैठ गया और मुझे दिखाई पड़ा कि आप दोनों सिनेमा में बैठे हुए हैं। तो उन्होने कहा कि हम नहीं चाहते कि इस बच्चे में इस तरह की बात विकसित हो। लेकिन बेईमान बाप का मन हम नहीं चाहते, इसको हम नहीं चाहते कि ध्यान वगैरह हो, उपद्रव हो जायेगा!
आश्चर्यजनक लगता है, लेकिन ऐसा ही है। अगर आपके घर भी बच्चा इस तरह की बातें देखने लगे तो आप भी कहेंगे कि बस, बन्द क्योंकि आप लड़के को समझाते हैं कि सिगरेट मत पीना और खुद पीते हैं। वह लड़का कल कहेगा, कैसी बात कह रहे हैं पिताजी। आप मुझको रोकते है कि सिनेमा नहीं जाना और खुद जाते हैं। वह लड़का कल कहेगा कि कैसी बातें कह रहे हैं? जो आपने रोका हैं, वह सब आपने किया हैं तो आप बच्चों में प्रतिभाएं विकसित न होने देंगे। इसलिए पूरी मनुष्यता यौगिक विकास की खिलाफत में षड्यन्त्र करती रही है, जिसका हमें पता नहीं है। हम इन बातों को दबाने की कोशिश करेंगे और जब सारा समाज उनको दबायेगा और विकास का मौका न देगा।
आप थोड़ा सोचे यूनिवर्सिटीज बन्द कर दी जायें, कॉलेज और सब स्कूल बन्द
कर दिये जायें तो दुनिया में कितने लोग गणित जानेंगे? अगर दो हजार साल तक सब शिक्षा का काम बन्द कर दिया जायें तो दो हजार साल बाद शक होने लगेगा कि इतनी बुद्धि भी हो सकती है आदमी में कि हवाई जहाज उड़ाये!
इतनी बुद्धि हो सकती है कि चांद पर पहुँच जाये! लोग कहेंगे कि कैसे हो सकती है? बैलगाड़ी बनाना मुश्किल हो जायेगा, हवाई जहाज बनाना तो बहुत दूर की बात है। यह जो आज आदमी चांद पर पहुँच सकता है, यह दस-बीस हजार साल के बुद्धि के शिक्षण का परिणाम हैं अगर हम योग के द्वार कहे गये केन्द्रों पर भी दस-बीस हजार साल मेहनत करते तो आदमी जहाँ पहुँच जाता, उसकी आज कल्पना करना भी सम्भव नहीं है। कभी कोई एकाध आदमी पहुँचता है तो उसे पूजा का केन्द्र बना लेते हैं और भूल जाते हैं। लेकिन सब सम्भव है। मनुष्य के भीतर बहुत से तल हैं, लेकिन अचेतन में डूबे हैं, इसलिए हमें उनका कोई पता नहीं है।
योग मनुष्य को सात तलों में बांटता है। सात केन्द्रों में, सप्त चक्रो में मनुष्य के व्यक्तित्व को बांटता है। इन सातों चक्रों पर अनन्त ऊर्जा और शक्ति सोयी हुई हैं, जैसे एक कली में फूल बन्द होता है। कली देखकर पता भी नहीं चलता कि इसके भीतर ऐसा फूल भी होगा। ऐसा कमल खिलेगा, इतने दलों वाला कमल प्रगट होगा। कली भी बन्द होती हे। अगर किसी ने सिर्फ कमल की कलियां ही देखी हों और कभी फूल न देखा तो कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह कली फूल बन सकती है? हमारे पास जितने चक्र हैं, वे कलियों की तरह बन्द हैं। अगर वे खिल जायें तो हमें पता भी नहीं कि उनके भीतर क्या-क्या छिपा हो सकता है। कितनी सुगन्ध, कितना सौन्दर्य कितनी शक्ति! एक-एक चक्र के पास अनन्त शक्ति

छिपी है। वह लेकिन कलियां खिलें तो प्रगट हो सकती हैं, न खिलें तो प्रगट नहीं हाती।
कभी आपने कमल की कलियों को खिलते देखा है? कब खिलती हैं? सूरज जब निकलता है सुबह और रोशनी छा जाती है। तब। रात के अंधेरे में बन्द कलियां, सुबह खिल जाती हैं, सूरज के साथ। ठीक ऐसे ही जिस दिन हमारी चेतना का सूर्य एक-एक केन्द्र पर प्रगट होता है। तो एक-एक केन्द्र की कली खिलनी शुरू हो जाती है। भीतर भी हमारी चेतना का सूर्य है। उस तक पहुँचने से उसे हम ध्यान कहें या और कोई नाम दें, इससे फर्क नहीं पड़ता। हमारे भीतर होश का एक सूर्य है। उसका प्रकाश जिस केन्द्र पर पड़ता है, उसकी कली खिल जाती है चटक के और फूल बन जाती है। और उसके फूल बनते ही हम पाते है कि अनन्त शक्तियां हममें छिपी पड़ी थीं, वे प्रगट होनी शुरू हो गयीं।
ये जो सात चक्र हैं, यह प्रत्येक चक्र खोला जा सकता है और प्रत्येक चक्र की अपनी क्षमताएं हैं। और जब सातों खुल जाते हें तो व्यक्ति के द्वार-दरवाजें जिनकी मैं कल बात कर रहा था, वे अनन्त के लिए खुल जाते हैं। व्यक्ति तब अनन्त के साथ एक हो जाता है। चेतना, सिर्फ होश, इन चक्रों को कैसे खोल देगा? इस सम्बन्ध में भी कुछ वैज्ञानिक तथ्य आपको कहना चाहूंगा। बीस पच्चीस वर्ष के पूर्व वैज्ञानिकों को यह ख्याल नहीं था कि कान्शसनेस से, चेतना से किसी चीज में कोई फर्क पड़ सकता है। हम देखते भी नहीं हमने फकीरों की कहानियां सुनी हैं, योगीयों की, लेकिन वे कहानियां हो गयी हैं। अब जिन चीजों को करने की कला हम भूल जाते हैं, वे कहानियां हो जाती हैं। स्वाभाविक हैं, अगर तीसरा महायुद्ध हो जाये और दुनिया से ज्यादा नहीं, कुछ बड़े-बड़े वैज्ञानिक मर जायें तो फिर एटम बम बनाना सम्भव नहीं होगा। अभी दस-पच्चीस लोग ही उस सूत्र को जानते हैं, ज्यादा नहीं। अगर इन पच्चीस आदमियों को पकड़ कर हत्या कर दी जाये तो एटम बम नहीं बन सकेगा। और अब तो पच्चीस जानते हैं दस साल पहले पन्द्रह ही जानते थे। हिरोशिमा पर जब एटम बम गिरा, उसके पहले दुनिया में मुश्किल से चार आदमी थे सिर्फ उन चार आदमियों को अगर मार डाला जाये तो फिर एटम बम सिर्फ कहानी हो जायेगी, क्योंकि जब भी कोई कहेगा कि सच है, हम कहेंगे बनाकर बताओ। और तब मुश्किल हो जायेगा।
अगर तीसरा महायुद्ध हो जाये, जैसा कि कई दफे हो चुका महाभारत हुआ और
उस समय का सारा विज्ञान और सारी संस्कृति उस युद्ध के साथ नष्ट हो गयी, कहानियां रह गयीं। हम कहते हैं कि ये सब कहानियां हैं, कहानियां हैं ही अब। अगर तीसरा महायुद्ध हो जाये और सारी दुनिया नष्ट हो जाये, जैसा कि सम्भव है और जब भी दुनिया नष्ट होती हैं युद्धों में तो उस दुनिया में जो सर्वक्षेष्ठ विकिसित लोग होते हैं वे सबसे पहले नष्ट होते हैं। अगर बम गिरेंगे तीसरे महायुद्ध में तो पूना नहीं बचेगा, बम्बई नहीं बचेगा, दिल्ली नहीं बचेगा, लन्दन-न्यूयार्क नहीं बचेंगे।
अगर बच भी सके तो बस्तर की पहाड़ियों में छिपे हुए कुछ आदिवासी बच जायेंगे, हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों में रहने वाले कुछ लोग बच जायेंगे। इन पर कोई एटम बम गिराने की कोशिश नहीं करेगा। इनको खोज-खोज कर एटम बम गिराना बहुत महंगा भी पड़ेगा। लेकिन दुनिया के सब विकसित सेण्टर, यूनिवर्सिटीज, विज्ञान के भवन, सब गिर जायेंगे। यह पहले गिर जायेंगे। और पीछे जो बचेंगे, अविकसित लोग, उन्होने भी रेलगाड़ियां देखी थी। दो-तीन पीढ़ियों के बाद बच्चे कहेंगे कि नहीं हो सकती। ऐसा हो कैसे सकता है? क्या प्रमाण है? कोई प्रमाण नहीं रह जायेगा।
योग की कला के साथ भी वैसा हुआ है। बहुत बार कला विकसित होती है, फिर अनेक कारणों से खो जाती है। उनमें बड़ा कारण तो हम ही होते हैं कि हम उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते, क्योंकि उसके खतरे हैं। यह मैं आपसे कह रहा था कि चेतना से चीजों में अन्तर पड़ता है। ऐसा योग का तो बहुत सरल-सा प्रयोग है। सदा का कि चीजों मे अन्तर पड़ता है। चेतन होने से अन्तर पड़ता है। लेकिन अब विज्ञान इसके लिए राजी हुआ और राजी तब हुआ... हम एक कंकड़ को देखें तो कोई अन्तर तो नहीं पड़ता कंकड़ को कितना ही हम देखते रहें, क्या अन्तर पड़ता है? कंकड़ कंकड़ बना रहता है। कितनी चेतना एकाग्र करें, कंकड़ कंकड़ ही रहत हे।

लेकिन जब से इेलेक्ट्रॉन को देखने की कोशिक करते हैं तो इलेकट्रॉन की चाल डगमगा जाती है, ऐसे ही जैसे आप बाथरूम में नहा रहे हैं तो आप अपनी मौज में होते हैं, मुंह बिचकाते हैं, आईने में हंसते है, भूल जाते हैं, कितनी उम्र है? फिर अचानक आपको पता लगे कि कोई आपके बाथरूम के की-होल में झांक रहा है, आप एकदम सजग होकर खड़े हो जाते हैं। अगर फिल्मी गाना गा रहे थे तो एकदम से भजन गाने लगते हैं, कुछ और करने लगते हैं।
तो यह तो हम मान सकते हैं कि की-हाल में से आपको देखा जाय तो आप बदलते हैं, लेकिन वैज्ञनिकों का कहना है कि जब हम इलेक्ट्रॉन को बहुत खुर्दबीनों से देखते हैं तो वह जैसा चल रहा था, उसको बदलकर चलने लगता है तो बड़ी हैरानी की बात हैं
इसका मतलब यह हुआ कि ऑब्जर्वेशन जो है, निरीक्षण जो है, वह परिवर्तन
ले आता है। कल मैंने आपसे बात की थी एक ईसाई फकीर की जिसने आक्सफोर्ड की एक प्रयोगशाल मे बीजों को आशीर्वाद दिया है। उसी फकीर के एक बीज को आशीर्वाद देने के साथ एक और अद्भुत घटना घटी। वह अपने गले में क्रास लटकाये हुए था और हाथ जोड़कर उस बीज के ऊपर झुका और उसने प्रार्थना की और जब उस बीज का फोटो निकाला गया तो हैरानी हुई। और उस बीज के भीतर उसके छाती से लटके क्रास के चित्र भी आ गये। बड़ी हैरानी की बात हे, जब वह प्रार्थना करने को झुका तो उसका क्रास भी उस बीज के पास पहुँचा, लेकिन बीज के भीतर क्रास का चित्र! यह कैसे सम्भव हुआ? क्या उसकी प्रार्थनाएं, उसका बीज पर गया हुआ ध्यान इस चित्र को भी उसके भीतर संवादित कर सका? क्या बीज ने भी रिस्पांस किया, क्या बीज ने भी उत्तर दिया इस प्रार्थना का? क्या बीज ने हृदयपूर्वक स्वीकार किया उस फकीर को?
योग का बहुत पुराना ख्याल है, ख्याल ही नहीं अनुभव है कि जिस केन्द्र
पर हम भीतर ध्यान करते हैं वह केन्द्र तत्काल सक्रिय हो जाता है। उसकी सक्रियता, उसकी कलियों को जो बन्द थीं, खोल देती हैं, जैसे सूरज सुबह पक्षियों को जगा देता हैं और ध्यान रहे, ख्याल आपने क्यों न किया जो, सूरज आने के पहले ही घड़ी भर पहले पक्षी गीत गाने लगते हें। अभी सूरज का रुख ही हुआ है आने, अभी आ भी नहीं गया, अभी बस आने का हुआ है, बस, पक्षी गीत गाने लगते हैं, फूलों की कलियां खिलने लगती हैं। अभी सूरज आने को हुआ है, अभी आ ही नहीं गया और फूल खिलने लगे, कलियां भीतर की तरफ ओर आपके चक्र शुरू हो जाते हैं, सिर्फ जाना शुरू हो जाये और आपके भीतर अनूठे अनुभव होने लगते हैं।
अभी तीन दिनों में न मालूम कितने मित्रों ने आकर न मालूम कितने अनुभव मुझे कहे। वे सदा से हुए अनुभव हैं। किसी को प्रकाश से तीव्र अनुभव होने भीतर शुरू हो जाते हें, किसी केन्द्र से फूटता हुआ प्रकाश, किसी को सुगन्ध का अनुभव भीतर होना शुरू हो जाता है। वह किसी केन्द्र से फूटती हुई सुगन्ध है।
किसी को संगीत के अनूठे नाद सुनाई पड़ने लगते हैं, किसी केन्द्र से फूटते हुए संगीत की ध्वनियां हैं, नाद हैं और अलग-अलग अनुभव भीतर से प्रगट होने शुरू हो जाते हें, जितना बड़ा जगत हमारे बाहर हैं उतना छोटा जगत हमारे भीतर नहीं है। अभी हमने बाहर ही ध्यान किया हे, इसलिए बाहर की चीजें सक्रिय हो जाये। एक-दो छोटे प्रयोग आपसे कहूं, जिससे आपको स्मरण में आ सके कि यह हो सकता है। रास्ते पर जा रहे हों, सामने आपके कोई चल रहा हो। एक-दो मिनट के लिए ऐसा करें कि ठीक उसकी चोंथी पर दो मिनट तक उसके पीछे से आंख गड़ाकर देखते रहें, पलक न झपकें-पलक बिना झपके उसकी चोथीं पर देखते रहें, दो मिनट तक। दो मिनट से ज्यादा आप न देख पायेंगे, उस आदमी को लौटकर आपके देखना पड़ेगा। उसके केन्द्र पर सक्रियता हो गयी, वह तत्काल बेचैन होकर पीछे लौटकर देखेगा कि क्या हुआ, पीछे क्या हो रहा है। आप ऐसा आदमी नहीं खोज सके जिसको आप दो मिनट तक देखें और वह पीछे ने लौटकर देख ले। आप अगर ऐसा आदमी मिल जाये तो समझना कि बड़ा कीमती आदमी मिला है।
अपने ही शरीर में आज कोई भी केन्द्र चुन लें और उस पर थोड़ी चेतना ले जाना शुरू करें। हम सबको अगर पूछा जाये कि अगर आपका हाथ कट जाये तो हम कहेंगे कि हमारा कुछ बहुत कहीं कट जायेगा। थोड़ी तकलीफ होगा, लेकिन बहुत

नहीं कट जायेगा। लेकिन कोई कहे कि सिर कट जाये तो हम कहेंगे कि सब कट जायेगा, क्योंकि हमारी आइडेण्टिटी, हमारे सिर्फ मस्तिष्क में रह गयी है, हमारा होना सिर्फ वही है हम कहेंगे कि हमारा होना वही है। जो कुछ भी हमारी सम्पत्ति है, विचार है, ज्ञान है। जो भी हमने जाना है अपने बाबत, वह मस्तिष्क के छोटे-से केन्द्र पर है, बाकी पूरे शरीर पर वह नहीं है।
अपने भीतर किसी भी केन्द्र पर ध्यान करना शुरू करें, जैसे मैंने प्रयोग के लिए आपसे बाहर के लिए कहा, आप एक चार-छः दिन सिर्फ आंख बन्द करके हृदय पर ध्यान ले जायें और कुछ न करें। पांच मिनट रोज और आप पायेंगे आपके व्यक्तित्व में प्रेम बढ़ना शुरू हो गया, वह आपको दिखाई पड़ेगा, आपके पड़ोसियों को दिखाई पड़ेगा। आपके लोगों को दिखाई पड़ेगा।
कहने की जरूरत नहीं, चुपचाप आप ध्यान देते रहें, आप पायेंगे कि लोग आपसे कहने लगेंगे कि आप में बड़ा फर्क हो रहा है। आप इतने प्रेमपूर्ण कभी नहीं थे। केन्द्र पर चेतना आयेगी, वह केन्द्र सक्रिय हो जाता है और हमारे सात केन्द्र हैं। इन बातों पर चेतना ले जायी जा सकती है। अगर ले जायेंगे तो ही चेतना आयेगी। स्व-चेतना होने का यह फायदा भी है और खतरा भी है। नहीं ले जायेंगे तो नहीं जायेंगी। और नहीं ले जायेंगे तो स्व-अचेतन, पशु में और आदमी में कोई फर्क नहीं है। अगर मैं इसे ऐसे कहूँ कि योग पशु को मनुष्य बनाने का विज्ञान है तो यह परिभाषा अतिशयोक्ति नहीं है। योग में पशु का अर्थ भी बहुत अद्भुत है। योग उसको पशु कहता है जो पाश में बंधा है- जैसे भैंस या गाय को हम रस्से में बाँध के ले जाते हैं, वह जो रस्सी है, उसका नाम पाश है और उसमें बँधे हुए का नाम पशु है।
योग कहता है जो आदमी अचेतना की जंजीरों में बँधा है, वह पशु है और जो आदमी अचेतना की जंजीरों को तोड़कर खड़ा हो गया है, वह मुनष्य है। मनुष्य का मतलब है, जो मन हो गया पूरा और मन, कान्शसनेस का, चेतना का मतलब है, मन का अर्थ है चेतना, जो चेतन हो गया पूरा। अंग्रेजी का मैन भी संस्कृत के मनु से ही बना है। जो मन हो गया पूरा अर्थात जो पूरा चेतन हो गया और यह जो चेतन हो गया पूरा, यह मनुष्य है। योग का यह सातवां सूत्र है। इस सम्बन्ध में दो-तीन बातें और, फिर बाकी सूत्र की बात कल आपसे करूंगा। दो-तीन और बातें ख्याल में ले लेनी जरूरी हैं।
जैसे मैंने कहा कि आदमी कभी-कभी चेतन होता है, बाकी अचेतन होता है। इससे उलटी घटनाएं भी घटती हैं। जिनको हम निरन्तर अचेतन मानते हैं, वे भी किसी-किसी क्षण में चेतन होते हैं। जैसे पौधा भी किसी क्षण में चेतन होता है, जैसे पत्थर भी किसी क्षण में चेतन होता है। इसी तरह मनुष्य से पिछड़ी हुई जातियां जीवन के किन्ही क्षणों में चेतन होती है। पर ये घटनाएं बहुत मुश्किल से घटती हैं और कभी-कभी घटती हैं। जैसे बुद्ध के वक्त में बोधिवृक्ष के साथ घटी।
बुद्ध के मरने के पांच सौ वर्ष तक बुद्ध की प्रतिमा नहीं बनायी गयी, क्योकि बुद्ध ने कहा था कि प्रतिमा मत बनाना। यह बोधिवृक्ष ही काम देगा और पांच सो वर्ष तक बोधिवृक्ष की पूजा की जाती रही। पांच सौ वर्ष बाद बुद्ध की प्रतिमाएं बनीं, पांच सौ वर्ष तक नहीं। बहुत से कारणों में एक कारण यह था कि जस क्षण बुद्ध को बुद्धत्व हुआ, उस क्षण जिस वृक्ष के नीचे वे बैठे थे वह भी प्रतिध्वनित हो गय बुद्धत्व से, वह भी जाग गया। वह साक्षी हो गया, वह अकेले ही साक्षी था, अकेला विटनेस था, बाकी कोई मौजूद नहीं था, वह साक्षी मौजूद था। आप कहेंगे कि वह वृक्ष कैसे अचेतन हो गया?
बुद्ध जैसा बड़ा सूर्य प्रगट हुआ, वहाँ उस वृक्ष के नीचे तो कितना ही सोया हो वृक्ष अपनी अचेतना में, उसका भी एक हिस्सा जाग गया। उसने भी जाग के यह घटना देखी। इसलिए बुद्ध ने कहा-यह वृक्ष मेरा गवाह है, यह विटनेस है। इसकी पूजा कर देना तो चलेगा। यह अकेला गवाह है, यह बोधिवृक्ष अब तक बचाने की कोशिश की गयी है, उसका कुल कारण इतना ही है। हालांकि बौद्धों को भी पता नहीं कि लोग क्यें उसको बचाये चले जा रहे हैं? हिन्दुस्तान में सूख गया तो उसकी एक शाखा को अशोक ने अपने बेटे और अपनी बेटी के हाथ श्रीलंका भेजा था। उसकी एक शाखा फिर श्रीलंका में लग गयी थी। तो जब हिन्दुस्तान का बोधित्व सूख गया तो फिर वापस उस वृक्ष की एक शाखा पुनः लगा दी गयी है। लेकिन पच्चीस

सौ साल से वह वृक्ष जीवित है, यह विटनेस है, गवाह है। बुद्ध की चेतना में जो घटना घटी, उस बड़ी घटना के साथ वह वृक्ष भी आन्दोलित हो उठा और उसने भी जागकर देखा अपनी गहरी निद्रा में कि क्या घट गया है?
इसे इस तरह समझना आसान होगा। अगर आप किसी बड़े संगीतज्ञ से पूछें तो वह शायद आसानी से बता सकेगा। अगर एक सुनसान सूने कमरे में एक वीणा रखी जाय, कोई न बजाये, बस वीणा रखी हो और दूसरे कोने में कोई कुशल संगीतज्ञ दसूरी वीणा बजाये और कमरा सुनसान हो और चीज न हो तो जो खाली जगह रखी वीणा है वह दूसरी रखी वीणा की प्रतिध्वनि को पकड़ कर संगीत छेड़ना शुरू कर देगी। उस दूसरी वीणा के तार भी कम्पित होकर नाचने लगते हैं। ऐसा ही हुआ। वह इतनी बड़ी घटना घटी बुद्ध की कि उस कम्पन में वृक्ष की वीणा के भी तार हिल गये। वह भी नाच उठा वह गवाह बना।
हकीम लुकमान का नाम आपने सुना होगा। लुकमान के जीवन में एक बहुत अद्भुत उललेख है और वह योग के गहरे रास्तों से जुड़ा हुआ है। लुकमान के सम्बन्ध में एक कहानी है। कहानी कहता हूँ। ऐसे वह इतिहास है। कहानी है कि लुकमान ने वृक्षों से जाकर पूछा कि तुम किस काम आ सकोंगे? जड़ी-बूटियों से पूछा कि तुम्हारा क्या उपयोग है? और अभी भी जो लोग मेडिकल रिसर्च करते हैं, वे तकलीफ में हैं, यह बात जानकर कि लाखों जड़ी-बूटियों के बाबत-आयुर्वेद, यूनानी और पुरानी चिकित्सा शास्त्रों से इतनी लाखों जड़ी- बूटियों के बाबत पता कैसे लगाया होगा कि यह फलां बीमारी में काम आ सकती है, क्योंकि इतनी बड़ी प्रयोगशालाओं का कोई प्रमाण नहीं मिलता और आज भी हम पूरी जड़ी-बूटियों को पता नही लगा पाये हैं कि किस बीमारी में काम आती है। अभी काम चलता है तो हजारों साल तक मेहनत की हो तब पता चलेगा, लेकिन लुकमान अकेले आदमी ने पूरी साइन्स पैदा कर दी। एक आदमी एक जिन्दगी में कैसे पता लगा पायेगा।?
लुकमान की कहानी कुछ और कहती है। वह कहती है कि लुकमान एक-एक पौधों पर जाता, उसके पास बैठ जाता, ध्यान करता। उस पौधे से प्रार्थना करता कि तू बता कि तू किस काम आ सकता हैं और लुकमान के भीतर हृदय में उस पौधे से जो उत्तर मिलता वह उसी बीमारी में उस पौधे का उपयोग शुरू कर देता। और लुकमान ने जिन पौधें का उपयोग किया है अभी प्रयोगशाला में भी वे वैसे ही सही सिद्ध हो रहे हैं। पौधे भी झांक सकते हैं किसी लुकमान के पास, किसी बुद्ध के पास। पत्थर भी जाग सकते है, किसी योगी के पास। लेकिन हम आदमी हैं, जो कि सोये रह जाते हैं। अब यह बड़ी दुखद घटना है कि बुद्ध के पास एक वृक्ष जग गया, लेकिन बुद्ध के पास ऐसे हजारों लोग आये जो नहीं जागे और सोये ही वापिस चले गये। शायद वृक्ष बहुत सरह है इसलिए प्रतिध्वनित हो गया। आदमी बहुत जटिल है, चालाक है, होशियार है, जल्दी प्रतिध्वनित नहीं होता। हर चीज को जांच परख लेता है और जांच-परख में कभी-कभी दो पैसे की हण्डी तो बजा बजाकर ठीक ले जाता है और करोड़ों रुपये की चैक बजा-बजाकर खो देता है।
बहुत चालाक लोग कभी बड़े धोखे में पड़ जाते हैं और अगर कोई आदमी एक-एक कदम बहुत संभालकर रखेगा तो एक बात पक्की है, परमात्मा की यात्रा पर नहीं जा सकता। क्योंकि वह यात्रा इनसिक्योरिटी की है, वह यात्रा इतनी अनजान और अज्ञान और अपरिचित हैं कि वहाँ बहुत होशियारों का काम नहीं है, वहाँ बहुत बार नासमझ भी प्रवेश कर जाते है और समझदार दरवाजे पर खड़े सोचते रह जाते हैं।
कल अगले सूत्र पर आपसे बात करूंगा। इस सम्बन्ध में जो भी प्रश्न हों
तो वह पूछ लेंगे। जो-जो प्रश्न थे, मैंने धीरे-धीरे उनकी बात कर ली है। कुछ बच जायेंगे तो उनकी बात कल कर लेंगे। जो मित्र सुबह ध्यान में आना चाहते हों, वे स्नान करके और ठीक समय पर आ जायें और चुप आकर बैठें। कल आखिरी दिन है, देखने कोई भी न आये, सिर्फ जो करना चाहते हैं वे ही निमन्त्रत हैं। मेरी बातों को इतने प्रेम और शन्ति से सुना, उससे अनुगृहीत हूँ। अन्त में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूँ। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

चेतना का सूर्य
पांचवां प्रवचन

संन्यासी की दिशा

थोड़े से सवाल हैं, उनके सम्बन्ध में कुछ बातें समझ लेनी उपयोगी हैं।
एक मित्र ने पूछा है कि कुछ साधक कुण्डलिनी साधना का पूर्व से ही प्रयोग कर रहे हें। उनको इस प्रयोग से बहुत गति मिल रही है। तो वे इसको आगे जारी रखें या न रखें। उन्हें कोई हानि तो नहीं होगी?
हानि का कोई सवाल नहीं है। यदि पहले से कुछ जारी रखा है और उससे गति मिल रही है तो तीव्र गति से जारी रखें। लाभ भी होगा। परमात्मा के मार्ग पर ऐसे भी हानि नहीं है।
दूसरे मित्र ने पूछा है और भी दो-तीन मित्रों ने वही बात पूछी है कि रोना, चिल्लाना, हंसना, नाचना कब तक जारी रहेगा?
यह तीन सप्ताह से तीन महीने तक जारी रह सकता हैं। जो ठीक से प्रयोग को
कर लेगा, तीन सप्ताह में रोना, हंसना, चिल्लाना विलीन हो जायेगा और पहले चरण से चौथे चरण में प्रवेश हो जायेगा, बीच के दो चरण आपसे गिर जायेंगे। जो ठीक से नहीं करेंगे, धीमे-धीमे करेंगे उन्हें तीन सप्ताह से लेकर तीन महीने तक का समय लग सकता है।
लेकिन यह कोई सदा चलने वाली बात नहीं है, क्योंकि मन के विकार जब गिर जायेंगे तो मन अपने आप विलीन हो जायेगा। और कितनी तीव्रता से आप विकारों को गिराते हैं, उस पर समय की लम्बाई निर्भर करेगी। लेकिन तीन महीने ठीक से प्रयोग किया तो आमतौर से तीन महीने मे यह सब शान्त हो जायेगा। फिर आप एक-दो गहरी श्वास लेंगे। और तत्काल चौथे चरण में प्रवेश हो जायेगा। लेकिन यह तभी होगा, जब आप पूरी तरह से ये बीच के दो चरण कर डालें। इसमें जरा-सी कंजूसी की तो वर्षों लग सकते हैं। सवाल उलीच के फेंक देने का है, अपने भीतर से।
दूसरे दो मित्रों ने पूछा है कि रोना-चिल्लाना बड़ी कठिनाई देगा घर के लोगो को, पड़ोसियों को।
शुरू-शुरू में देगा, एक दिन देगा, दो दिन देगा। आप खुद ही आकर उनसे पहले प्रार्थना कर आयें कि घण्टेभर में ऐसा करूंगा, आप घण्टे भर के लिए क्षमा कर दें। पहले कह आयें, इसके पहले कि वह आपसे पूछें कि क्या कर रहे हैं? और चूकि यह प्रयोग एकदम नया है, इसलिए थोड़ा समय लगेगा। अभी कोई बगल में भजन करने लगता है जोर से किसी को तकलीफ नहीं होती। कोई जोर से राम-राम करने लगता है तो आप समझते हैं, ध्यान कर रहा हैं। एक-दो वर्ष के भीतर मुल्क में लाखों लोग इसे करेंगे और लोग समझ लेंगे कि ध्यान कर रहे हैं। अभी शुरू में जो लोग करेंगे, उन्हें थोड़ी अड़चन है।
शुरू में कुछ भी करने में थोड़ी अड़चन होती ही है। पर वह एक-दो दिन की बात है। अभी भी मुल्क में हजारों लोगों ने करना शुरू किया है। एक-दो दिन आसपास के लोग उत्सुक होते हें, फिर भूल जाते हैं। और आपके व्यक्तित्व में जो अन्तर पड़ने शुरू हो जायेंगे तीन सप्ताह के भीतर ही, वे भी उनको दिखाई पड़ेंगे। आपको रोना-चिल्लाना ही दिखाई नहीं पड़ेगा। और अगर आपने प्रयोग ईमानदारी से किया तो आपके पड़ोसी बहुत ज्यादा दिन तक प्रयोग से बच न सकेंगे। वह प्रयोग उन्हें भी पकड़ना शुरू हो जायेगा। इसलिए आपके रोने- चिल्लाने को आप बहुत परेशानी से न लें, बल्कि वह भी हितकार होगा। पास के लोग आकर पूछेंगे तो पूरा ध्यान उनको समझा दें। और उनको कहें कि आप भी कल साथ बैठ जायें।
एक और सवाल रोज पूछा जा रहा है, उस सम्बन्ध में थोड़ी बात आपसे कहूं। इधर अभी मनाली शिविर में बीस लोगों ने एक नये प्रकार के सन्यास में प्रयोग किया हे। उस सम्बन्ध में रोज पूछा जा रहा हे कि वह सन्यास क्या है,
दो-तीन बातें संक्षिप्त में। पहली बात तो यह कि संन्यास जैसा आज तक दुनिया में था, अब भविष्य में उसके बचने की कोई सम्भावना नहीं है। वह नहीं बच सकेगा। सोवियत रूस में आज सन्यासी होना सम्भव नहीं है। चीन में संन्यासी होना अब सम्भव नहीं हें और जहां-जहां समाजवादी प्रभावी होगा,

वहां-वहां संन्यासी असम्भव हो जायेगा। जहाँ भी ख्याल पैदा हो जायेगा कि जो आदमी कुछ भी नहीं करता है उसे खोने का हक नहीं हैं, वहां संन्यास मुश्किल हो जायेगा।
आने वाले पचास वर्षों में दुनिया में बहुत-सी संन्यास परम्पराएं एकदम विदा हो जायेंगी। चीन में एक बड़ी बौद्ध परम्परा थी संन्यास की, वह एकदम विदा हो गयी। तिब्बत से लामा विदा हो रहे हें, वे बच नहीं सकते। रूस में भी बहुत पुराने फकीरों की परम्परा थी, वह नष्ट हो गयी। और दुनिया में कहीं भी बचना मुश्किल है। इसलिए मेरी अपनी दृष्टि यह है कि संन्यास जैसा कीमती फूल नष्ट नहीं होना चाहिए। संन्यास की संस्था चाहे विदा हो जाये, लेकिन संन्यास विदा नहीं होना चाहिए।
जो उसे बचाने क एक ही उपाय है और वह उपाय यह है कि संन्यासी जिन्दगी को छोड़कर न भागे, जिन्दगी के बीच संन्यासी हो जाये। दुकान पर बैठे, मजदूरी करो, दफ्तर में काम करे, भागे न, उसकी आजीविका समाज के ऊपर निर्भर न हो। वह जहा है, जैसा है, वहीं सन्यासी हो जाये। तो इन बीस संन्यासियों को इस दिशा में प्रवृत्त किया है कि वे अपने दफ्तर में काम करेंगे, अपने स्कूल में नौकरी करेंगे, अपनी दुकान पर बैठेंगे और सन्यासी का जीवन जियेंगे।
इसका परिणाम दोहरा होगा। एक तो इसका परिणाम यह होगा कि संन्यासी शोषक नहीं मालूम होगा, वह किसी के ऊपर निर्भर है, ऐसा नहीं मालूम होगा। संन्यासी को भी इससे लाभ होगा कि जो संन्यास की परम्परा समाज पर निर्भर हो जाती है वह गुलाम हो जात है, वह पता चले न चले। वह समाज की गुलामी में जीने लगती है।
और जिनको हम रोटी देते हैं, उनसे हम आत्मा भी खरीद लेते हैं। इसलिए संन्यासी आमतौर से विद्रोही होना चाहिए, लेकिन हो तो नहीं पाता, क्योंकि वह जिनसे भोजन पाता है, उनकी गुलामी में उसे समय बिताना पड़ता है वह वही बातें कहता रहता है जो आपका प्रीतिकर हैं, क्योंकि आप उसको रोटी देते हैं, संन्यास एक क्रान्तिकारी घटना है। उसके लिए जरूरी है कि व्यक्ति भीतरी रूप से, आर्थिक रूप से अपने ही ऊपर निर्भर हो। तो एक तो संन्यास को घर-घर में पहुँचाने का मेरा ख्याल है।
इसका दूसरा गहरा परिणाम यह होगा कि जब संन्यासी घरों को छोड़कर भाग जाता है तो संन्यासी का तो फायदा संसार को होना चाहिए, वह नहीं हो पाता। अच्छे लोग जब संसार छोड़ देते हैं तो संसार बुरे लोगों के हाथ में पड़ जाता है। इससे नुकसान हुआ है मैं मानता हूँ कि किसी आदमी की जिन्दगी में अच्छाई का फूल खिले तो उसे ठेठ बाजार में बैठा होना चाहिए, ताकि उसकी सुगन्ध बाजार में फैलनी शुरू हो। अन्यथा वह तो भाग जायेगा, दुर्गन्ध फैलाने वाले जम के बैठे रहेंगे।
तो संन्यासी को घर-घर में वह वेश परिवर्तन कर ले, वह अपनी सारी वृत्तियों को परमात्मा की ओर लगा दे, लेकिन छोड़ के न भागे, क्योंकि अब, जिस घर का काम कल तक वह सोचता था, मैं कह रहा हूँ, अब परमात्मा का उपकरण बनकर, उस घर का काम किये चला जाये। न पत्नी को छोड़े, न घर को छोड़े, न बच्चों को छोड़े, अब यह सारे काम को परमात्मा का काम समझ कर चुपचाप करता चला जाये। इसका कर्ता न रह जाय। बस, इसका द्रष्टा भर रह जाय। ऐसे संन्यास की प्रक्रिया से मैं सोचता हूँ कि एक तो लाखों लोग उत्सुक हो सकेंगे। जो कभी घर छोड़ने का विचार नहीं कर पाते हैं, उनकी जिन्दगी में भी संन्यास का आनन्द आ सकेगा और यह जिन्दगी भी प्रफुल्लित होगी। अगर हमें सड़कों पर, बाजारों में, मकानों में, दफ्तरों में संन्यासी उपलब्ध होने लगें, उसके कपड़े, उसकी स्मृति उसकी हवा, उसका व्यवहार तो वह सारी जिन्दगी को प्रभावित करेगा।
इस दृष्टि से जो लोग भी बार-बार पूछ रहे हैं वे अगर उत्सुक हों तो आज तीन से चार तक वे मुझ से अलग से बात कर लें, जिन्हें संन्यास का ख्याल हो कि उनकी जिन्दगी में यह सम्भावना बने।
इस संन्यासी से मैंने दो-तीन बातें और सुंयक्त की हैं। एक तो, इस संन्यास को पीरियाडिकल रिनन्सिएशन कहा है, सवार्धिक संन्यास कहा है मेरा मानना है कि किसी आदमी को जिन्दगीभर के निर्णय नहीं लेने चाहिए। आज आप निर्णय लेते हैं, हो सकता है छह महीने बाद आपको लगे कि गलती हो गयी। ता

आपके वापस लौटने का उपाय होना चाहिए। अन्यथा संन्यास भी बोझ हो सकता है। जब हम एक दफे एक आदमी को संन्यासी दे देते हैं तो आग्रह रखते हैं कि वह जिन्दगी भर संन्यासी रहे। हो सकता हैं, साल भर बाद उसे लगे कि गलती हो गयी तो उसे वापस लौटने का आधिकार होना चिहए, बिना निन्दा के। इसलिए यह जो मेरा, जिसे मैंने संन्यास कहा है, पीरियाडिकल है। आप जिस दिन भी चाहें वापस चुपचाप वापस लौट सकते हैं। कोई आपके ऊपर इसका बन्धन नहीं होगा।
थाईलण्ड और बर्मा में इस तरह के संन्यास का प्रयोग प्रचलित है और उससे थाईलैण्ड और बर्मा की जिन्दगी में फर्क पड़ा है। हर आदमी थोड़े-बहुत दिन के लिए, संन्यास तो एक दफे ले ही लेता है। किसी आदमी को वर्ष में दो महीने की फुरसत होती है तो दो महीने संन्यास ले लेगा और दो महीने संन्यासी की तरह जीकर वापिस अपने घर की दुनिया में लौट आता है। आदमी बदल जाता है। दो महीने संन्यासी रहने के बाद आदमी वही नहीं हो सकता था, जो था। उसके भीतर का सब बदल जाता हैं फिर वर्ष दो वर्ष के बाद उसे सुविधा होती है, दो महीने के लिए संन्यास ले लेता है।
इसलिए दूसरी भी दिशा मैंने इससे जोड़ी है कि जो लोग कुछ सीमित समय के लिए संन्यास लेना चाहें, वे सीमित समय के लिए संन्यास लेकर प्रयोग करें। अगर उनका आनन्द बढ़ता जाये तो समय को बढ़ा लें और अगर उन्हें ऐसा लगे कि नहीं, वह उनकी बात नहीं हैं तो वे चुपचाप वापस लौट जायें। इससे दोहरे फायेदे होंगे। संन्यास बन्धन नहीं बनेगा, संन्यास सवतन्त्रता है। इसलिए बन्धन बनना नहीं चहिए। अभी हमारा संन्यासी बिल्कुल बंधा हुआ कैदी हो जाता है।
और दूसरी बात संन्यास बन्धन नहीं बनेगा एक और दूसरी बात कि संन्यास, प्रत्येक के लिए, चाहे थोड़े समय के लिए ही उपलब्ध हो जाये और एक आदमी अगर सत्तर साल की जिन्दगी में पांच दफा दो-दो महीने के लिए भी संन्यासी हो गया हो तो मरते वक्त दूसरा आदमी होगा। वह वही आदमी नहीं हो सकता। अधिकतम लोगों को संन्यासी होने का मौका मिल जायेगा, अधिकतम लोग संन्यास का रस और आननद अनुभवी कर सकेंगे। और मेरा मानना है कि जो एक दफे संन्यास में जायेगा, वह वापस लौटेगा नहीं। यह न-लौटना नियम से नहीं होना चाहिए, यह न-लौटना संन्यास के आनन्द से होना चाहिए, लेकिन लौटने की स्वतन्त्रता कायम रहनी चाहिए। इस सम्बन्ध में अभी ज्यादा बात करनी उचित नहीं होगी। जिन मित्रों को संन्यास की दिशा में उत्सुकता हो, वे दोपहर तीन से चार तक मुझे मिल सकते हैं।
कुछ शायद दस-पांच नये मित्र होंगे तो मे। दो मिनट आपको फिर प्रक्रिया दोहरा दूं। फिर हम ध्यान के प्रयोग के लिए बैठें।
ध्यान का यह प्रयोग, संकल्प का, विल-पावर का प्रयोग है। आप कितने संकल्प ले सकते हैं, इसमें उतना ही परिणाम होगा। अगर इंच-भर भी आपने अपने को बचाया तो परिणाम नहीं होगा। इसमें पूरा ही कूदना पड़ेगा। इसमें बचाव से नहीं चल सकता है और प्रक्रिय ऐसी है कि आप पूरे कूद सकते हैं। कठिनाई नहीं है।
इसके तीन चरण हैं। पहले चरण में आपको तीव्र श्वास दस मिनट तक लेनी हैं इसे बढ़ाते जाना है, तेज करके जाना हैं इस भांति श्वास लेनी है कि आपको दूसरा कुछ स्मरण ही न रह जाय। बस श्वास ही रह जाय। सारा प्रयोग-दस मिनट आप भूल जायें सारी दुनिया को। जो जोर से श्वास लेगा, वह भूल जायेगा। बस, श्वास के क्रिया ही उसके बोध में रह जायेगी। भीतर-बाहर श्वास ही श्वास में लगा देनी है।
दूसरे दस मिनट कथार्सिस के हैं, रेचन के। दूसरे दस मिनट में नाचना, कूदना, चिल्लाना, रोना, हंसना, जो भी आपको आने लगे, उसे पूरी ताकत से करना है। दस-पांच मित्रों को, जिन्हें न आये अपने आप, उन्हें अपनी ओर से जो भी सूझे वह शुरू कर देना है। नाचना लगे नाचना, चिल्लाना लगे चिल्लाना।
और प्रयास मत करें, बस, शुरू कर दें। कल दो-तीन मित्र आये, उन्होंने कहा, हम प्रयास करते हैं, लेकिन हमें होता नहीं है। प्रयास की जरूरत नहीं है। उछलने के लिए कोई प्रयास करना पड़ेगा? शुरू कर दें। प्रयास की कोई फिक्र न करें। जैसे ही आप शुरू करेंगे, धारा टूट जायेगी और सहज हो जायेगा।

और एक-दो दिन में आप पायेंगे कि वह अपने आप आने लगा। हमारे मन में बहुत-से दमन इकट्ठे हैं, बहुत-से वेग इकट्ठे हैं, वे गिर जाने चाहिए।
भीतर शक्ति का जन्म होगा, पूरा शरीर इलेक्ट्रिफाइड हो जायेगा, कम्पित होने लगेगा। यह शक्ति जगाने के लिए ही दस मिनट गहरी श्वास की चोट कर रहे हैं। उससे कुण्डलिनी जागेगी। फिर दूसरे दस मिनट में मन के विकारों को गिराने के लिए प्रयोग कर रहे हैं ताकि कुण्डलिनी के मार्ग में कोई बाधा न रह जाये, सब बाधांए अलग हो जायें। और कुण्डलिनी की यात्रा सीधी ऊपर जा सके, चित्त के सारे रोग अलग हो जायें, अन्यथा कुण्डलिनी से जगी हुई शक्ति को, चित्त के रोग एबजार्ब कर लेते हैं, वह चित्त के रोगों में प्रविष्ट हो जाती है। इसलिए रेचन जरूरी है, सब कचरा बाहर फेंक देना जरूरी है।
फिर तीसरे चरण में जो शुद्ध शक्ति बचेगी कुण्डलिनी की, उसको जिज्ञासा में रूपान्तरित करना है, उसकी इन्क्वायरी बनाना है। इसलिए तीसरे चरण में दस मिनट में कौन हूँ, पूछना है। आज तो आखिरी दिन है, इसलिए मन में मत पूछें। पूरे दस मिनट पूरी शक्ति लगाकर जोर जोर से चिल्लाकर पूछें। इतने जोर से पूछे कि आपको और दूसरी बात ख्याल में ही आने की सुविधा न रह जाये कि कुछ और विचार, कोई और जगत भी है। बस, मैं कौन हूँ में डूब जायें। किन्हीं को अगर हिन्दी की जगह मराठी में पूछना सुविधाजनक पड़ता हो तो मराठी में पूछ सकते हैं। यह सवाल नहीं है। अगर उनको मराठी सुविधाजनक पड़ती है, उसकी भाषा में पूछें। जिस भाषा में आपके हृदय की गहराई है, उसी भाषा में पूछें। दस मिनट पूरी शक्ति लगाकर पूछना है। इन मिनट में अपने को बिल्कुल थका डालना है। जरा भी बचाना नहीं है, रुकना नहीं है।
और आखिरी दस मिनट में मौन प्रतीक्ष करनी है। वह साइलेण्ट अवेटिंग के वक्त, वही दस मिनट असली है। यह तीस मिनट तैयारी है तो दस मिनट असली हैं। उन दस मिनटों में गहरी शक्ति, आनन्द गहरे प्रकाश और बहुत तरह के अनुभव होने शुरू होंगे।
इस प्रयोग को चाहें तो दस-दस, पांच-पांच मित्रों के ग्रुप बना लें और कहीं एक जगह इकट्ठे होकर करें तो एक-एक व्यक्ति को जो अड़चन होती है, वह नहीं होगी। जो भी दस पांच मित्र किसी एक घर में इकट्ठे हो जायें, वहाँ प्रयोग करें। इक्कीस दिन साथ कर लें। फिर बैठकर अकेले में घर में करने लगे। यह चिल्लाना, रोना धीरे-धीरे कम हो जायेगा और शन्ति बढ़ती जायेगी। और एक तीन महीने आपके भीतर सतत धारा बहने लगेगी शन्ति की, आनन्द की और चारों और परमात्मा प्रत्यक्ष होने लगेगा। ऐसा नहीं है कि वह खड़ा हुआ मिल जायेगा। नहीं, जो भी दिखाई देगा, वह परमात्मा का रूप ही मालूम देने लगेगा। अब हम प्रयोग के लिए खड़े हो जायें। जिन मित्रों को बैैठकर करना हो, वे मेरे पीछे आ जायेंगे।

चेतना का सूर्य
छठवां प्रवचन

परम जीवन का सूत्र

योग का आठवां सूत्र। सातवें सूत्र में मैंने आपसे कहा, चेतन जीवन के
दो रूप हैं स्व-चेतन कान्शस और स्व-अचेतन, सेल्फ अनकान्शस। आठवां सूत्र है स्व-चेतना से योग का प्रारम्भ होता है और स्व के विसर्जन से अन्त। स्व-चेतन होना मार्ग है, स्वयं से मुक्त हो जाना मंजिल है। स्वयं के प्रति होश से भरना साधना है और अन्ततः होश ही रह जाये, स्वयं खो जाये, यह सिद्धि है। स्वयं को जो नहीं जानते हैं, वे तो पिछड़े ही हुए हैं, जो स्वयं पर ही अटक जाते हें, वे भी पिछड़ जाते हैं। जैसे सीढ़ी का चढ़कर कोई अगर सीढ़ी पर ही रुक जाय तो चढ़ना व्यर्थ हो जाता ह। सीढ़ी चढ़नी भी पड़ती है और छोड़नी भी पड़ती है। मार्ग पर ही रुक जायें तो भी मंजिल पर नहीं पहुंच पाते। मार्ग पर चलना भी पड़ता है। और मार्ग छोड़ना भी पड़ता है, तब मंजिल तक पहुँचता है मार्ग मंजिल तक ले जा सकता है, अगर मार्ग को छोड़ने की तैयारी हो। और मार्ग ही मंजिल में बाधा बन जायेगा, अगर पकड़ने का आग्रह हो। स्वयं के प्रति होश से भरना सहयोगी है, स्वयं के विसर्जन के लिए। लेकिन अगर स्वयं को ही पकड़ लिया जाये तो जो सहयोगी है, वही अवरोध हो जाता है। इस सूत्र को समझना शायद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
स्वयं को तो पाने की हमारी उत्कट आकांक्षा होती है, लेकिन स्वयं को खोना कठिन बात है। इसलिए बहुत-से असाधक योग के सातवें सूत्र तक आते हैं, आठवे सूत्र में नहीं आ पाते। सातवें सूत्र तक हमारे अहंकार को कोई बाधा नहीं है। सातवें सूत्र तक की यात्रा ईगोसण्टर्ड है, अहंकार-केन्द्रित है। इसलिए सातवें सूत्र तक साधक से अगर कहें कि धन छोड़ दो तो साधक धन छोड़ देगा। कहें कि परिवार छोड़ा दो तो परिवार छोड़ देगा। कहें कि यश छोड़ दो, महत्वाकांक्षा छोड़ दो, सिंहासन छोड़ दो तो वह सब छोड़ देगा। लेकन सब छोड़ने के पीछे "मैं" मजबूत होता चला जाता है।
साधना में भी उत्सुक होगा इसीलिए कि वह "मैं" और भी निखर जाये। साधना में भी इसलिए लगेगा कि "मैं" कुछ हो जाऊं। परमात्मा को भी इसीलिए खोजेगा कि कहीं मैं परमात्मा के बिना न रह जाऊं। सातवें तक आने में अड़चन, कठिनाई नहीं है। असली कठिनाई सातवें के बाद आठवें सूत्र को समझ लेने में हैं, क्योंकि आठवां सूत्र तो स्वयं को खोने का सूत्र है, स्वयं के विसर्जन का सूत्र तक अपार ऊर्जा, अपार शक्ति का जन्म हो जायेगा। लेकिन परमात्मा से मिलन नहीं हो सकता है। सातवें सूत्र तक स्वयं से मिलन होगा।
स्वयं से मिलन भी छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी बात है। लेकिन पिछले छः सूत्रों की दृष्टि से बड़ी बात है, आठवें सूत्र की दृष्टि से बड़ी बात नहीं है। स्वयं को पा लेना भी बहुत कठिन है। स्वयं को भी पूरा जान लेना बहुत कठिन है। लेकिन उससे ज्यादा कठिन स्वयं को भी खोना और विसर्जित करना है। अगर एक व्यक्ति कारागृह में कैद हो तो कारागृह से मुक्त होने के लिए पहली शर्त तो यही होगी कि वह जाने कि कारागृह में कैंद है। अगर उसे यह पता ही न हो कि वह कारागृह में है। दूसरी शर्त होगी कि कारागृह को ठीक से पहचानना कि कारागृह क्या हे? कहाँ है दीवार? कहाँ है मार्ग, कहाँ हैं खिड़कियां, कहाँ हैं शीशे, कहाँ है कमजोर रास्ता, कहाँ से निकला जा सकता है, कहाँ पहरेदार है? दूसरा सूत्र होगा, कारागृह से पूरी तरह परिचित होना, कारागृह के प्रगति पूरी तरह सचेतन होना, तब कहीं कारागृह से छुटकारा हो सकता है। मनुष्य के गहरे व्यक्तित्व में स्व ही कारागृह है, सेल्फ में अहंकार
ही कारागृह है। छोटा कारागृह है, लेकिन बड़ा है। बड़ी शक्तियों से भरा है, बड़े खजाने डूबे हैं, पर कारागृह है। उसके बाहर विराट का विस्तार है, जहाँ स्वतन्त्रता है, जहाँ मुक्ति है। पहले तो हमें अपने इस स्व का ही पता नहीं है कि इतना बड़ा क्या है? इसका पता लगाना सातवें सूत्र तक पूरा होता है। और जब इसका पूरा पता लगता है तो खतरा है बड़ा, वह खतरा आपसे कहूं। वही खतरा जो पार कर ले, वह सातवें सूत्र को समझ पायेगा। जैसे ही पता चलता है, इतनी सम्पत्तियां, इतने हीरे-माणिक, इतने खजानों का मैं मालिक हूँ, वैसे ही

कारागृह कारागृह नहीं, सम्राट का महल मालूम पड़ने लगता है। अगर एक कैदी को भी पता चल जायें कि कारागृह में इतने खजाने भरे हैं, इतना सोना है, इतनी सम्पदा है, अगर उसको कारागृह के खजानों का पता चल जायें तो शायद वह भी यह बात इनकार कर दें कि कारागृह है, यह महल है सम्राट का और शायद यह खजाना ही उसे अब कारागृह से बाहर जाने के लिए बाधा बन जाये। हो सकता है पहरेदार इतना न रोक सकें होते और जंजीरे इतना न रोक सकती थीं, हो सकता है सारा इन्तजाम कारागृह का न रोक सका हो उसे बाहर जाने से लेकिन उसे कारागृह से मिले खजाने रोक सकते हैं।
जिस दिन हमें अपने स्वयं की पूरी सम्पदा का, अपने स्वयं के पूरे सुख
की शक्ति का पता चलता है, उस दिन यह खतरा है कि हम भूल जायें कि यह स्व बड़ी छोटी भूमि है, यह बड़ी अनन्त भूमि का एक छोटा- सा टुकड़ा है। यह ऐसे ही है, जैसे किसी ने मिट्टी के घड़े में पानी भर के सागर में छोड़ दिया हो। वह मिट्टी के घड़े के भीतर पानी है सागर का ही। लेकिन सागर की, उस मिट्टी के घड़े से बाहर जो सागर है, उससे इसकी तुलना! हम भी मिट्टी के घड़े है बहुत है भीतर। वही है जो परमात्मा का है सागर का ही रूप, लेकिन बाहर जो है उसकी क्या तुलना है? मिट्टी के घड़े को भी एक दिन तोड़ना ही पड़ता है। जो सेल्फ है, जो मैं हूँ यह जो आत्मा का भाव है, यह जो ईगो है, अहंकार है, यह घेरे हुए है। लेकिन जिस दिन स्वयं को पूरी गरिमा का पता चलता है, उस दिन मिट्टी का घड़ा सोने का घड़ा होता है। तोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिए बहुत बार साधक को अद्भूत तरह के अहंकारों का जन्म होता है। बहुत बार साधना के पथ पर चलने वाले को जो अन्तिम चीज रोक लेती है। वह, वह जगह है जहाँ उसका मैं सोने का हो रहा है, जहाँ उसे भीतरी "मैं" की बड़ी गहरी घोषणा बन जाती है। जो इस पर रुक जाते हैं वे सातवें सिद्ध पर रुक जाते हैं। और यह रुक जाना वैसा ही है कि जैसे कोई आदमी अपनी मंजिल के करीब आकर द्वार पर रुक जाये। सारा रास्ता तय करे और मंजिल के बाहर ठहर जाये। ऐसा होता भी है।
हजारों मील आदमी चल लेता है और मंजिल के पास एक-एक कदम उठाना मुश्किल
हो जाता है। हजारों मील चल लेता है, जब तक दूर होती है मंजिल तब तक दौड़ लेता है, जैसे-जैसे पास आने लगती है वैसे-वैसे थकान पकड़ने लगती है। अक्सर ऐसा हुआ है कि लोग मंजिलों के बाहर आकर विश्राम को चले गये हैं।
अनेक साधक सातवें सूत्र पर अटक जाते हैं। आठवां सूत्र छलांग है। बड़ी छलांग है। स्वयं को पाने की बात बड़ी नहीं है, स्वयं को खोने की बात बहुत बड़ी है। फिर मन में सवाल उठता है कि स्वयं को खोना किसलिए? स्वयं ही न होंगे तो जो भी होगा उसका क्या प्रयोजन है, क्या अर्थ है? स्वयं ही न होगा तो फिर क्या होगा मोक्ष? क्या होगा परमात्मा, क्या होगा योग, क्या होगा धर्म? स्वयं के लिए मुक्ति छोड़ी जा सकती है। स्वयं से मुक्ति बड़ी कठिन बात है। फ्रीडम फ्राम सेल्फ, स्वयं के लिए मुक्ति तो, आसान है, मन करता है कि मैं स्वतन्त्र हो जाऊं। लेकिन फ्रीडम फ्राम सेल्फ स्वयं से मुक्ति, वहाँ जाकर एकदम अटकाव आ जाता है। मन वहाँआखिरी छलांग की तैयारी में है। लेकिन येग के पास मार्ग है, जिससे उस आखिरी छलांग को भी पूरा किया जा सकता है। सातवें सूत्र के बाद आठवें सूत्र में प्रवेश के लिए जो सबसे बड़ी खोज शुरू होती है वह यह है, मैं कौन हूँ? इसकी खोज शुरू होती हैं। मैं क्या हूँ, यह सातवें सूत्र तक पता चल जाता है। क्या हूँ? मैं कहा तक हूँ, यह सातवें सूत्र तक पता चल जाता हे। लेकिन मैं कौन हूँ, यह सातवें सूत्र तक पता नहीं चलता। उसकी खोज ही आठवां सूत्र बनता है कि मैं कौन हूँ, और जितना गहरे हम खोजते हैं, उतना ही हम पाते हैं कि वहां भी मेरा अन्त नहीं है, यहाँ भी मैं नही हूँ और आगे भी हूँ बियॉण्ड एण्ड बियॉण्ड। खोज चलती जाती, खोज चलती जाती है और सब सीमाएं टूट जाती हैं और आखिर में पता चलता है कि जो भी है वह सभी कुछ में हूँ। जिस दिन यह पता चलता है कि जो भी है वह सभी कुछ मैं हूँ, उस दिन मैं नहीं बचता, क्योंकि तू ही बचता है। कोई तू नहीं रह जाता है, बाहर के जगत में। सभी कुछ मैं हूँ। सभी कुछ मैं हूँ।
विगत 1857 की क्रान्ति के समय एक संन्यासी को अंग्रेज सिपाहियों ने मार डाला था। वह तीस वर्ष से मौन था, चुप था। लोगों ने उससे पूछा था, चुप्पी क्यों ले रहे हो, मौन क्यों हो रहे हो ता उसने कहा था, जो मैं कहना चाहता

हूँ, वह कह नहीं सकता हूँ, क्योंकि शब्द असमर्थ हैं। और जो मैं कह सकता हूँ, उसे कहना नहीं चाहता हूँ, क्योंकि वह व्यर्थ है। फिर वह तीस साल चुप था। नग्न, चुप, मौन भटकता रहता था। रात में वह गुजर रहा था रास्ते से, अंग्रेज सिपाहियों की छावनी थी। उन्होंने उसे कोई डिटेक्टिव, कोई जासूस समझकर पकड़ लिया। उसने बहुत पूछा कि तुम कौन हो, लेकिन जब उसे पूछते थे कि तुम कौन हो तो हँसता था। वह मौन था, उत्तर भी नहीं दे सकता था। और कौन हूँ मैं, इसका उत्तर अब तक किसने दिया है? उत्तर दिया भी नहीं जा सका है। जब उत्तर मिलता है, तब तक उत्तर नहीं मिलता है।
तो यह जो पहेली है, अब तक हल नहीं हो पायी, कभी होगी भी नहीं। वह खोजने वाला जब खत्म हो जाता है, तब उत्तर मिलता है। तब उत्तर का कोई मतलब नहीं है। और जब तक वह खोजने वाला मौजूद रहता है तब तक उत्तर मिलता नहीं है। तब उत्तर दिया नहीं जा सकता, क्योंकि मिलता ही नहीं।
वह हँसता था खिलखिलाकर। जितना वह हँसता था, उतना सिपाही नाराज होते गये, अन्त में संगीन उन्होंने उसकी छाती में भोंक दी। वे समझे कि वह धोखा दे रहा है। मरते वक्त उसने दो शब्द जरूर कहे-तीस साल का मौन उसने मरते वक्त तोड़ा था। बड़ा अजीब था, क्योंकि पूछ रहे थे वे सिपाही कि कौन हो तुम? इसका उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मरते वक्त आँख खोलकर वह फिर हँसा था और उसने उपनिषद के एक महावाक्य का प्रयोग किया था और मारने वाले और संगीन भोंकने वाले अंग्रेज पिहियों से कहा था-तत्त्वमसि श्वेतकेतु, तुम भी वही हो श्वेतकेतु, तुम भी वही हो! "पूछा था, कौन हो तुम? मरते वक्त उत्तर दिया था, तुम भी वही हो। यह नहीं कहा था, मैं कौन हूँ, तुम भी वही हो। बाकी छोड़ दिया, वह अण्डरस्टुड है, वही हूँ मैं, उसे छोड़ दिया, क्योंकि कौन कहे वहीं हूँ मैं, और वह बचा ही नहीं। उसने उत्तर बड़े चक्कर से दिया था, बहुत राऊण्ड अबाऊट था। कहा कि तुम भी हो, दैट आर्ट दाऊ।
पता नहीं, वे सिपाही संकेत नहीं समझे, मुश्किल ही है कि समझे हों। मैं कौन हूँ? इसकी खोज अन्ततः मैं का विसर्जन बन जाती है। इसकी खोज सातवें सूत्र के बाद ही हो सकती हे, इसके पहले बहुत कठिन है। सातवें सूत्र के बाद सरल है।
पूछ सकते हैं हम, क्योंकि अब जाग गये हें, प्रकाश से भर गये हैं, पूछ सकते हैं, मैं कौन हूँ? और यही प्रश्न एकमात्र धार्मिक प्रश्न है। इसका उत्तर कभी नहीं मिलेगा। ऐसा नहीं है कि आपको उत्तर मिल जाता है कि आप परमात्मा हो। जब तक ऐसा उत्तर आये, समझना, आपकी स्मृति ही उत्तर दे रही है। शास्त्र पढे़ हैं, वही बोल रहे हैं। शब्द सुने हैं, वही बोल रहे हैं। सिद्धान्त सीखे हैं, वे ही बोल रहे हैं।
वह आठवां सूत्र शास्त्रों से हल नहीं होता, सिद्धान्तों से हल नहीं होगा। इसलिए अगर इस आठवें का उत्तर आपका मन दे दे कि ब्रह्मा हो या मैंने अभी कहा-तत्त्वमसि श्वेतकेतु। आपने जो पढ़ा है। पूछें अपने से कि मैं कौन हूँ और मन कह दे, वही हो, इससे हल नहीं होगा। जब तक आप उत्तर दे सकते हो तब तक उत्तर नहीं मिलेगा, क्योंकि आपके पास उत्तर नहीं है, सिर्फ शब्द हैं। मैं कौन हूँ? और उत्तर कोई भी न हो। उत्तर है ही नहीं, क्योंकि अगर उत्तर ही आपके पास हो तो पूछने की कोई जरूरत नहीं है।
लेकिन हम सबके पास उत्तर हैं, इसलिए आठवें सूत्र में समस्त शास्त्र बाधा बन जाते हैं। समस्त ज्ञान बाधा बन जाते हैं। वह जिसको हम नॉलेज कहते हैं, ज्ञान कहते हैं, जो हमने सीखा है, समझा है, याद किया है, वह सब बाधा बन जाता है। श्रेष्ठतम बचन भी बाधा बन जाते हैं-गीता, कुरान बाइबल, सब बाधा बन जाते हैं।
जो भी हमने पढ़ा है। जो हमने सीखा है, सब उस आठवें सूत्र में बाधा देने लगता है, क्योंकि हमारी स्मृति उत्तर देती है कि यह हूँ मैं। यह हूँ मैं, यह हूँ मैं। इन सब उत्तरों को तोड़ डालना पड़ेगा। ये कोई उत्तर हमारे नहीं है। ये जिन्होंने दिये होंगे, उन्होंने जानकर दिये, जिन्होंने दिये होंगे, उन्होंने समझकर दिये हैं, लेकिन ये उत्तर हमारे नहीं है। यह उत्तर मेरा नहीं है। यह जानना मेरा नहीं है, यह बॉरोड है, उधार है, बासी है।

इस आठवें सूत्र से पहले सब ज्ञान छोड़कर मनुष्य को पूर्ण अज्ञानी हो जाना पड़ेगा। और जो अज्ञानी होने को समर्थ है- यह अज्ञानी बहुत और तरह का है। सुकरात ने एक छोटा-सा अच्छा विभाजन किया है। और वे लोग जो आठवें सूत्र के करीब पहुँचे हैं, उनमें सुकरात एक है। सुकरात के गांव के कुछ लोगों ने जाकर कहा कि डेल्फी की देवी ने घोषणा की है कि सुकरात से बड़ा ज्ञानी और कोई नहीं है। तो लोगों ने आकर कहा कि डेल्फी की देवी का वचन है कि सुकरात से बड़ा ज्ञानी और कोई भी नहीं है-क्या कहते हो? सुकरात ने कहा-कहा न कहीं कोई भूल हो गयी हे, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, सुकरात से बड़ा अज्ञानी और कोई भी नहीं है। लोगों ने कहा-यह तो बड़ी मुश्किल हो गयी। अब हम अगर डेल्फी की देवी की बात मानें कि सुकरात ज्ञानी है तो सुकरात की बात भी माननी पड़ेगी। और सुकरात कहता है कि सुकरात से बड़ा अज्ञानी और कोई भी नहीं है। और अगर हम सुकरात की बात मानें कि सुकरात से बड़ा अज्ञानी कोई नहीं है तो डेल्फी के वचन का क्या होगा? उन्होंने कहा-हमें मुश्किल में डाल दिया सुकरात ने। सुकरात ने कहा-हमारा काम मुश्किल में डालना है। हम भी बहुत मुश्किल में पड़े तब यहाँ तक आ पाये। पर उन्होंने कहा-हम क्या समझें? तो सुकरात ने कहा-जाकर वापस डेल्फी की देवी से पूछो। वे वापस गये और डेल्फी की देवी से पूछा कि सुकरात तो कहता है कि मुझसे बड़ा अज्ञानी कोई भी नहीं है। आप कहती हैं कि उससे बड़ा ज्ञानी कोई नहीं है। डेल्फी की देवी ने कहा-इसीलिए, इसीलिए कहती हूँ कि उससे बड़ा ज्ञानी कोई भी नहीं है, क्योंकि जिसको अपने अज्ञान का पता चल गया हो, वह ज्ञान के द्वार पर खड़ा हो गया है। वे लौट के आये, उन्होंने सुकरात से कहा देवी कहती है, इसलिए। अब तो यह पहेली और उलझ गयी। वह कहती है। इसलिए कि सुकरात अपने को अज्ञानी कह सकता है। कि जब मंजिल के द्वार पर खड़ा है। सुकरात ने कहा तुमने ख्याल किया, तुमने जब मुझसे आकर कहा तो मैंने यह सोचा कि डेल्फी की देवी को यह भ्रम कैसे हो गया? लेकिन उनका वचन बहुत अर्थपूर्ण था। इस वचन मे उसने यह नहीं कहा था कि सुकरात महाज्ञानी है। इसने कहा था, सुकरता से बड़ा ज्ञानी ओर कोई भी नहीं है। निगेटवि कहा था। उसने यह नहीं कहा था। तो सुकरात ने कहा तुम देवी के पास वापस गये, मैं गांव में पता लगाने गया कि मुझसे कोई बड़ा ज्ञानी है या नहीं? तो मैंने एक-एक ज्ञानी से जाकर पूछा।
सब सवालों के जवाब उनके पास थे, सिर्फ एक सवाल का जवाब उनके पास न था
कि तुम कौन हो। मैं कौन हूँ, इसका उनके पास जवाब न था। तो मैंने उनसे कहा कैसे ज्ञानी हो? जिन्हें अभी यह भी पता नहीं कि हम कौन हैं, उनके और पता होने का मतलब भी क्या है? जो अभी यह भी नहीं जान पाये कि मैं कौन हूँ, वे और क्या जान पाये होंगे? मैं तो गांव के एक-एक ज्ञानी के पास जाकर लौट आया और उसने कहा कि देवी बहुत होशियार है। उसने कहा कि सुकरात से बड़ा ज्ञानी और कोई नहीं हे। इसका कुछ मतलब इतना ही है कि सुकरात से बड़ा ज्ञानी और कोई नहीं है। इसका कुछ मतलब इतना ही है। कि इस गांव में अज्ञानी तो अभी है, सिर्फ सुकरात को इतना ज्ञान है कि उसे अज्ञान का पता है। और कोई बात नहीं है। इतना ज्ञान भी गांव में किसी को नहीं है।
सातवें सूत्र को वही पार कर पायेगा जो अपने अज्ञान को अनुभव करे। जाने कि मुझे कुछ भी पता नहीं है। यह भी पता नहीं कि मैं कौन हूँ। और जब यह गहन रूप से जाना जाता है, सघन, तब इसकी पीड़ा बहुत अद्भुत है। रोयें-रायें में, इसकी पीड़ा फैल जाती है कि मैं कौन हूँ। तब यह प्रश्न नही रहा जाता, तब यह कोई इण्क्वायरी नहीं रहती। तब यह कोई बौद्धिक सवाल नहीं रहता, जिसका कोई जवाब है कहीं। तब यह प्राणों की अकुलाहट, यह प्राणों की प्यास, तब यह प्राणों की सतत घुटन बन जाती है। सतत्। प्राण कम्पित होने लगते हें उसी एक जिज्ञासा से कि मैं कौन हूँ। और जब कहीं कोई उत्तर नहीं मिलता, कहीं कोई उत्तर है ही नहीं। जो कहीं से उत्तर पा लेगा, वह अपने को धोखा दे रहा है। कहीं कोई उत्तर नहीं है। जब कहीं कोई उत्तर नही मिलता और प्रश्न पीड़ा बनाये चला जाता है और पागल कर देता है, विक्षिप्त कर देता है भीतर, जब प्रशन ही प्रश्न रह जाता है, उत्तर की आशा ही मिट जाती है, उत्तर की सम्भावना भी मिट जाती है, उत्तर की अपेक्षा भी मिट जाती है, उत्तर मिलेगा, इसकी सम्भावना भी मिट जाती है। सिर्फ प्रश्न ही रह जाता है। बल्कि कहना

चाहिए जब पूछने वाला और प्रश्न एक ही हो जाता है, उस क्षण प्रश्न भी खो जाता हैं। उत्तर नहीं मिलता, प्रश्न भी गिर जाता है। निष्प्रश्न, उस क्षण आदमी सातवें सूत्र से आठवें सूत्र में प्रवेश कर जाता है। उस क्षण वह नहीं कहता कि मैं कौन हूँ उस क्षण वह यह कहता है, मुझे वह बताओ जो मैं नहीं हूँ। उस क्षण वह कहता है मैं नहीं हूँ?
नानक गये हैं और मक्का के मन्दिर के बाहर सो गये हैं। उनके पैर मक्का
के पवित्र पत्थर की तरफ हैं। पुजारियों ने आकर कहा पैर हटाओं। नासमझ, इतना भी तुझे पता नहीं कि पवित्र पत्थर की तरफ पैर नहीं करने चाहिए। परमात्मा की तरफ पैर करता है। तो नानक ने कहा मैं भी बड़ी मुश्किल में हूं। तुम मेरे पैर उस तरफ कर दो जहां परमात्मा न हो। पकड़ो मेरे पैर और उस तरफ कर दो जहाँ परमात्मा न हो। वे मुल्ला, वे पण्डित बड़ी मुश्किल में पड़ गये। वे हिम्मत भी न कर पाये कि नानक के पैर कहीं और करें, क्योंकि परमात्मा सब जगह है। जिस दिन "मैं कौन हूँ" यह प्रश्न भी गिर जाता है, उस दिन यह सवाल नहीं
रह जाता, कि "मैं कौन हूँ" उस दिन अगर कोई पूछे तो हम यही पूछेंगे कि मैं कौन हूँ, सभी कुछ मैं हूं। उस दिन वह जो दीवारे है बीच की, सेल्फ की, वह विसर्जित हो जाती है। वह गिर जाती है। वह बिल्कुल, ड्रीम, स्वप्न की दीवारे है। वह गिर जाती है। उसके गिरते ही व्यक्ति अनन्त के साथ एक हो जाता है। तब सेल्फ सेण्टर्ड, स्व-केन्द्रित व्यक्तित्व खो जाता है।
ऐसा नहीं है। कि आप मिट जाते हैं। ऐसा नहीं कि आप समाप्त हो जाते हैं। नहीं, आप तो होते ही हैं। और भी पूर्णता से होते हें, लेकिन आप "मैं" नहीं रह जाते, आप सब हो जाते हैं। आप तब लहर नहीं रह जाते, सागर हो जाते हैं। आप तब बूंद नहीं रह जाते, विराट हो जाते हैं। आप आपकी तरह मिट जाते हें ओर परमात्मा की तरह हो जाते हैं। इसलिए "मैं" को खोकर कोई कुछ भी नहीं खोता है। जैसे रात के स्वप्न से जागकर कोई कुछ भी नहीं खोता है, ऐसे ही "मैं" के स्वप्न से जागकर भी कोई कुछ नहीं खोता है। रात के स्वप्न से जागकर पाता ही है, कुछ जागरण। "मैं" के स्वप्न से जागकर भी पाता ही है कुछ, परमात्म जीवन-परमात्मा का जीवन। क्षुद्र दीवारे गिर जाती है। वह क्षुद्र घेरा टूट जाता है। वह लक्ष्मण रेखा "मैं" की मिट जाती है। उसकी कोई जरूरत भी अब नहीं है। अब तक थी, सातवीं सीढ़ी तक, सातवें सूत्र तक उसकी जरूरत है। उस "मैं" के सहारे इतनी यात्रा हुई है। अगर वह "मैं" न हो तो इतनी यात्रा नहीं हो सकती। झूठ भी यात्रा में सहयोगी होते हैं, इलूजन भी, भ्रम भी यात्रा में सहयोगी होते हैं। मंजिल पाने नहीं ले जा सकते, मंजिल पर साथ नहीं जा सकते।
ईसाई फकीर, रूस के जेलखाने में बीस साल तक बन्द था उसने एक बहुत अद्भुत किताब लिखी है "इन गाड्स अण्डरग्राउण्ड", प्यारा आदमी जेलखाने को, जो जमीन के नीचे अंधेरी कोठरी थी, उसको भी "इन गाड्स अण्डरग्राउण्ड", नाम से उसने एक छोटी-सी किताब लिखी। वह परम्परा का ही, जमीन के नीचे छिपा घर। बीस साल तक बन्द था अंधेरी कोठरी में, जहां बीस साल तक रोशनी रोशनी नहीं दिखाई पड़ी। रोटियां फेंक दी जाती हैं एक बार, आदमी की आवाज सुनाई नहीं पड़ी। लेकिन पांच-सात दिन बाद अचानक बगल की दीवारे पर कोई खट-खट करके आवाज करने लगा। समझने की कोशिश की, लेकिन खट-खट से क्या समझ में आ सकता है। लेकन एक बात समझ में आ गयी कि कोई पड़ोसी कैदी भी है। फिर बीस साल तक दोनों साथ रहे, बीच में दीवार थी। उस पार कोई था फिर उन्होंने खट-खट करते धीरे-धीरे भाषा ईजाद कर ली। ए के लिए एक चोट, बी के लिए दो, के िएल तीन -ऐसी उन्होंने भाषा धीरे-धीरे ईजाद कर ली। फिर उन्होंने एक दूसरे का नाम जान लिया, फिर एक-दूसरे का मैसेज और सन्देश भी देने लगे। फिर एक-दूसरे को सुबह उठकर नमस्कार भी करने लगे। फिर एक-दूसरे को रात विदाई नमस्कार भी करने लगे। फिर तो उनका कम्युनिकेशन धीरे-धीरे गति पकड़ गया, कोड विकसित हो गया। ये दोंनों आदमी अगर कैदखाने के बाहर आ जायें तो क्या ये अब भी दीवारों को ठोंक के बात करेंगे? नहीं करेंगे, वह तो एक संकेत-लिपि विकसित करनी पड़ी, जिसके बिना दीवारों के पार काम नहीं चल सकता था।
आदमी का "मैं" भी कोड लैंग्वेज है, जो चारों तरफ की दुनिया, जहां हम सब अपनी-अपनी दीवारों में बन्द हैं, वहाँ से खट-खट करके एक दूसरे से बातचीत करनी पड़ती हैं तो हम नाम रखते हैं दूसरे का, किसी को कहते हैं राम, किसी को

कहते हैं, कृष्ण, किसी को कुछ, किसी को कुछ। सब नाम झूठे हैं। कोई बच्चा नाम ले के नहीं आता, लेकिन बिना नाम के तो दीवारों के आर-पार बात करनी बड़ी मुश्किल हो जायेगी। तो कृष्ण यानि खट-खट दो दफा। राम यानी तीन दफा। तो हम खट-खट करे एक-दूसरे से पिरचय बना लेते हें कि जब तक तीन बार खटखटायें तो समझना कि तुमको बुला रहे हैं। तुम हुए राम, तुम हुए कृष्ण। हम आदमियों का नाम चिपका देते हैं, यह कोड लैंग्वेज हैं, जिसमे दीवारों के पास बात करने का और कोई उपाय नहीं है।
सबको हम नाम दे देते हैं। मुझे किसी को बुलाना हो तो मैं कहता हूँ, राम इधर आओ। मेरा भी नाम हो सकता है। मेरा नाम है, लेकिन अगर मैं भी अपना नाम बुलाऊं तो बड़ी दिक्कत होगी समझने में किसी दूसरे को बुला रहा हूँ कि अपने को बुला रहा हूं। इसलिए कोड लैग्वेज दो तरफा है। जब अपने को बुलाना हो तो मैं कहता हूँ "मैं" और जब किसी दूसरे को बुलाना होता हे। तो लेता हूँ नाम। जब आपको भी अपने को बुलाना है तो आप कहते है मैं और जब दूसरे को बुलाना है तो आप बुलाते हैं।
स्वामी राम अमेरीका गये तो वे अपने को भी राम ही कहकर बुलाते थे। उन्होंने मैं कहना बन्द कर दिय था। स्वभावतः कोड लैंग्वेज तोड़ियेगा तो गड़बड़ होगी। वह अपने को भी राम ही कहते है। रास्ते में कोई हंस दिया, किसी ने गाली दी तो वह लौट के आकर कहते, आज राम बड़ी मुश्किल में पड़े हुए थे। कुछ लोग मिल गये और गालियां देने लगे। तो जो लोग अपरिचित थे, अमरीका में, वे पूछते कि मतलब? क्या कह रहे हें आप? कौन राम? तो वे कहते हैं, यह राम। वे बड़ी मुश्किल में पड़ गये। धीरे-धीरे कोड को समझे लोग कि यह अपने को भी राम ही कहता है आदमी।
लेकिन हम अपने को राम कहें या मैं कहें, नाम दें या सर्वनाम का उपयोग करें, मैं का उपयोग करें न तो हम मैं को लेकर पैदा होते हैं और न हम नाम लेकर पैदा होते हैं। बच्चों को पहले तू का पता चलता है। बाद में "मैं" का पता चलता है। बच्चे पहले दाऊ कान्शस होते हैं, तू के प्रति चेतन होते हैं, पहले उन्हें दूसरों का पता चलता है, "मैं" का पता बाद में चलता है। जब तू बहुत सुनिश्चित हो जाते हैं तब इसलिए कई बच्चे ऐसा कहते हुए पाये जाते हैं कि इसको भूख लगी हें छोटे बच्चे कहेंगे, किसको भूख लगी है।? अभी "मैं" विकसित नहीं हुआ है, अभी "मैं" विकसित होगा।
इस जिन्दगी के व्यवहार में, कम्यूनिकेशन में, जहाँ हम सब अपने-अपने घेरों में बन्द, दीवारों में बन्द हैं, कोड लेंग्वेज विकसिकत करनी पड़ती है। मैं सूचक शब्द है, इशारा है उसके बाबत जिसका मुझे भी पता नहीं है कि कौन हूँ। कृष्ण, राम, सूचक है, इशारा है। उसके बाबत, जिसका मुझे भी पता नहीं है, कौन हूँ। हम सब दीवारों के पार खड़े हैं।
हम कैदियों की तरह हैं जो अपनी-अपनी दीवाल के पार से खट-खट करते रहते हैं। लेकिन ऐसी ही जिन्दगी है, हमें पहचान में नहीं आती हे यह बात, क्योंकि हम अपनी-अपनी सैल को, अपनी-अपनी दीवारों को अपने साथ लिये चलते हैं। वै कैदी बन्द हैं, एक जगह दीवारे थर हैं।
हम जन्म के साथ अपने कारागृह हो लेकर अपने साथ चलते हैं, इसलिए हमें कभी पता हनीं चलता कि मैं अपनी दीवारें अपने साथ लिया हूं। एक पति और पत्नी भी जिन्दगी भर दो दीवारों के पार कोड लैंग्वेज में बात करते हैं, जो बहुत मुश्किल से कभी-कभी समझी जाती हैं, कभी नहीं समझी तो नहीं समझी जाती हैं। पिता और बेटे भी बात करते हैं, मित्र भी बात करते हैं, लेकिन दीवारों के पार। खटखटाते कुछ हैं, दूसरा कुछ समझता है। वह डर से खटखटाता हैं, यहाँ कुछ समझते हैं। लेकिन एक बात भूल जाते हैं कि मैं भी और तू भी, ये दोनों ही शब्द कामचलाऊ, यूटीलिटेरियन हैं, द्रुथ नही है, सत्य नहीं है। उपयोगिता हैं, सत्य नहीं है।
इसलिए जैसे ही हम नये की खोज से निकलेंगे, पायेंगे कि मैं कहीं भी नहीं हे तो व्हेअर टू बी फाउण्ड। है ही नहीं कहीं। जैसे जिस आदमी का नाम कृष्ण है, वह अगर अपने भीतर कृष्ण की खोज में जाये तो क्या कहीं कृष्ण मिलेगा? वह लेबल तो डिब्बे के बाहर चिपका हुआ हे। कण्टेनर के बाहर। उसे भीतर खोजने जाइएगा तो कहीं भी नहीं पाइयेगा। "मैं" भी भीतर कहीं नहीं हूं।

ये कामचलाऊ शब्द हैं, भाषा की ईजादें हैं, लेकिन जरूरी नहीं हैं। और सातें सूत्र तक साधक को इनसे बाधा नहीं पड़ती, बल्कि सहयोग मिलता है।, क्योंकि सातवें सूत्र तक वह "मैं" की ही खोज में आता है। "मैं" के लिए शक्ति, "मैं" के लिए शान्ति, "मैं" के लिए मृक्ति, "मैं" के लिए परमात्मा, वह इसकी खोज में आता हैं सातवें तक। सातवें तक "मैं" उपयोगी है, सत्य नहीं। सातवें के बाद "मैं" बाधा बनाना शुरू हो जाता है, उसकी उपयोगिता व्यर्थ हो गयी। आठवें पर वह कोड लैंग्वेज तोड़ देनी पड़ती है। आइवे पर तोड़ते वक्त पीड़ा होती है, क्योंकि इसी "मैं" के लिए सब कुछ किया, इसी "मैं" के लिए जिये, इसी "मैं" के लिए मे, इस "मैं" के लिए न मालूम कितने जन्म लिये!
हिन्दुस्तान से फकीर चीन गया। बोधिधर्म उसका नाम था। चीन का सम्राट उसका स्वागत करने आया था। रास्ते पर जब साम्राज्य प्रवेश के समय स्वागत किया बोधिधर्म का तो सम्राट ने मौका देखकर कहा कि में बहुत अशान्त हूँ, कुछ रास्ता बतायें। बोधिधर्म ने कहा कल सुबह तीन बजे आ जाओ तो शान्त कर देंगे। उस सम्राट ने बहुत फकीरों से सवाल पूछे, किसी ने कुछ रास्ता, किसी ने कुछ रास्ता बताया था, लेकिन यह आदमी अद्भुत मालूम पड़ा। इसने कहा, कल तीन बजे आ जाओ, शान्त कर देंगे। उसे थोड़ा कुछ शक हुआ कि यह मामला इतना आसान नहीं हो सकता हैं जिन्दगी भर अशान्त रहा, सब उपाय कर लिये और शान्ति नहीं हुई। उसने फिर कहा बोधिधर्म से कि शायद आपको मेरी जटिलता का पता नहीं है। धन जितना चाहिए पा चुका हूँ। लेकिन शान्ति नहीं मिलती। उपवास जितने कहे हैं करने को फकीरों ने, उतने किये हैं, शान्ति नहीं मिलती। मन्दिर बनवाये हैं लाखों, शान्ति नहीं मिलती। पुण्य जितना बताया, किया हैं उससे दुगुना शान्ति नहीं मिलती।
उस फकीर ने कहा ज्यादा बातचीत नहीं, सुबह तीन बजे आ जाओ, शान्त कर देंगे। बहुत हैरानी हुई। ठीक, सोचा कि तीन बजे देखेंगे। अब इसे शक हुआ कि इस आदमी के पास जाना भी कि नहीं सीढ़िया उतरता था मन्दिर की, जहां बोधिधर्म ठहरा था, आखिरी सीढ़ी पर पहुंचा था कि बोधिधर्म ने चिल्लाकर कहा सुन! मैं को साथ ले आना, नहीं तो शान्त किसको करूंगा। उसने कहा और पागलपन! उससे कहा जब में आऊंगा तो "मैं" तो साथ रहेगा ही। उसेन कहा ध्यान रख के ले आना, घर मत छोड़ आना। रात में उसने कई दफा सोचा कि जाना कि नहीं, लेकिन सोचा, इतना हिम्मतवर आदमी कभी नहीं मिला जिसने कहा कि शान्त कर देंगे।
सुबह तीन बजे हिम्मत जुटाकर आया। चढ़ीं सीढ़ियां, चढ़ भी नहीं पाया था कि बोधिधर्म ने कहा "मैं" को साथ लाया या नहीं? सम्राट वू ने कहा आप कैसी मजाक की बातें करते हैं, मैं आ ही गया हूँ तो "मैं" को साथ लाने की बात क्या है? उस बोधिधर्म ने कहा मैं पूछता हूँ जानकर ही मैं हूं और मुझे दिखाई पड़ रहा है और फिर भी मेरा मैं अब मेरे साथ नहीं हैं इसलिए मैंने कहा कि साथ लाया कि नहीं अन्यथा मैं शान्त किसको करूंगा?
उस बोधिधर्म की समझ, उसकी बात उस सम्राट वू की समझ में कुछ आयी नहीं। फिर भी उसने कहा ठीक है, तब तू आ ही गया। तो तू कहता है, साथ ले आय है ता बैठ। आंख बन्द कर और पकड़ अपने "मैं" को कि कहां है और पकड़कर मुझे दे दे, मैं उसे शान्त कर दूं।
उसने बोधिधर्म से कहा मुझे रात ही शक होता था कि नहीं आना चाहिए। आप किस तरह की बातें कर रहे हैं? मैं क्या कोई चीज है कि मैं पकड़कर आपको दे दूं। बोधिधर्म ने कहा मुझे न दे सके, छोड़ अपने भीतर खुद तो पकड़ सकता है।? उस सम्राट ने कहा मैंने कभी कोशिश नहीं की। बोधिधर्म ने कहा कोशिश कर। आंख बन्द करके वह सम्राट बैठा है, बोधिधर्म एक बड़ा डण्डा लेकर उसके सामने बैठा है।
वह सम्राट घबरा भी रहा है। रात हैं, अंधेरी है, अकेला आ गया इस भिक्षु
का भरोसा करके। पता नहीं, यह क्या करने को उतारू है, बोधिधर्म बीच-बीच में उसका सिर डण्डे से हिलाता है और कहता है खोज, एक भी कोना छोड़ मत देनां जहां भी मिले, पकड़। आधा घण्टा बीत गया है, पौन घण्टा बीत गया हें, घण्टा भर बीत गया है, दो घण्टे बीत गये और वह सम्राट न मालूम कहां खो गया है! सुबह का सूरज निकलने लगा। बोधिधर्म ने कहा अब मैं स्नान वगैरह करूं? अभी तक नहीं पकड़ पाया? उस सम्राट ने आंखे खोलीं और उस बोधिधर्म के चरणों पर गिर पड़ा।

उसने कहा यह तो मैंने कभी ख्याल ही नहीं किया था कि "मैं" जैसी कोई चीज भीतर हैं ही नहीं। जब मैं खोजने गया तो कहीं पाता ही नहीं हूं। इस कोने उस कोने तक देख डाले। सब तरफ, कोने से उस कोने देख डाला, "मैं" ते कही भी नहीं। तो बोधिधर्म ने कहा अब मैं किसको शान्त करूं? मैं डण्डा लिये तीन घण्टे से बैठा हूँ। उस सम्राट ने कहा अब शान्त हो गया, क्योंकि जहां मैं नहीं हैं, वहां अशान्ति कैसी? ये तीन घण्टे मेरे शन्ति के ही घण्टे थे। जैसे-जैसे मैं खोजने लगा और जैसे-जैसे पाने लगा कि नहीं पा रहा हूँ, वैसे- वैसे कुछ शान्त होता चला गया। अब मैं कह सकता हूँ कि मैं शान्त था, ऐसा कहना ही गलत था "मैं" ही अशान्ति थी। बोधिधर्म ने कहा जा और दुबारा "मैं" से सावधान रहना, इसको फिर मत पकड़ लेना।
सम्राट वू अपनी कब्र पर लिखवा गया है कि लाखों संन्यासियों और साधुओं
के वचन सुने, हजारों शास्त्र सुने, लेकिन कुछ राज पकड़ में न आया और एक अजीब से फकीर की बात में आकर, भीतर झांककर देखा और सब राज खुल गये। वहां कोई "मैं" था ही नहीं, जिसे शान्त कराना है। वहां कोई "मैं" था हीं नहीं, जिसे शुद्ध करना था। वहां कोई "मैं" था ही नहीं, जिससे लड़ना था और जिसे जीतना था। वहां कोई "मैं" था ही नहीं, जिसके लिए मोक्ष और परमात्मा को खोजना था। वहां "मैं" था ही नहीं।
आठवां सूत्र, "मैं" की खोज और "मैं" के खोने का सूत्र हैं जैसे ही "मैं"
खो जाता है, सब मिल जाता है। "मैं" का मतलब है, हमने कुछ पकड़ा हे, सबके खिलाफ। "मैं" को अगर ठीक से कहें तो "मैं" का मतलब है प्रतिरोध का बिन्दु, ए प्वाइण्ट ऑफ रजिस्टेंस। यह "मैं" हमने पकड़ा हैं सबके खिलाफ, सबकी दुश्मनी में, सबको छोड़कर इसे पकड़ा है। यह "मैं" ऐसा ही है, जैसे राष्ट्रों की सीमाएं हैं हिन्दुस्तान, पाकिस्तान। कहीं भी खोजने जायें, कहीं कोई सीमा नहीं, जहां हिन्दुस्तसान खत्म होता है। और पाकिस्तान शुरू होता हैं कहीं कोई सीमा नहीं, कहीं कोई सीमा नहीं, जहां हिन्दुस्तान खत्म होता है। और चीन शुरू होता है, सिर्फ राजनीतिज्ञों के मस्तिष्कों को छोड़कर। ये सीमाएं कहीं भी नहीं हैं। ओर राजनीतिज्ञों के पास अगर मस्तिष्क होते तो भी ठीक था। राजनीतिक नक्शों को छोड़कर कहीं सीमाएं नहीं है। जाएं ऊपर जरा ऊपर आकाश से देखें तो कोई हिन्दुस्तान नहीं है। कोई पकिस्तान नहीं हे, कोई चीन, कोई जापान नहीं है। कोई सीमाएं नहीं है। अगर मंगल पर कोई होगा और जमीन की तरफ देखता होगा तो कोई सीमा दिखाई पड़ेगी।
जब पहली दफा यूरी गागरिन अन्तरिक्ष में गया तो आशा कर रहे थे, उसके देशवासी कि वह वहां से, अन्तरिक्ष से सन्देश भेजेगा, चिल्लायेगा, सोवितयत रूस की जय, कुछ कहेगा, लेकिन जो पहला शब्द यूरी गागरिन के मुख से निकला, वह समझने जैसा है। वह योग का बहुत पुराना अनुभव हैं किसी और आकाश में उठने का। यूरी गागरिन के मुख से नहीं निकला "माइरशा", उसके मुँह से निकला "माई वर्ल्ड", "माई अर्थ"। उस ऊंचाई पर देखने से कोई देश नहीं रह गया।
उस ऊंचाई से देखने पर पूरी जमीन एक हो गयी, सारी दुनिया एक हो गयी। उसके मुख से निकला, मेरी पृथ्वी! मेरी दुनिया! लौटकर उससे पूछा मास्को ने कि तुमने क्यों न कहा, मेरा रूस? तो उसने कहा, वहां कोई रूस न रह गया। वहां सब सीमाएं खो गयीं!
ऐसे ही भीतर के आकाश में कोई जाता है। तो वहां "मैं" और "तू" की सीमाएं
खो जाती हैं। वे भी मनुष्य की काम चालऊ, एक नक्शें पर खींची गयी सीमाएं हैं। मेरा देश जितनी झूठी सीमा बनाता है, मेरा "मैं" भी उतनी ही झूठी सीमा बनाता है। मेरा देश कितनी झूठी सीमा बनाता है, मेरा "मैं" भी उतनी ही झूठी सीमा बनाता है। लेकिन ये झूठ सातवें तक चलेंगे, सातवें के बाद नहीं चलगे। जमीन पर ही चलना हो, होरीजन्टल चलना हो तो रूस और हिन्दुस्तान और पिकस्तान चलेंगे, लेकिन वर्टिकल उड़ान लेनी हो, आकाश में उठना हो तो रूस, हिन्दुस्तान खो जायेंगे। जिसको भीतर के आकाश में ऊपर उठना हो उसे "मैं" और "तू" सब खो जायेंगे और जब "मैं" और "तू" खो जाते हैं तो शेष रह जाता है, दी रिमेनिंग, वह जो बच रहता हे।, वही परमात्मा हैं वह आठवां सूत्र है।
और नौवां सूत्र छोटा-सा है, उसे कहकर अपनी बात को पूरी करूंगा।

पहला सूत्र मैंने कहा था, जीवन-ऊर्जा। नौवां सूत्र है। योगा, मृत्यु
भी ऊर्जा है। र्डथ ईज टू एनर्जी। जीवन ही ऊर्जा, ऐसा नहीं मृत्यु भी ऊर्जा है। जीवन ही जीवन हैं, ऐसा नहीं, मृत्यु भी जीवन है। और जीवन ही चाहने योग्य है, ऐसा नहीं, मृत्यु भी बहुत प्यारी है। और जीवन ही स्वागत के योग्य है, ऐसा नहीं, मृत्यु के लिए भी खुला द्वार चाहिए। और जो मृत्यु के लिए राजी हैं, वह जीवन से वंचित रह जायेगा। और जो मृत्यु के लिए राजी है, वह परम जीवन का अधिकारी हो जायेगा।
मृत्यु भी ऊर्जा है, मृत्यु भी परमात्मा हैं, मृत्यु भी प्रभु हैं। यह योग का परम सूत्र है। अन्तिम सूत्र है। जो मृत्यु को भी जीवन की तरह देख पायेगा, है ही, सिर्फ देखने की बात हैं और आठवें सूत्र के बाद देखना सम्भव हो जायेगा। जिस दिन पता चलेगा "मैं" नहीं हूँ, उसी दिन पता चलेगा, मृत्यु किसकी? मृत्यु कैसी? कौन मरेगा? कौन मर सकता है?
लोग जब तक कहते हैं कि मैं नहीं मरूंगा, मैं अमर हूँ, मैं अमर हूँ, मेरी आत्मा अमर है, तब तक समझना कि सब बातचीत सुनी-सुनायी है। जब कोई कहे कि "मैं" नहीं हूं और जो है, वह अमृत है तब समझना कि कोई बात हुई। मैं तो अमर होना चाहता हूं, लेकिन मैं हूं ही नहीं। जो अमर होना चाहता हैं वह नहीं और जो अमर है उसका हमें पता नहीं।
रामकृष्ण मरे तो मरने के तीन दिन पहले पता चल गया था कि रामकृष्ण अब विदा होते हैं। तो उनकी पत्नी शारदा परेशान, चिन्तित होती थी। रामकृष्ण ने कहा लेकिन तू क्यों रोती है।? क्योंकि वह तो जो है, वह तो मरेगा नहीं और तू मुझे प्रेम करती थी या उसे, जो है। शारदा ने कहा उसी को प्रेम करती हूं, जो है तो रामकृष्ण ने कहा फिर छोड़ दे। फिर जब यह मर जाये, जो नहीं है तो चूड़ियां मत तोड़ना। हिन्दुस्तान में एक विधवा थी शारदा, जिसने चूड़ियों नहीं तोड़ी। फिर रामकृष्ण मर गयें सब रोये, लेकिन शारदा चूड़ी तोड़ने को राजी नहीं हुई। वह वैसी ही रही, जैसी थी। सबने कहा-यह क्या करती हो? रामकृष्ण मर गये। तो उसने कहा-जो मर गया, वह था ही नहीं, जो था, वह है। चूड़िया ये उसके स्मरण में हैं। शारदा रामकृष्ण के मरने के बाद सधवा रही। उसके मुख से कभी न लिकला फिर कि रामकृष्ण मर गये और जब भी कोई पूछता तो वह कहती कि शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया था, उन्होंने वस्त्र बदल लिये हैं। वस्त्र ही बदलते हैं, आवरण ही बदलते हैं।
जिस दिन यह पता चलेगा-आठवें सूत्र पर पता चलेगा कि मैं तो हूँ ही नहीं,
तब कौन मरेगा, तब कैसा मरना है, तब मरने का कोई उपाय न रहा। तब कोई तलवार से काटे तो किसे काटेगा? "मैं" को काट सकता है और किसे काटैगा? जब "मैं" न रहा तो कोई कटनेवाला न रहा। कृष्ण ने जो अर्जुन को कहा कि न ही कोई मरता हे, न ही कोई मारता है, उसका अर्थ-उसका अर्थ इतना ही है कि नहीं कोई है। जो दिखाई पड़ रहीं है। छायाएं, वे सूरज के बढ़ने और ढलने से छोटी-बड़ी हो जाती हैं। हैं नही, सूरज की छाया से छोटी-बड़ी होती रहती हैं।
जिब्रान ने एक कहानी लिखी है कि एक लोमड़ी सुबह-सुबह निकली है भोजन की तालाश में सूरज जाग रहा है, लोमड़ी के पीछे है सूरज। बड़ी छाया पड़ती है उस लोमड़ी की, दूर दरख्तों जैसी।
उस लोमड़ी ने सोचा, आज तो बहुत भोजन की जरूरत पड़ेगी। इतना बड़ा शरीर है उसके पास। लोमड़ी के पास कोई दर्पण तो नहीं है कि शरीर को देख ले, उसके पास छाया है। और दर्पण में भी छाया ही दिखेगी और क्या दिखेगा? और दर्पण के उस पार जो खड़ा है वह भी, जो जानते हैं, कहते हैं, छाया है। देखी है, लम्बी छाया, वृक्षों जैसी। सोचा मन में, बड़ी मुश्किल है। आज तो बड़े भोजन की तलाश करनी पड़ेगी। कम-से-कम ऊंट मिले तो काम चले। फिर खोजती रही, दोपहर हो गयी, सूरज ऊपर आ गया। छाया सकुड़कर छोटी हो गयी। उस लोमड़ी ने नीचे देखा, कहा-भूख तो बहुत लगी है। अब तो कुछ छोटा भी मिल जाय तो चलेगा। छाया सकुड़ गई है। छोटी हो गयी है। लेकिन वह लोमड़ी छाया को ही अपना होना समझती है।
जिसे हम शरीर कहते हैं, वह एक बहुत गहरे डायमेन्शन में, छाया से ज्यादा नहीं है। ऐ शैडो मेटीरियलाइज्ड, एक छाया, जो रूपाकृत हो गयी है, रूपायित हो गयी है। एक छाया, जो शक्ति के कणों के सघन परिभ्रमण से दिखाई

पड़ने लगी है। उस छाया का आना अैर जाना। लेकिन जब तक "मैं" है, तब तक उस छाया के साथ तादाम्य है, आइडेन्टिटी है।
ये नौ सूत्र मैंने योग के आपसे कहे। ये नौ सूत्र बारह डाइमेन्शन्स में कहे जा सकते हैं, बारह ढंग से कहे जा सकते हैं। मैंने सिर्फ एक ढंग से कहा। ये नौ सूत्र बारह ढंग से कहे जा सकते हैं और बारह नौ का गुणा आप करते हैं तो एक सौ आठ हो जाता है। संन्यासियों के गले में जो मालाएं आपने देखी हैं, वह 108 योग के नौ सूत्रों के बारह ढंग से कहे जाने के सूचक के अतिरक्ति और कुछ भी नहीं है। और वह 108 मानकों के नीचे एक सो नौवां फल भी रुद्राक्ष का लटका हुआ देखा होगा। इन एक सौ आठ ढंगों से कोई भी, कहीं से भी चले, वह उस एक पर पहुंच जाता है। ये सिर्फ मैंने एक डाइमेन्शन, एक आयाम में योग के नौ सूत्र आपसे कहे।
ये बारह ढंग से कहे जा सकते हैं और उस तरह 108 ध्यान की विधियां बन जाती हैं। प्रत्येक सूत्र से एक ध्यान की विधि विकसित हो जाती है। लेकिन कोई कहीं से भी पहुंचे, वहीं पहुंच जाता है। और कोई न भी पहुंचे कहीं से तो जहां खड़ा है, वहीं खड़ा है। सिर्फ पता नहीं चलता कि कहां खड़ा हूँ।
एक फकीर के सम्बन्ध में मैंने सुना है कि वह एक तीर्थयात्रा के मार्ग
पर पड़ा रहता था। तीर्थयात्री चढ़कर पहाड़ जाते थे। उस फकीर से कहते थे, यहीं पड़े हो, यहीं पड़े हो, ऊपर न चलोगे तीर्थयात्रा पर? तो वह फकीर कहता-तुम जहां जा रहे हो, मैं वहीं हूँ। फिर भी लौटते में कोई उससे पूछता-तुम यहीं पड़े रहोगे कि ऊपर की यात्राएं करोगे? वह फकीर कहता-तुम जहां से आ रहे हो, मैं वहीं हूँ। वे तीर्थयात्री समझते न समझते, वहाँ से चले जाते होंगे। जिस दिन पता चलता है यात्रा के बाद तो बड़ी हँसी आती है। झेन फकीर कहते हैं कि जब पता चलता है तो बड़ी हँसी आती है। झेन फकीरों में एक कहावत है कि जब पता चलता है तो सिवाय चाय की प्याली में चुस्की ले के हँसने के कुछ भी नही बचता। जब कोई फकीर रिन्झाई से पूछ रहा था कि यह क्या है, वह कैसी बात है कि हमने सुना है कि जब निर्वाण की स्थिति उपलब्ध होती है। तो सिवाय चाय पीने और हँसने को कुछ भी नहीं बचता। तो रिन्झाई ने कहा-सच में कुछ नहीं बचता, क्योंकि जब पता चलता है, तब यह भी पता चलता है कि यह तो मैं सदा से था। जो मुझे मिला है, वह मिला ही हुआ था और जो मैंने सोचा है, उसे कभी खोया ही नहीं था। लेकिन फिर भी इतनी यात्रा करनी पड़ती है।
एक-छोटी से कहानी, अपनी बात मैं पूरी कर दूं।
मैंने सुना है, अरबपति आदमी की मृत्यु के पहले, मरने के पहले पता चला
कि उसे सुख अभी तक नहीं मिला। सौभाग्यशाली होगा। कुछ को मरने के बाद ही पता चलता है। उसे पहले पता चला, मुझे सुख अभी तक नहीं मिला है। मौत करीब थी, ज्योतिषियें ने कहा-दिन ज्यादा नहीं है। जल्दी करों। उसने कहा-जल्दी तो मैं सदा से कर रहा हूँ। लेकिन सुख है कहाँ? और अब मेरे पास खरीदने के साधन है। कोई भी कीमत पर मैं खरीदने को राजी हूँ उन ज्येतिषियों ने कहा-हमें इसका पता नहीं।
हम सिर्फ इतना कह सकते हैं, जल्दी करों, क्योंकि मौत करीब है। और अगर तुम्हें पता चल जायें तो हमें खबर कर देना, क्योंकि जल्दी हमें भी करनी है, मौत करीब है। लेकिन उसने कहा-मैं खोजूं कहाँ? तो उन्होंने कहा-यह हमें पता नहीं, तुम कहीं भी, एनी व्हेयर, तुम कहीं भी खोजो।
वह अपने तेज घोड़े पर सवार हुआ। उसने करोंड़ों रुपयें के हीरे-जवाहरात अपने घोड़े पर रख लिये और गांव-गांव जाकर चिल्लाने लगा कि कोई मुझे सुख की झलक दे दे तो यह सब मैं दे देने को तैयार हूँ। फिर वह उस गांव में पहुँचा, जिसमें एक बहुत अद्भुत सुफी फकीर था। गांव के लोगों ने कहा-तुम ठीक जगह आ गये। इस तरह की उल्टी-सीधी बातों को हल करने वाला एक आदमी इस गांव में है। उसने कहा- उल्टी-सीधी बातें! उस गांव के लोगों ने कहा-हम भी उसके सत्संग में रहते हुए कुछ उल्टी-सीधी बातें सीख गये हैं। एक तो हम यह सीख गये हैं कि उल्टी ही बात, क्योंकि धन से कभी कोई सुख की झलक भी खरीद नहीं सकता, सुख तो बहुत दूर है। लेकिन फिर भी तुम आ गये हो, ठीक किया। तुम ठीक जगह आ गये।
इस गांव में वह आदमी है।

उसे खोजा गया। गांव वाले उसके पास ले गये। यह सूफी फकीर नसरुद्दीन एक झाड़ के नीचे बैठा था। सांझढल रही थी। गांव के लोगों ने कहा-यह रहा वह आदमी। उस अरबपति ने अपने सोने की थैली, हीरे-जवाहरातों की, नीचे पटक दी और कहा-यह है, मैं देने को तैयार हूँ, करोड़ों का इसमें सामान है। मुझे सुख की एक झलक चाहिए। उस फकीर ने नीचे से ऊपर तक उसे देखा। उसने कहा-बिल्कुल पक्की झलक चाहिए? उसने कहा-पक्की झलक चाहिए। वह इतना कह भी नहीं पाया था कि उस फकीर ने झोली उठायी और भाग खड़ा हुआ। एक क्षण तो अवाक रह गया वह अमीर। फिर चिल्लाया कि मैं लुट गया, मैं मर गया। लेकिन तब तक अंधेरे में वह फकीर काफी दूर निकल गया था। गांव के लोग तो जानते थे उस फकीर को कि वह कुछ उलटा करेगा। उन्होंने कहा-हमने पहले ही कहा था- कि यह आदमी है जो उल्टी-सीधी बातों का जवाब दे सकता है। उस आदमी ने, अमीर ने कहा-यह कोई जवाब है! पकड़ो इसे! भागे लोग। वह अमीर भी भागा, वह गांव तो परिचित था फकीर से। गली-कूचे मे चक्कर देने लगा। पूरा गांव जग गया।

पूरे गांव को जगाने के लिए उसने चक्कर दे दियां फिर सारा गांव दौड़ रहा हैं अमीर हांफता, भागता, पसीने से लथपथ पहुंचा। झोली देखी, उठायी, छाती से लगायी और परमात्मा को कहा-तेरा बड़ा धन्यवाद! उस फकीर ने पीछे से कहा झाड़ के-कुछ झलक मिली? उस अमीर ने कहा-बिल्कुल मिली। बड़ा सुख मालूम पड़ा। उस फकीर ने कहा-बस, तुम अपने घोड़े पर बैठो और जाओ।
जिस चीज के हम मालिक ही हैं, उसको भी जब तक हम खो न दें, तब तक पता नहीं चलता हैं यह पूर संसार की यात्रा उसी को खोने की यात्रा है, जिसे पाना है। जो मिला ही हुआ हे, उसे एक दफे ख्ल्लाये बिना हमें पता नहीं चल सकता है। हमने खोया है, अब खोजना पड़ेगा। जिस दिन खोज लेंगे, उस दिन चाय पीने और हँसने के सिवाय कुछ बचेगा नहीं।
चीन में तीन फकीर जब उपलब्ध हो गये ज्ञान को तो गांव-गांव में हँसते हुए घूमने लगे और जब भी उनसे कोई पूछता तो हँसते। एक हँसता, दूसरा हँसता, तीनों हँसते, फिर हँसी पूरे गांव में फैल जाती, फिर चौरस्ते पर पूरे लोग इकट्ठे हँसते। फिर हँसी का फव्वारा छूट जाता। फिर वह तीनें प्रसिद्ध हो गये पूरे चीन में "थ्री लाफिंग सेट", तीन हँसते हुए फकीर। वे मरने के पहले कागज पर लिखकर रख गये कि हम अपने पर हँसते थे, क्योंकि जिसे खोजते थे, वह हमारे पास था अैर हम तुम पर हँसते है कि तुम जिसे खोज रहे हो, वह तुम्हारे पास है!
ये नौ सूत्र इन चार दिनों में मैंने आपसे कह। इसलिए नहीं कि आपकी थोड़ी-सी बौद्धिक समझ बढ़ जाये। इसलिए भी नहीं कि आप थोड़े से और ज्ञानी हो जाये। ज्ञानी आप वैसे ही काफी हैं, सभी हैं। इस ज्ञान में थोड़ा और एडीशन करने से कुछ भी नहीं होगा। वह वैसे ही काफी है, बहुत जन्मों का ज्ञान है सबके पास। ये सूत्र मैंने आपके ज्ञान बढ़ाने के लिए नहीं कहे, ये सूत्र मैंने आपसे आपका ज्ञान छीन लेने के लिए कहे। ये सूत्र आपको कुछ सिद्धान्त मिल जायें, बहुत-से सिद्धान्त हैं और आपके पास बहुत सहारे के लिए शास्त्र हैं और अगर उनसे ही आप बच सकते होते तो बच गये होते।
यह मेरे थोड़े-से शब्दों को और सहारा बनाकर आप नहीं बच सकेंगे। सब सिद्धान्त, सब शास्त्र, सब शब्द बोझ बन जाते हैं सिर पर और डुबो देते हैं। मैंने इसलिए ये बातें नहीं कहीं कि आपका सहारा बन जायें। मैंने तो इसलिए आपको ये बातें कहीं कि आपको अपने बेसहारा होने का पता चल जाये। मैंने इसलिए ये बातें नहीं कहीं। ऐसा नहीं है कि मैं समझता हूँ कि आपको समझाने से कुछ समझ आ जायेगी, बिल्कुल नहीं समझता हूँ। कि आपको समझाने से कुछ समझ आ जायेगी, बिल्कुल नहीं समझता हूँ। ऐसी नासमझी मैं करता ही नहीं। मेरे समझाने से आपको समझ आ जायेगी ऐसा होता, तब तो बड़ी आसान बात थी, तब तो एक आदमी समझा देता। और अब तक सारी दुनिया समझदार हो गयी होती। लेकिन बुद्ध थककर मर जाते हैं, कृष्ण थककर, मर जाते हैं, जीसस थककर मर जाते हैं, महावीर थककर मर जाते हैं, दुनिया की नासमझी इंच भर भी इधर-उधर नहीं टलती। इसलिए अब कोई समझदारी से कुछ हो जायेगा, ऐसा मेरा मानना नहीं है।

फिर मैंने आपसे ये बातें क्यों कहीं? मैंने ये बातें आपसे इसलिए कहीं
कि आपको अगर अपनी समझदारी पर थोड़ा शक आ जाये तो काफी है। अगर आप थोड़े सर्न्दिध हो जायें और आपको अपनी समझदारी पर थोड़ा शक आ जाये तो काफी है, पर्याप्त है। मैंन ये बातें इसलिए आपसे कहीं कि आप समझेंगे कि समझ पर्याप्त नहीं है। कुछ और करना पड़ेगा। समझ से रहने भर से कुछ भी नहीं होगा। नासमझी दब जायेगी और मौजूद रहेगी, मिटेगी नहीं। समझना काफी नहीं है, टू नो इज़ नाट इनफ। कुछ करना भी पड़ेगा। असल में बिना किये असली समझ कभी नहीं आती। बिना किये तो समझ आती है, वह सिर्फ समझ का धोखा होती है, डिसेप्टिव होती है। और झूठे सिक्के असली सिक्कों को धोखा दे सकते है।